



## छठा भाग

( १ )



ली बच्चों के साथ पो-  
क्रोव्स्कोये गांव में अपनी  
बहन कीटी लेविना के

यहां गर्मी बिता रही थी। डौली की जागीर पर घर बिल्कुल ढह गया था और लेविन तथा कीटी ने उसे अपने साथ गर्मी बिताने के लिये राजी कर लिया। ओब्लोन्स्की ने पूरी तरह इस बात का समर्थन किया। उसने इस बात के लिये बहुत अफ़सोस जाहिर किया कि उसकी नौकरी परिवार के साथ गांव में गर्मी बिताने में, जो उसके लिये सबसे बड़े सुख की बात होती, बाधा डालती है, और इस तरह मास्को में ही रहते हुए वह कभी-कभार एक-दो दिन के लिये गांव आ जाता। ओब्लोन्स्की परिवार के सभी बच्चों और शिक्षिका के अलावा बूढ़ी प्रिंसेस भी, जो ऐसी स्थिति में अनुभवहीन बेटी के पास होना अपना कर्तव्य मानती थीं, लेविन-दम्पति के यहां आई हुई थीं। इसके अलावा विदेश में कीटी की सहेली बननेवाली वारेन्का भी कीटी को दिया हुआ अपना यह वादा पूरा करने के लिये कि जब कीटी की शादी हो जायेगी, तो वह उसके पास आकर रहेगी, अब अपनी सहेली के यहां आई हुई थी। ये सभी लोग लेविन की पत्नी यानी कीटी के रिश्तेदार और मित्र थे। लेविन बेशक इन सबको चाहता था, फिर भी उसे अपनी लेविनी दुनिया और व्यवस्था के अभाव से कुछ अफ़सोस हो रहा था, जो इस, जैसा कि वह कहता था, “श्चेर्बात्स्की तत्त्व” की बाढ़ के कारण खो गयी थी। इस गर्मी में उसके रिश्तेदारों में से सिर्फ़ कोज़िशेव ही उनके

यहां आया हुआ था। किन्तु वह भी लेविन नहीं, बल्कि कोज़िशेव सांचे का आदमी था और इस तरह लेविनी आत्मा बिल्कुल लुप्त हो गयी थी।

एक ज़माने से खाली पड़े लेविन के घर में अब इतने अधिक लोग थे कि लगभग सभी कमरे भर गये थे और बूढ़ी प्रिंसेस को खाने की मेज़ पर बैठने के समय लगभग हर दिन ही सबकी गिनती करनी पड़ती थी और तेरहवें नाती या नातिन को अलग मेज़ पर बिठाना पड़ता था। कीटी को, जो घर-गिरस्ती के मामले में बड़ी यत्नशील थी, मुर्गियां, टर्की मुर्गे और बत्तखें हासिल करने में, जिनकी बड़ी मात्रा में ज़रूरत होती थी, काफ़ी भंभट का सामना करना पड़ता था।

परिवार के सभी लोग खाने की मेज़ पर बैठे हुए थे। डौली के बच्चे अपनी शिक्षिका और वारेन्का के साथ यह योजना बना रहे थे कि खुमियां बटोरने के लिये वे कहां जायें। सभी मेहमान, जो सूझ-बूझ और विद्वत्ता के लिये कोज़िशेव का इतना अधिक आदर करते थे कि वह श्रद्धा की सीमा तक पहुंच जाता था, खुमियों से सम्बन्धित बातचीत में कोज़िशेव के दखल देने पर हैरान रह गये।

“मुझे भी साथ ले चलेंगे। खुमियां बटोरने के लिये जाना मुझे बहुत पसन्द है,” वारेन्का की ओर देखते हुए उसने कहा। “मुझे इसमें बड़ा मज़ा आता है।”

“हमें बड़ी खुशी होगी,” वारेन्का ने शर्म से लाल होते हुए जवाब दिया। कीटी ने अर्थपूर्ण दृष्टि से डौली की तरफ़ देखा। खुमियां बटोरने के लिये वारेन्का के साथ जाने के विद्वान और बुद्धिमान कोज़िशेव के सुझाव ने कीटी के उन अनुमानों की पुष्टि कर दी, जो पिछले कुछ समय से उसकी खास दिलचस्पी का कारण बने हुए थे। वह भटपट अपनी मां से बात करने लगी, ताकि उसकी अर्थपूर्ण दृष्टि पकड़ में न आ जाये। दिन के खाने के बाद कोज़िशेव अपना कॉफ़ी का प्याला लेकर मेहमानखाने की खिड़की के पास जा बैठा और भाई के साथ शुरू हुई अपनी बातचीत को जारी रखते हुए उस दरवाज़े की ओर देखता जाता था, जहां से बच्चे बाहर आनेवाले थे। लेविन अपने भाई के करीब खिड़की के दासे पर बैठ गया।

पति की बग़ल में खड़ी हुई कीटी शायद इस बात का इन्तज़ार

कर रही थी कि गैरदिलचस्प बातचीत खत्म हो और वह उससे कुछ कह सके।

“शादी के बाद तुम बहुत बदल गये हो, पहले से बेहतर हो गये हो,” कोज़िशेव ने, जो स्पष्टतः बातचीत में कम दिलचस्पी ले रहा था, कीटी की ओर मुस्कराते हुए कहा, “किन्तु विरोधाभासों के पक्षपोषण का जोश तुममें पहले की तरह ही बना हुआ है।”

“कात्या, तुम्हारे लिये खड़े रहना अच्छा नहीं है,” पति ने उसकी ओर कुर्सी खिसकाते और अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा।

“हां, पर खैर, फिर कभी बात करेंगे,” कोज़िशेव ने भागे आते बच्चों को देखकर कहा।

अपनी कसी हुई लम्बी जुराबें पहने, टोकरी और कोज़िशेव का टोप लहराती, तिरछी और तेज़ दौड़ती हुई तान्या सबसे आगे-आगे सीधी उसी की तरफ़ भागी आ रही थी।

कोज़िशेव के करीब बेभिन्नक पहुंचकर तथा अपने बाप से बेहद मिलती-जुलती सुन्दर आंखों को चमकाते हुए उसने कोज़िशेव को उसका टोप दिया, यह ज़ाहिर किया कि खुद ही उसे पहनाना चाहती है तथा सहमी और मधुर मुस्कान से अपनी इस बेतकल्लुफ़ी को कोमलता प्रदान की।

“वारेन्का राह देख रही है,” तान्या ने कोज़िशेव की मुस्कान से यह भांपकर कि वह उसके सिर पर टोप रख सकती है, सावधानी से ऐसा करते हुए कहा।

वारेन्का छींट का पीला फ़ाक पहने और सिर पर सफ़ेद रुमाल बांधे दरवाज़े के करीब खड़ी थी।

“आ रहा हूं, आ रहा हूं, वर्वारा अन्द्रेयेव्ना,” कोज़िशेव ने काँफ़ी खत्म करते और जेबों में रुमाल तथा सिगरेट-केस डालते हुए कहा।

“कैसी प्यारी है मेरी वारेन्का! है न?” कोज़िशेव के उठने पर कीटी ने पति से कहा। उसने यह ऐसे कहा कि कोज़िशेव को उसके ये शब्द सुनाई दे जायें और वह स्पष्टतः यही चाहती थी। “वह कितनी सुन्दर, कितने उदात्त रूप से सुन्दर है! वारेन्का!” कीटी ने पुकारकर कहा। “आप लोग चक्की वाले जंगल में होंगे न? हम भी वहां आयेंगे।”

“कीटी, तुम अपनी स्थिति को बिल्कुल भूल जाती हो,” बूढ़ी प्रिंसेस ने उसी क्षण दरवाजे से बाहर आते हुए कहा। “तुम्हें ऐसे चिल्लाना नहीं चाहिये।”

कीटी की आवाज़ और प्रिंसेस की डांट सुनकर वारेन्का तेज़ और फुर्तीली चाल से कीटी के पास आई। उसकी फुर्तीली चाल और उत्तेजित चेहरे पर दौड़ जानेवाली लाली—यह सब कुछ जाहिर करता था कि वारेन्का के अन्तर में कोई असाधारण बात हो रही है। कीटी जानती थी कि यह असाधारण बात क्या है और उसपर नज़र रखती थी। इस समय उसने वारेन्का को केवल इसलिये पुकारा था कि मन ही मन उस महत्त्वपूर्ण घटना के लिये उसे अपनी शुभ-कामना दे, जो कीटी के विचारानुसार दिन के खाने के बाद आज जंगल में घटनी चाहिये।

“वारेन्का, अगर एक बात हो जाये, तो मुझे बहुत ही खुशी होगी,” कीटी ने उसे चूमते हुए फुसफुसाकर कहा।

“आप हमारे साथ चल रहे हैं न?” वारेन्का ने भेंपते और यह दिखावा करते हुए कि उससे जो कुछ कहा गया है, उसने वह नहीं सुना, लेविन से पूछा।

“मैं चलूंगा तो, लेकिन खलिहान तक और वहां रुक जाऊंगा।”

“क्या करोगे वहां जाकर?” कीटी ने जानना चाहा।

“नये छकड़ों को देखना और यह जांचना है कि उनमें कितना अनाज भर सकता हूं,” लेविन ने उत्तर दिया। “तुम कहां होगी?”

“बरामदे में।”

## (२)

सभी नारियां बरामदे में जमा थीं। दिन के खाने के बाद उन्हें वैसे ही वहां बैठना पसन्द था और आज तो इसके लिये कुछ खास कारण भी था। सभी भावी शिशु के लिये कुरते सीने और उसे लपेटने की शालें बुनने में व्यस्त थीं। आज वहां पानी मिलाये बिना मुरब्बा भी बनाया जा रहा था, जो अगाफ़्या मिखाइलोव्ना के लिये मुरब्बा बनाने का नया तरीका था। कीटी ने यह तरीका शुरू किया था, जो उनके घर में प्रचलित था। पहले यह काम अगाफ़्या मिखाइलोव्ना को

सौंपा गया था और उसने यह मानते हुए कि लेविनों के घर में जो कुछ किया जाता है, वह बुरा नहीं हो सकता, इस बात पर जोर दिया कि दूसरे ढंग से मुरब्बा बन ही नहीं सकता और इसलिये स्ट्राबेरियों और जंगली बेरियों के मुरब्बे में पानी डाल दिया। उसका यह अपराध पकड़ लिया गया था और अब सबके सामने रस्पबेरियों का पानी के बिना मुरब्बा बनाया जा रहा था और इस तरह अगाफ़्या मिखाइलोव्ना को यह यक़ीन दिलाया जानेवाला था कि पानी के बिना ही अच्छा मुरब्बा तैयार हो जायेगा।

अगाफ़्या मिखाइलोव्ना का चेहरा तमतमाया और खीभा हुआ था, उसके बाल उलभे-उलभाये थे और वह कोहनियों तक उघाड़ी बांहों से परात को अंगीठी पर चक्राकार ढंग से हिला रही थी, उदासी से बेरियों को देख रही थी तथा मन से यह कामना कर रही थी कि वे गलने से पहले ही गाढ़ी हो जायें। प्रिंसेस यह महसूस करते हुए कि बेरियों का मुरब्बा बनाने के बारे में मुख्य परामर्शदात्री होने के नाते अगाफ़्या मिखाइलोव्ना को सबसे ज़्यादा गुस्सा उन्हीं पर आना चाहिये, यह दिखावा करने की कोशिश कर रही थीं कि वे किसी दूसरे काम में व्यस्त हैं और बेरियों में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं, किसी अन्य विषय की चर्चा कर रही थीं, किन्तु कनखियों से अंगीठी की ओर देख लेती थीं।

“मैं नौकरानियों को हमेशा खुद ही सस्ते कपड़े के फ़ाक ख़रीद देती हूँ,” शुरू हुई बातचीत को जारी रखते हुए प्रिंसेस ने कहा। “क्या अब भाग उतार लेना ठीक नहीं होगा, मेरी प्यारी?” प्रिंसेस ने अगाफ़्या मिखाइलोव्ना को सम्बोधित करते हुए इतना और कह दिया। “तुम्हें खुद यह काम किसी हालत में नहीं करना चाहिये और फिर गर्मी भी है,” प्रिंसेस ने कीटी को रोका।

“मैं कर देती हूँ,” डौली ने कहा और चीनी पर आये भाग को सावधानी से उतारने लगी। ऐसा करते हुए वह कभी-कभी चमचे पर चिपक जानेवाले भाग को अलग करने के लिये उस तश्तरी पर धीरे से मारती, जो पीले-गुलाबी भाग और उसमें से निचुड़ आनेवाले लाल शरबत से रंग-बिरंगी हो चुकी थी। “कितने शौक से वे इसे चाटेंगे!” उसने अपने बच्चों के बारे में सोचा और उसे यह याद हो आया कि

कैसे अपने बचपन में उसे इस बात की हैरानी होती थी कि बालिश लोग सबसे अच्छी चीज़ यानी भाग नहीं खाते हैं।

“स्तीवा का कहना है कि नौकरानियों को पैसे दे देना कहीं ज़्यादा अच्छा है,” डौली ने शुरू हुई इस दिलचस्प बातचीत को जारी रखते हुए कि नौकरों को कैसे उपहार देना चाहिये, कहा। “लेकिन...”

“पैसे कैसे दिये जा सकते हैं!” प्रिंसेस और कीटी एक स्वर में कह उठीं। “उपहार पाकर वे खुश होते हैं।”

“मिसाल के तौर पर पिछले साल मैंने अपनी मात्र्योना सेम्योनोव्ना को पापलिन नहीं, बल्कि उसके जैसा ही कुछ खरीद दिया था,” प्रिंसेस बोलीं।

“मुझे याद है, आपके जन्म-दिन पर वह वही पहने थी।”

“बड़ा ही प्यारा छापा था उसपर, सादा और सुरुचिपूर्ण। अगर उसके पास ऐसा फ़ाक न होता, तो मैंने अपने लिये बनवा लिया होता। कुछ ऐसा ही था, जैसा वारेन्का पहने है। इतना अच्छा और सस्ता।”

“लगता है कि तैयार हो गया,” चमचे से तश्तरी पर शरबत गिराते हुए डौली ने कहा।

“जब गाढ़ा हो जाये, तब तैयार समझना। इसे कुछ देर और उबलने दीजिये, अगाफ़्या मिखाइलोव्ना।”

“ओह, ये मक्खियां!” अगाफ़्या मिखाइलोव्ना ने झल्लाकर कहा। “वही बात हो जायेगी,” उसने इतना और जोड़ दिया।

“ओह, वह कितनी प्यारी है, उसे डराइयेगा नहीं!” कीटी रेलिंग पर आकर बैठनेवाली गौरैया की ओर देखते हुए, जो रस्पबेरी का एक डंठल उलटकर उसमें चोंच मारने लगी थी, अचानक कह उठी।

“तुम अंगीठी की तपिश से दूर रहो,” मां ने कहा।

“A propos de\* वारेन्का,” कीटी ने फ़्रांसीसी में कहा, जैसा कि वे हमेशा करती थीं, ताकि अगाफ़्या मिखाइलोव्ना उनकी बात न समझ सके। “Maman, जानती हैं कि न जाने क्यों, मैं आज निर्णय की प्रतीक्षा कर रही हूं। समझती हैं, किस निर्णय की। वाह, कितना अच्छा होता!”

---

\* हां, [ वारेन्का ] के बारे में। ( फ़्रांसीसी )

“और जोड़ी मिलाने में तुम कितनी माहिर हो!” डौली ने कहा। “कितनी सावधानी और दक्षता से वह उन्हें निकट ला रही है...”

“Maman, बताइये, आपका क्या ख्याल है?”

“क्या ख्याल हो सकता है? उसे” (यानी कोज़िन्शेव को)  
“हमेशा ही रूस में सबसे अच्छी लड़की मिल सकती थी। अब वह इतना जवान नहीं है, लेकिन फिर भी जानती हूं कि उससे अब भी बहुत-सी लड़कियां शादी करने को तैयार हो जातीं... वह बहुत भली लड़की है, लेकिन सेर्गेई इवानोविच कहीं अच्छी...”

“नहीं, अम्मां, आप इस बात को समझें कि उन दोनों के लिये ही क्यों किसी अन्य बेहतर साथी की कल्पना नहीं की जा सकती। सबसे पहले तो यह कि वह बहुत प्यारी है!” कीटी ने एक उंगली मोड़ते हुए कहा।

“यह तो बिल्कुल सही है कि सेर्गेई इवानोविच को वह बहुत अच्छी लगती है,” डौली ने पुष्टि की।

“दूसरे, ऊंचे समाज में उसकी इतनी मान्यता है कि उसे बीवी की दौलत और ऊंचे दर्जे की ज़रा भी ज़रूरत नहीं। उसे सिर्फ़ एक ही चीज़ की ज़रूरत है – अच्छी, प्यारी और शान्त पत्नी की।”

“हां, उसके साथ शान्ति से जीवन बिताया जा सकता है,” डौली ने पुष्टि की।

“तीसरे, कि वह उसे प्यार करे। सो भी है... मतलब यह है कि यह बहुत ही अच्छी जोड़ी रहेगी! इसी इन्तज़ार में हूं कि वे जंगल से बाहर आयेंगे और सारी बात तय हो जायेगी। मैं तो आंखों से ही फ़ौरन सब कुछ जान जाऊंगी। ओह, कितनी खुशी होगी मुझे! तुम्हारी क्या राय है, डौली?”

“लेकिन तुम उत्तेजित नहीं होवो। तुम्हें बिल्कुल उत्तेजित नहीं होना चाहिये,” मां ने कहा।

“मैं उत्तेजित नहीं हूं, अम्मां। मुझे लगता है कि वह आज उससे विवाह का प्रस्ताव करेगा।”

“ओह, यह बड़ा अजीब-सा होता है, कैसे और कब पुरुष प्रस्ताव करता है... बाधा की एक दीवार-सी होती है, जो अचानक ढह जाती

है, ” डौली ने विचारों में खोकर मुस्कराते और ओब्लोन्स्की के साथ अपने अतीत को याद करते हुए कहा।

“अम्मां, पापा ने आपसे यह प्रस्ताव कैसे किया था?” कीटी ने अचानक पूछा।

“कोई असाधारण बात नहीं हुई थी, बिल्कुल सीधे-सादे ढंग से,” प्रिंसेस ने जवाब दिया, किन्तु उस घटना को याद करके उसका चेहरा चमक उठा।

“नहीं, फिर भी कैसे? इससे पहले कि आपको बातचीत करने की इजाजत दी गयी, आप उन्हें प्यार तो करती ही होंगी?”

कीटी को इस बात से खास खुशी होती थी कि अब वह मां के साथ नारी के जीवन के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर बराबरी के नाते बात कर सकती थी।

“जाहिर है कि प्यार करती थी। तुम्हारे पापा गांव में हमारे यहां आया करते थे।”

“लेकिन बात कैसे तय हुई, अम्मां?”

“तुम शायद यह सोचती हो कि तुम लोगों ने कोई नयी बात ढूंढ़ निकाली है? सब कुछ वैसे ही तय हुआ—आंखों और मुस्कानों से।”

“कितना अच्छा कहा है आपने, अम्मां! आंखों और मुस्कानों से!” डौली ने पुष्टि की।

“लेकिन पापा ने क्या शब्द कहे थे?”

“कोस्त्या ने तुमसे क्या कहा था?”

“उसने खड़िया से लिख दिया था। यह तो अद्भुत था... कितनी पुरानी बात लगती है यह मुझे!” कीटी ने कहा।

और तीनों नारियां एक ही चीज़ के बारे में सोचने लगीं। कीटी ने सबसे पहले खामोशी तोड़ी। उसे शादी होने के पहले का सारा जाड़ा और ब्रोन्स्की के प्रति अपनी प्रेम-भावना की सभी बातें याद हो आयीं।

“एक चीज़ है... वारेन्का का पहले का प्रेम-प्रसंग,” उसके विचारों का स्वाभाविक प्रवाह उसे इसी निष्कर्ष पर ले आया। “मैं सेर्गेई इवानोविच को किसी तरह इसके बारे में बताना चाहती थी, उसे इसके लिये तैयार कर देना चाहती थी। ये, सभी मर्द लोग,”

उसने इतना और कह दिया, “हमारे अतीत के प्रति बहुत ईर्षालु होते हैं।”

“सभी नहीं,” डौली बोली। “तुम अपने पति के आधार पर ही ऐसा समझती हो। वह अभी तक ब्रोन्स्की के बारे में याद करके व्यथित होता रहता है। क्यों, ठीक है न?”

“ठीक है,” आंखों में सोच की मुस्कान लाते हुए कीटी ने जवाब दिया।

“लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आती,” बेटी पर अपनी नज़र रखने की सफ़ाई पेश करते हुए प्रिंसेस ने कहा। “तुम्हारे किस अतीत से परेशानी हो सकती है उसे? इस चीज़ से कि ब्रोन्स्की तुम्हारे आगे-पीछे घूमता था? ऐसा तो हर लड़की के जीवन में होता है।”

“लेकिन हम इस बात की चर्चा नहीं कर रही हैं,” कीटी ने लज्जारुण होते हुए कहा।

“नहीं, मुझे कह लेने दो,” मां ने अपनी बात जारी रखी, “तुम खुद ही यह नहीं चाहती थीं कि मैं ब्रोन्स्की से बात करूं। याद है न?”

“ओह, अम्मां!” कीटी ने चेहरे पर व्यथा का भाव लाते हुए कहा।

“आजकल तुम लोगों को क़ाबू में नहीं रखा जा सकता... फिर भी तुम्हारे सम्बन्ध उचित सीमा के आगे नहीं जा सकते थे। मैंने खुद उससे बातचीत कर ली होती। ख़ैर, मेरी बिटिया, तुम्हें भाव-विह्वल नहीं होना चाहिये। कृपया यह याद रखो और शान्त हो जाओ।”

“मैं बिल्कुल शान्त हूं, maman।”

“कीटी के लिये तब यह कितनी खुशकिस्मती की बात हुई कि आन्ना आ गयी,” डौली ने कहा, “और उसके लिये कितनी बदकिस्मती की। हां, बिल्कुल उलट,” अपने विचार से चकित होकर वह कहती गयी। “तब आन्ना इतनी खुश थी और कीटी इतनी दुखी। लेकिन कैसे सब कुछ बिल्कुल उल्टा हो गया! मैं अक्सर आन्ना के बारे में सोचती हूं।”

“सोचने को भी कौन मिली है! बड़ी दुष्ट, घृणित और हृदय-हीन नारी है,” मां ने कहा, जो यह नहीं भूल सकती थी कि कीटी की ब्रोन्स्की से नहीं, बल्कि लेविन से शादी हुई।

“क्या तुक है इस बात की चर्चा करने में,” कीटी ने दुखी होते हुए कहा, “मैं इसके बारे में न तो सोचती हूँ और न सोचना ही चाहती हूँ... न सोचना ही चाहती हूँ,” उसने बरामदे की सीढ़ियों पर पति के पैरों की जानी-पहचानी आहट सुनते हुए दोहराया।

“किस बारे में सोचना नहीं चाहती?” लेविन ने बरामदे में आते हुए पूछा।

किन्तु किसी ने उसे जवाब नहीं दिया और उसने प्रश्न को दोहराया नहीं।

“मुझे अफ़सोस है कि मैंने आप लोगों के नारी-साम्राज्य में बाधा डाल दी,” कुछ बुरा मानते और सब पर नज़र डालकर यह समझते हुए कि किसी ऐसी बात की चर्चा हो रही थी, जो वे उसके सामने नहीं करेंगी, लेविन ने कहा।

घड़ी भर को उसने यह अनुभव किया कि अगाफ़्या मिख़ाइलोव्ना की भांति उसे भी यह अच्छा नहीं लग रहा कि पानी के बिना मुरब्बा बनाया जा रहा है और आम तौर पर घर में पराया, श्चेर्बात्स्की प्रभाव हावी होता जा रहा है। फिर भी वह मुस्कराकर कीटी के पास गया।

“कहो, कैसी हो?” उसी भाव से, जिससे अब सभी उसकी ओर देखते थे, कीटी पर नज़र डालकर उसने पूछा।

“बहुत अच्छी हूँ,” कीटी ने मुस्कराकर जवाब दिया, “तुम अपनी बताओ।”

“आम गाड़ी से तीन गुना ज़्यादा अनाज आता है इन नये छकड़ों में। तो बच्चों को लाने चलें? मैंने घोड़े जोतने को कह दिया है।”

“तुम क्या घोड़ा-गाड़ी में कीटी को ले जाना चाहते हो?” मां ने भर्त्सना के स्वर में प्रश्न किया।

“घोड़ों को क़दम-क़दम चलाते हुए, प्रिंसेस।”

लेविन प्रिंसेस को कभी maman नहीं कहता था, जैसाकि दामाद करते हैं और प्रिंसेस को यह अच्छा नहीं लगता था। बेशक वह प्रिंसेस को बहुत प्यार करता था, उनके प्रति आदर भाव रखता था, फिर भी अपनी दिवंगता मां के लिये अपनी भावना को ठेस लगाये बिना ऐसा करने में असमर्थ था।

“हमारे साथ चलिये, maman,” कीटी ने कहा।

“मैं ऐसी बेसमझी की बातों में भाग नहीं लेना चाहती।”

“तो मैं पैदल जाऊंगी। ऐसा करना मेरे लिये अच्छा है,” कीटी उठी, पति के पास आयी और उसने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

“अच्छा है, लेकिन सब कुछ सीमा में होना चाहिये,” प्रिंसेस ने कहा।

“तो अगाफ़्या मिखाइलोव्ना, मुरब्बा तैयार हो गया?” लेविन ने अगाफ़्या मिखाइलोव्ना की ओर मुस्कराते और उसे खुश करने की कोशिश करते हुए पूछा। “नये ढंग से अच्छा बना है न?”

“अच्छा ही होना चाहिये। हमारे मुताबिक़ तो अधिक उबल गया है।”

“ऐसे ही ज़्यादा अच्छा है, अगाफ़्या मिखाइलोव्ना, ख़राब नहीं होगा, वरना हमारे यहां बर्फ़ पिघल गयी है और उसे सुरक्षित रखने की कोई जगह नहीं है,” कीटी ने फ़ौरन पति के दिल की बात समझते हुए और उसी भावना से बुढ़िया को सम्बोधित करते हुए कहा। “दूसरी ओर आपका डाला हुआ अचार इतना बढ़िया है कि अम्मां कहती हैं—कभी ऐसा अचार नहीं खाया,” कीटी ने मुस्कराते और उसके सिर पर रूमाल ठीक करते हुए कहा।

अगाफ़्या मिखाइलोव्ना ने भुंभलाहट से कीटी की तरफ़ देखा।

“आप मुझे तसल्ली न दें, मालकिन। मैं तो इसके साथ आपको देख लेती हूं, तो मेरा जी खिल उठता है,” वह बोली और “इनके साथ” के बजाय बेअदबी से “इसके साथ” शब्दों ने कीटी का मन छू लिया।

“हमारे साथ खुमियां बटोरने चलिये, आप हमें अधिक खुमियों वाली जगह बता सकेंगी।”

अगाफ़्या मिखाइलोव्ना मुस्करा दी और उसने ऐसे सिर हिलाया मानो कह रही हो—“बड़ी खुशी से तुमसे नाराज़ होती, मगर ऐसा नहीं कर सकती।”

“कृपया मेरी सलाह मानिये,” बूढ़ी प्रिंसेस ने कहा, “मुरब्बे के ऊपर रम में भिगोया हुआ कागज़ रख दीजिये। तब तो बर्फ़ के बिना भी उसे कभी फफूंद नहीं लगेगी।”

पति के साथ अकेली होने का अवसर पाकर कीटी बहुत खुश थी। कारण, जब उसने बरामदे में आकर यह पूछा था कि किस बात की चर्चा हो रही है और उसे किसी ने उत्तर नहीं दिया था, तो उसके चेहरे पर दुख की ऐसी छाया आ गयी थी, जिसने बड़ी अच्छी तरह से उसकी मनोदशा को प्रतिबिम्बित कर दिया था।

जब वे दूसरों से आगे-आगे चलते और मकान को आंखों से ओझल करते हुए कठोर और धूल भरे रास्ते पर पहुंच गये, जहां रई की बालें और अनाज के दाने बिखरे थे, तो कीटी ने लेविन की बांह का और अधिक सहारा ले लिया और उसे अपने साथ सटा लिया। लेविन क्षणिक अप्रिय अनुभूति को भूल चुका था और अब, जबकि उसके गर्भवती होने का विचार एक पल को भी उसके मस्तिष्क से नहीं निकलता था, उसने एकान्त में अपनी प्रिय संगिनी की निकटता का वह नया और सुखद भाव अनुभव किया, जो काम-वासना से सर्वथा मुक्त था। कहने के लिये कोई बात नहीं थी, किन्तु वह कीटी की आवाज़ सुनना चाहता था, जो उसके गर्भवती होने के बाद उसकी दृष्टि की भांति ही बदल गयी थी। कीटी की आवाज़ और नज़र में ऐसी कोमलता और गम्भीरता थी, जैसी किसी एक प्रिय कार्य पर स्थायी रूप से ध्यान केन्द्रित करनेवाले लोगों में होती है।

“तुम थक तो नहीं जाओगी? और अधिक अच्छी तरह सहारा ले लो,” लेविन ने कहा।

“नहीं, एकान्त में तुम्हारे साथ होने से मैं बेहद खुश हूं और मुझे यह कहना होगा कि इन सबके साथ मुझे चाहे कितना अच्छा क्यों न लगे, हम दोनों की शामों के लिये अफ़सोस होता है।”

“वह अच्छा था और यह उससे भी ज़्यादा अच्छा है। दोनों ही चीज़ें अच्छी हैं,” कीटी का हाथ दबाते हुए उसने कहा।

“जानते हो, जब तुम आये, तो हम किस बारे में बातें कर रही थीं?”

“मुरब्बे के बारे में?”

“हां, मुरब्बे के बारे में, लेकिन बाद में इस बारे में भी कि पुरुष विवाह का प्रस्ताव कैसे करते हैं।”

“अच्छा !” लेविन ने कीटी द्वारा कहे जानेवाले शब्दों के बजाय उसकी आवाज़ को अधिक ध्यान से सुनते और लगातार उस रास्ते के बारे में सोचते हुए कहा , जो अब जंगल में से गुज़र रहा था। वह उन जगहों से बच रहा था , जहां कीटी ठोकर खा सकती थी।

“और सेर्गेई इवानोविच और वारेन्का के बारे में। तुमने ध्यान दिया ?.. मैं बेहद ऐसा चाहती हूं ,” वह कहती गयी। “तुम इस सम्बन्ध में क्या सोचते हो ?” और कीटी ने गौर से लेविन की तरफ़ देखा।

“कह नहीं सकता कि क्या सोचूं ,” लेविन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। “इस मामले में सेर्गेई मेरे लिये बहुत अजीब-सा है। मैंने तो तुम्हें बताया था न ...”

“कि उसे उस लड़की से प्यार था , जो चल बसी थी ...”

“यह तब की बात है , जब मैं बच्चा था और वही कुछ जानता हूं , जो सुना-सुनाया है। वह तब कैसा था , मुझे यह याद है। बहुत ही प्यारा होता था वह उस वक़्त। किन्तु तभी से मैं नारियों के प्रति उसके व्यवहार की ओर ध्यान देता रहा हूं। वह उनके साथ बड़े अच्छे ढंग से पेश आता है , कुछ उसे अच्छी भी लगती हैं , किन्तु यह अनुभव होता है कि उसके लिये वे केवल लोग हैं , नारियां नहीं।”

“किन्तु अब वारेन्का के साथ ... लगता है कहीं कुछ है ...”

“सम्भव है कि कुछ हो भी ... किन्तु सेर्गेई को जानना-समझना ज़रूरी है ... वह असाधारण , अद्भुत व्यक्ति है। वह केवल मानसिक जीवन बिताता है। वह बहुत ही निर्मल और उच्चात्मा वाला व्यक्ति है।”

“तो क्या इससे उसका स्तर नीचा हो जायेगा ?”

“नहीं , किन्तु वह केवल आत्मिक जीवन बिताने का ऐसा अभ्यस्त हो चुका है कि वास्तविकता को स्वीकार ही नहीं कर सकता। वारेन्का तो आखिर वास्तविकता है।”

लेविन अब बेझिझक अपने विचारों को व्यक्त करने का आदी हो गया था और उनके लिये बिल्कुल सही शब्द ढूंढ़ने का प्रयत्न नहीं करता था। वह जानता था कि इस समय जैसे प्यार के क्षणों में उसकी बीबी इशारे से ही यह समझ जायेगी कि वह क्या कहना चाहता है , और वह समझ भी गयी।

“किन्तु उसमें वैसी वास्तविकता नहीं है , जैसी वह मुझमें है।

मैं जानती हूँ कि मुझसे उसे कभी प्यार न हो पाता। वारेन्का तो आत्मिक ही आत्मिक है।”

“तुम ऐसा नहीं कहो, वह तुम्हें बेहद चाहता है और मुझे हमेशा इस बात से खुशी होती है कि मेरे रिश्तेदार तुम्हें प्यार करते हैं...”

“हां, वह मेरे प्रति दयालु है, किन्तु...”

“किन्तु वैसी बात नहीं है, जैसी दिवंगत निकोलाई के मामले में थी... तुम दोनों एक-दूसरे को प्यार करने लगे थे,” लेविन ने कीटी का वाक्य पूरा किया। “क्यों न उसकी चर्चा की जाये?” उसने बात आगे बढ़ाई। “मैं कभी-कभी अपनी भर्त्सना करता हूँ—अन्त यही होगा कि हम उसे भूल जायेंगे। ओह, कैसा भयानक और कैसा अद्भुत व्यक्ति था वह... तो हम क्या बात कर रहे थे?” कुछ क्षण चुप रहकर लेविन ने पूछा।

“तुम्हारा यह ख्याल है कि उसे किसी से प्यार नहीं हो सकता,” उसके विचारों को वाणी देते हुए कीटी ने कहा।

“ऐसा तो नहीं कि उसे प्यार नहीं हो सकता,” लेविन ने मुस्कराते हुए कहा। “किन्तु उसमें वह दुर्बलता नहीं, जिसकी जरूरत है... मुझे हमेशा उससे ईर्ष्या होती रही है और अब भी है, जब मैं इतना सौ-भाग्यशाली हूँ, मैं फिर भी उससे ईर्ष्या करता हूँ।”

“इस बात की ईर्ष्या करते हो कि उसे किसी से प्यार नहीं हो सकता?”

“मैं इस बात की ईर्ष्या करता हूँ कि वह मुझसे बेहतर है,” लेविन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। “वह अपने लिये नहीं जीता है। उसका सारा जीवन कर्त्तव्य को समर्पित है। इसलिये वह शान्त और सन्तुष्ट रह सकता है।”

“और तुम?” कीटी ने मज़ाक़ करते और प्यार से मुस्कराते हुए पूछा।

वह किसी प्रकार भी उस विचार-शृंखला को अभिव्यक्ति न दे पाती, जिसने उसे मुस्कराने के लिये विवश किया था। किन्तु वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि उसका पति, जो अपने भाई पर मुग्ध था और खुद को उसकी तुलना में तुच्छ प्रकट कर रहा था, ईमानदारी नहीं दिखा रहा था। कीटी जानती थी कि उसकी इस निष्कपटता के

अभाव का कारण भाई के प्रति उसका प्यार और इस चेतना के लिये लज्जा-भाव है कि वह बहुत अधिक सुखी है तथा विशेषतः उसकी बेहतर बनने की वह भावना है, जो उसमें सदा विद्यमान रहती है। कीटी उसके इस लक्षण को प्यार करती थी और इसलिये मुस्करा दी।

“और तुम ? तुम किसलिये सन्तुष्ट नहीं हो ?” उसने उसी मुस्कान के साथ पूछा।

लेविन को अपने असन्तोष के बारे में कीटी के अविश्वास से खुशी हुई और वह अनजाने ही कीटी को इस बात के लिये उकसा रहा था कि वह अपने अविश्वास के कारण बताये।

“मैं सुखी, किन्तु अपने से असन्तुष्ट हूं,” लेविन ने कहा।

“अगर तुम सुखी हो, तो असन्तुष्ट कैसे हो सकते हो ?”

“तुम्हें यह कैसे बताऊं ?.. मैं इससे ज्यादा और कुछ नहीं चाहता कि, मिसाल के लिये, तुम ठोकर न खा जाओ। हां, ऐसे उछलना-कूदना तो अच्छा नहीं !” उसने अपनी बात बदलते हुए कीटी को इस चीज के लिये डांटा कि उसने पगडंडी पर पड़ी टहनी को लांघते समय बड़ी फुर्ती दिखाई थी। “किन्तु जब मैं अपने जारे में सोचता हूं और दूसरों से, खास तौर पर जब भाई से, अपनी तुलना करता हूं, तो मुझे अनुभव होता है कि मैं बुरा हूं।”

“किस चीज में ?” कीटी ने उसी मुस्कान के साथ पूछा। “क्या तुम दूसरों के लिये कुछ नहीं करते ? किसानों के लिये तुम्हारी ये खुद काश्त जोतें, तुम्हारी खेतीबारी और तुम्हारी पुस्तक ?”

“नहीं, मुझे विशेष रूप से अब यह अनुभव होता है कि अगर मैं ऐसा नहीं करता हूं, तो इसके लिये तुम ज़िम्मेदार हो,” उसने कीटी का हाथ दबाते हुए कहा। “मैं योंही मरे मन से यह सब करता हूं। काश, मैं इस सारे काम को वैसे ही प्यार कर सकता, जैसे तुम्हें प्यार करता हूं... लेकिन पिछले कुछ समय में मैं घर के लिये दिये गये पाठ की तरह ही इसे करता हूं।”

“तो तुम मेरे पापा के बारे में क्या कहोगे ?” कीटी ने पूछा। “क्या वह भी बुरा है, क्योंकि उसने सामान्य भलाई के लिये कुछ नहीं किया ?”

“तुम्हारे पापा ? नहीं। किन्तु इसके लिये तुम्हारे पापा जैसी

सरलता, स्पष्टता और दयालुता होनी चाहिये। क्या मुझमें वह है? मैं कुछ नहीं करता और यातना सहता हूँ। यह सब तुम्हारी ही मेहरबानी है। जब तुम नहीं थीं और 'यह' नहीं था," उसने नज़र से पेट की तरफ़ संकेत करते हुए कहा, जिसे कीटी समझ गयी, "तो मैं अपनी सारी शक्ति अपने ध्येय में लगाता था, किन्तु अब ऐसा नहीं कर पाता और इसके लिये मेरी आत्मा मुझे कचोटती है। मैं घर के लिये दिये गये पाठ की तरह ही इसे पूरा करता हूँ, ढोंग करता हूँ..."

"तो क्या तुम सेर्गेई इवानोविच के साथ अपनी स्थिति को बदलना चाहोगे?" कीटी ने प्रश्न किया। "क्या तुम सामान्य हित में लगना और इस दिये गये पाठ को अपने भाई की तरह प्यार करना तथा इसके अलावा कुछ नहीं चाहोगे?"

"ज़ाहिर है कि नहीं," लेविन ने कहा। "बात यह है कि मैं इतना अधिक सुखी हूँ कि कुछ भी तो समझ नहीं पाता। तुम्हारा ख्याल है कि वह आज वारेन्का से विवाह का प्रस्ताव करेगा?" कुछ देर चुप रहकर उसने पूछा।

"ख्याल है भी और नहीं भी। किन्तु मैं बेहद ऐसा चाहती हूँ। ज़रा रुको," कीटी ने झुककर सड़क-किनारे से जंगली बाबूने का एक फूल तोड़ लिया। "लो गिनो इसकी पंखुड़ियाँ—प्रस्ताव करेगा, नहीं करेगा," उसने उसे फूल देते हुए कहा।

"करेगा, नहीं करेगा," लेविन ने छोटी-छोटी, सफ़ेद पंखुड़ियों को तोड़ते हुए कहा।

"नहीं, ऐसे नहीं!" कीटी ने, जो उत्तेजना से उसकी उंगलियों पर नज़र टिकाये थी, उसका हाथ पकड़कर उसे रोका। "तुमने दो पंखुड़ियाँ एकसाथ तोड़ लीं।"

"हम इस छोटी-सी पंखुड़ी को नहीं गिनेंगे," लेविन ने उसे तोड़ते हुए कहा। "लो घोड़ा-गाड़ी भी आ गयी।"

"तुम थकी तो नहीं, कीटी?" प्रिंसेस ने चिल्लाकर पूछा।

"ज़रा भी नहीं।"

"अगर घोड़े धीरे-धीरे और क़दम-क़दम चलें, तो तुम इसमें बैठ सकती हो।"

किन्तु घोड़ा-गाड़ी में बैठने में कोई तुक नहीं थी। जंगल नज़दीक ही था और सभी पैदल चल दिये।

(४)

काले बालों पर सफ़ेद रूमाल बांधे, बच्चों से घिरी, हंसती और खुशदिली से उन्हीं में व्यस्त तथा स्पष्टतः उस व्यक्ति द्वारा, जो उसे पसन्द था, विवाह का प्रस्ताव करने की सम्भावना के कारण उत्तेजना अनुभव करती हुई वारेन्का बहुत प्यारी लग रही थी। कोज़िनशेव उसके साथ-साथ चल रहा था और लगातार उसे मुग्ध होकर देख रहा था। वारेन्का को देखते हुए उसे उसके मुँह से सुनी सभी प्यारी बातें और सभी वे अच्छी चीज़ें याद आ रही थीं, जो वह उसके बारे में जानता था तथा उसे अधिकाधिक इस बात की चेतना हो रही थी कि उसके सम्बन्ध में वह जो कुछ अनुभव कर रहा है, उसमें कोई खास चीज़ है, जो उसने बहुत पहले, चढ़ती जवानी के दिनों में ही एक बार अनुभव की थी। उसकी निकटता के कारण खुशी की बढ़ती हुई भावना उस सीमा तक पहुंच गयी कि पतली डंडी और मुड़े हुए किनारों वाली बहुत बड़ी खुमी, जो उसने ढूंढ़ी थी, वारेन्का को देते हुए उसने उसकी आंखों में भांका, वारेन्का के चेहरे पर छा जानेवाली खुशी और भय की उत्तेजना की लाली देखकर खुद भी सकुचा गया और कुछ कहे बिना ऐसी मुस्कान के साथ मुस्करा दिया, जो बहुत कुछ कहती थी।

“अगर ऐसी बात है,” उसने अपने आपसे कहा, “मुझे अच्छी तरह सोच-विचार करना चाहिये और छोकरे की तरह क्षणिक आकर्षण की तरंग में नहीं बह जाना चाहिये।”

“अब सभी से अलग खुमियां बटोरने जाता हूं, वरना मेरी जमा की हुई खुमियों का तो पता ही नहीं चलेगा,” उसने कहा और जंगल के छोर से, जहां वे सभी विरले भूर्ज वृक्षों और छोटी-छोटी रेशमी घास के बीच घूम रहे थे, वन के मध्य की ओर, जहां भूर्ज के सफ़ेद तनों के बीच एस्प के धूमिल तनों और हेज़ल की भाड़ियों की श्याम-हरित आभा की झलक मिल रही थी, अकेला ही चल दिया। कोई चालीस क़दम चलने और भुमकों जैसे गुलाबी-लाल फूलों से पूरी तरह

ढकी स्पिंडल भाड़ी के पीछे पहुंचने के बाद कोज़िनशेव रुक गया। वह जानता था कि वहां से उसे कोई नहीं देख पायेगा। उसके इर्द-गिर्द पूरी खामोशी छाई थी। केवल उन भोजों के ऊपर, जिनके नीचे वह खड़ा था, मधु-मक्खियों के भुंड की भांति मक्खियां लगातार भिनभिना रही थीं और कभी-कभी बच्चों की आवाज़ें सुनाई दे जाती थीं। सहसा वन-छोर के पास ग्रीशा को पुकारती वारेन्का का मन्द्र स्वर गूंज उठा और कोज़िनशेव के चेहरे पर खुशीभरी मुस्कान खिल गयी। इस मुस्कान के प्रति सजग कोज़िनशेव ने मानो अपनी मलामत करते हुए अपनी स्थिति पर सिर हिलाया और सिगार निकालकर उसे जलाने लगा। वह देर तक भोज वृक्ष के तने से रगड़कर माचिस की तीली नहीं जला पाया। सफ़ेद छाल की कोमल भिल्ली गन्धक से चिपक जाती और आग बुझ जाती। आखिर एक तीली जल गयी और सिगार का सुगन्धित धुआं चौड़ी और डोलती चादर की तरह भाड़ी के ऊपर तथा भोज की भुकी टहनियों के नीचे आगे की ओर बढ़ चला। धुएं की पट्टी की ओर देखता कोज़िनशेव धीरे-धीरे क़दम बढ़ाता हुआ अपनी स्थिति पर विचार करने लगा।

“ऐसा क्यों न किया जाये?” वह सोच रहा था। “अगर यह क्षणिक उबाल या भावावेश होता, अगर मैं केवल यह आकर्षण अनुभव करता – आपसी आकर्षण (मैं ‘आपसी’ कह सकता हूं), किन्तु ऐसा भी अनुभव करता कि यह मेरे जीवन-ढंग के बिल्कुल प्रतिकूल जाता है, अगर मुझे यह अनुभव होता कि इस आकर्षण के फेर में पड़कर मैं अपने ध्येय और कर्त्तव्य को भूल जाऊंगा... किन्तु ऐसा तो कुछ नहीं। हां, एक बात मैं इसके विरुद्ध कह सकता हूं। वह यह कि मारीया की मृत्यु हो जाने पर मैंने अपने आपसे कहा था कि मैं उसकी स्मृति के प्रति निष्ठावान रहूंगा। अपनी भावना के विरुद्ध मैं केवल यही एक बात कह सकता हूं... यह महत्त्वपूर्ण है,” कोज़िनशेव ने अपने से कहा, किन्तु साथ ही यह भी अनुभव किया कि स्वयं उसके लिये इस चीज़ का कोई महत्त्व नहीं हो सकता था और केवल दूसरे लोगों की दृष्टि में उसकी काव्यमयी भूमिका का रंग ही बिगड़ सकता था। “इस बात को छोड़कर बहुत ढूढ़ने पर भी मैं इस भावना के विरुद्ध कहने को कुछ भी नहीं ढूढ़ सकूंगा। अगर मुझे केवल सूझ-बूझ के आधार

पर चुनाव करना होता तो मैं इससे बेहतर और कुछ भी न पा सकता । ”

अपनी जान-पहचान की जितनी भी नारियों और लड़कियों को उसने याद किया , उनमें से एक भी ऐसी प्रतीत नहीं हुई , जिसमें इस सीमा तक उन सभी गुणों का समावेश हुआ हो , जो वह शान्त मन से विचार-विमर्श करते हुए अपनी पत्नी में देखना चाहता था । वारेन्का में जवानी का सारा आकर्षण और ताज़गी थी , किन्तु वह बच्ची नहीं थी और अगर वह उसे प्यार करती थी , तो पूरी चेतना से और वैसे ही , जैसे किसी नारी को करना चाहिये । यह तो थी पहली बात । दूसरे — वह ऊंचे समाज से न केवल दूर थी , बल्कि स्पष्टतः उससे घृणा करती थी , किन्तु साथ ही ऊंचे समाज से अच्छी तरह परिचित थी और उसमें ऊंचे समाज के वे सभी तौर-तरीके भी थे , जिनके बिना कोज़िशेव अपनी जीवन-संगिनी की कल्पना ही नहीं कर सकता था । तीसरे , वह धार्मिक भुकाव रखती थी , मगर बालक की तरह सूझ-बूझ के बिना धार्मिक और दयालु नहीं थी , जैसे , उदाहरण के लिये कीटी थी , किन्तु उसका जीवन धार्मिक आस्थाओं पर आधारित था । छोटी-छोटी बातों तक में कोज़िशेव को उसमें वह सब कुछ दिखाई दिया , जो वह अपनी पत्नी में पाना चाहता था — वह गरीब और एकाकी थी । इसलिये वह अपने साथ ढेर सारे रिश्तेदार और उनके प्रभाव को पति के घर में नहीं लायेगी , जैसा कि वह कीटी के मामले में देख रहा था । सभी चीज़ों के लिये वह पति की ही आभारी होगी , और अपने भावी पारिवारिक जीवन के लिये उसने सदा इसकी भी कामना की थी । अपने में इन सभी गुणों को एकत्रित कर लेनेवाली यह लड़की उसे प्यार करती थी । वह विनम्र था , किन्तु यह बात उससे छिपी नहीं थी । वह खुद भी उसे प्यार करता था । एक ही बात विरुद्ध जाती थी , और वह थी उसकी आयु । किन्तु वह लम्बी आयु की नस्ल वाले लोगों में से था । उसके सिर का एक भी बाल सफ़ेद नहीं था , कोई भी उसे चालीस का नहीं कहता था और उसे वारेन्का के ये शब्द भी याद थे कि केवल रूस में ही लोग पचास साल की उम्र में अपने को बूढ़ा मानते हैं , कि फ़्रांस में पचास साल का आदमी खुद को

dans la force de l'âge\* और चालीस साल का un jeune homme\*\* मानता है। किन्तु सालों की गिनती का क्या महत्त्व हो सकता है, जब वह आत्मा से अपने को वैसा ही जवान महसूस करता है, जैसा वह बीस साल पहले था? क्या वह जवानी की ही भावना नहीं थी, जो उसने अभी अनुभव की थी, जब दूसरी ओर से पुनः वन के छोर पर निकलने पर सूरज की टेढ़ी किरणों के प्रखर प्रकाश में उसने पीला फ़ाक पहने, टोकरी लिये बूढ़े भोज के तने के पास से सुडौल वारेन्का को चुस्त चाल से जाते देखा और जब वारेन्का द्वारा अंकित छाप टेढ़ी किरणों में चमचमाते और उसे आश्चर्यचकित करनेवाले रई के पीले खेत और खेत के बहुत परे पीले धब्बों से सुशोभित और क्षितिज की नीलिमा में लुप्त होते पुराने जंगल के दृश्य से घुल-मिल गयी? उसका हृदय खुशी से धड़क उठा। वह कोमल भावना से विह्वल हो गया। उसने अनुभव किया कि निर्णय कर लिया। खुमी उठाने के लिये अभी-अभी बैठनेवाली वारेन्का लचीलेपन से उठी और उसने घूमकर देखा। कोज़िशेव सिगार फेंककर दृढ़ क़दमों से उसकी ओर बढ़ चला।

(५)

“वर्बारा अन्द्रेयेव्ना, जब मैं अभी बहुत जवान था, तो मैंने अपने लिये ऐसी नारी के आदर्श की कल्पना की थी, जिसे मैं प्यार करने और अपनी कहने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूंगा। मैं लम्बा जीवन बिता चुका हूं और अब आपके रूप में पहली बार मुझे वह नारी मिली है, जिसे मैं खोज रहा था। मैं आपको चाहता हूं और आपसे अपनी पत्नी बनने का प्रस्ताव करता हूं।”

कोज़िशेव उस समय मन ही मन यह कह रहा था, जब वह वारेन्का से दस क़दम की दूरी पर था। घुटनों के बल बैठी और हाथों की ओट करके ग्रीशा से खुमी को बचाती हुई वारेन्का नन्ही माशा को पुकार रही थी।

---

\* पूरे निखार की उम्र में। ( फ़्रांसीसी )

\*\* जवान आदमी। ( फ़्रांसीसी )

“इधर आओ, इधर! छोटी-छोटी हैं! बहुत सारी!” अपने प्यारे, मन्द स्वर में वह कह रही थी।

कोज़िनशेव को नज़दीक आते देखकर वह न तो खड़ी हुई और न ही उसने अपनी स्थिति बदली। किन्तु सभी चीज़ों से यह पता चल रहा था कि वह उसे निकट आते अनुभव कर रही है और खुश हो रही है।

“कहिये, मिलीं कुछ खुमियां?” उसने सफ़ेद रूमाल के नीचे से अपना सुन्दर और धीरे-धीरे मुस्कराता चेहरा उसकी ओर फेरते हुए पूछा।

“एक भी नहीं,” कोज़िनशेव ने जवाब दिया। “और आपको?”

वारेन्का उसे घेर लेनेवाले बच्चों में व्यस्त होने के कारण उत्तर नहीं दे सकी।

“टहनी के पास वह एक खुमी और है,” वारेन्का ने नन्ही माशा को एक छोटी-सी खुमी और दिखाई, जिसकी लचीली गुलाबी टोपी उस सूखे तिनके ने बीच में से चीर डाली थी, जिसके नीचे से वह उभर आयी थी। वारेन्का तब उठी, जब माशा ने दो सफ़ेद टुकड़ों में तोड़कर खुमी को उठा लिया। “इससे मुझे मेरा बचपन याद आ रहा है,” उसने बच्चों से परे हटते और कोज़िनशेव के साथ जाते हुए इतना और कहा।

ये दोनों कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे। वारेन्का देख रही थी कि कोज़िनशेव कुछ कहना चाहता है। वह अनुमान लगा रही थी कि किस बारे में और इसलिये खुशी तथा भय से उसका दिल डूबा जा रहा है। वे इतनी दूर जा चुके थे कि कोई भी उनकी बात नहीं सुन सकता था, किन्तु कोज़िनशेव ने अभी भी कुछ कहना शुरू नहीं किया था। वारेन्का के लिये चुप रहना ही ज़्यादा अच्छा था। कारण कि खुमियों की चर्चा के पश्चात की तुलना में कुछ देर ख़ामोश रहने के बाद वह कहना ज़्यादा आसान था, जो वे कहना चाहते थे। किन्तु वारेन्का ने अपनी इच्छा के विरुद्ध, मानो संयोग से ही यह कह दिया —

“तो आपको कुछ नहीं मिला? वैसे जंगल के बीच में तो हमेशा ही कम खुमियां होती हैं।”

कोज़िनशेव ने गहरी सांस ली और कुछ भी जवाब नहीं दिया। उसे उस बात का अफ़सोस हुआ कि वारेन्का ने खुमियों की चर्चा शुरू

कर दी। वह उसे पहले शब्दों की ओर, जो उसने अपने बचपन के बारे में कहे थे, लौटाना चाहता था। किन्तु मानो अपनी इच्छा के विरुद्ध उसने कुछ देर चुप रहने के बाद उसके अन्तिम शब्दों पर टिप्पणी की।

“मैंने केवल यह सुना है कि सफ़ेद खुमियां मुख्यतः जंगल के किनारे पर ही होती हैं, यद्यपि मैं उन्हें पहचान नहीं सकता।”

कुछ मिनट और गुजर गये, वे बच्चों से कुछ और दूर चले गये और अब एकदम अकेले थे। वारेन्का का दिल इतने जोर से धड़क रहा था कि उसे उसकी धक-धक सुनाई दे रही थी, यह अनुभव हो रहा था कि उसके चेहरे पर लाली आ रही है, उसका चेहरा पीला पड़ रहा है और वह फिर से लाल हो रहा है।

श्रीमती शताल के पास अपनी स्थिति के बाद कोज़िनशेव जैसे व्यक्ति की पत्नी बनना उसे अपना अहोभाग्य प्रतीत हो रहा था। इसके अलावा उसे इस बात का भी लगभग विश्वास था कि वह उसे प्यार करती है। अब यह बात तय होनेवाली थी। वह जो कहेगा, उससे उसका मन डर रहा था और जो नहीं कहेगा, उससे भी।

कोज़िनशेव भी यह महसूस कर रहा था कि उसे या तो अभी अपनी बात कह देनी चाहिये या फिर वह कभी ऐसी नहीं कर पायेगा। वारेन्का की दृष्टि, उसके गालों की लाली और भुकी नजरें—हर चीज़ यह ज़ाहिर कर रही थी कि वह यातनापूर्ण प्रतीक्षा का शिकार हो रही है। कोज़िनशेव यह देख रहा था और उसे उसपर तरस आ रहा था। वह यह भी महसूस कर रहा था कि अब कुछ न कहने का मतलब उसका अपमान करना होगा। उसने अपने निर्णय के पक्ष में सारे तर्कों को जल्दी-जल्दी मन में दोहराया। उसने उन शब्दों को भी दोहराया, जिन्हें कहकर वह विवाह का प्रस्ताव करना चाहता था। किन्तु इन शब्दों के बजाय उसने न जाने किस अप्रत्याशित विचार से अचानक उससे यह पूछा—

“सफ़ेद और भोज के नीचे उगनेवाली खुमियों में क्या अन्तर होता है?”

वारेन्का ने जब इस प्रश्न का उत्तर दिया, तो उसके होंठ उत्तेजना से कांप रहे थे:

“टोपी में तो लगभग कोई अन्तर नहीं होता, हां, जड़ में होता है।”

जैसे ही ये शब्द कहे गये, वैसे ही वे दोनों समझ गये कि मामला खत्म हो गया, कि जो कुछ कहा जानेवाला था, वह अब नहीं कहा जायेगा और इसके पहले चरम सीमा पर पहुंचनेवाली उनकी उत्तेजना धीरे-धीरे कम होने लगी।

“भोज के नीचे पैदा होनेवाली खुमी की जड़ मुझे काले बालों वाले आदमी की दो दिन की बढ़ी दाढ़ी की याद दिलाती है,” कोज़िंशेव ने शान्ति से कहा।

“हां, यह सही है,” वारेन्का ने मुस्कराते हुए जवाब दिया और उनकी सैर की दिशा अपने आप ही बदलने लगी। वे बच्चों के करीब होने लगे। वारेन्का को दुख भी हो रहा था और वह लज्जा भी अनुभव कर रही थी, किन्तु साथ ही उसे राहत भी महसूस हो रही थी।

घर लौटने और अपने सभी तर्कों पर फिर से विचार करने के बाद कोज़िंशेव इस नतीजे पर पहुंचा कि उसके सोचने का ढंग सही नहीं था। वह मारीया की याद के प्रति गद्दारी नहीं कर सकता था।

“आराम से, बच्चो, आराम से!” लेविन गुस्से से बच्चों पर चिल्लाया, जब खुशी से चीखती-चिल्लाती उनकी भीड़ उनकी तरफ लपकी, और पत्नी की रक्षा के लिये वह उसके सामने खड़ा हो गया।

बच्चों के बाद कोज़िंशेव और वारेन्का भी जंगल से बाहर आये। कीटी को वारेन्का से कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह उन दोनों के शान्त और कुछ हद तक भेंपते चेहरों से समझ गयी कि उसकी योजनायें सिरें नहीं चढ़ीं।

“तो क्या हुआ?” जब वे घर लौट रहे थे लेविन ने कीटी से पूछा।

“बात बनी नहीं,” कीटी ने मुस्कराकर कहा। उसके बोलने और मुस्कराने का ढंग उसके पिता की याद दिलाता था, जिससे लेविन को अकसर खुशी होती थी।

“कैसे बात नहीं बनी?”

“ऐसे,” उसने पति का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे मुंह तक ले जाते और मुंदे होठों से छूते हुए कहा। “जैसे बिशप का हाथ चूमा जाता है।”

“ किसकी बात नहीं बनी ? ” लेविन ने हंसते हुए पूछा ।

“ दोनों की । और बात बननी ऐसे चाहिये ... ”

“ किसान जा रहे हैं । ”

“ नहीं , उन्होंने इधर नहीं देखा । ”

( ६ )

बालकों के चाय पीने के समय वयस्क छज्जे में बैठे थे और ऐसे बातचीत कर रहे थे मानो कुछ भी न हुआ हो , यद्यपि सभी , और खास तौर पर कोज़िन्शेव तथा वारेन्का अच्छी तरह से जानते थे कि बेशक नकारात्मक , फिर भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात हुई है । वे दोनों समान रूप से वैसा ही अनुभव कर रहे थे , जैसा कि कोई छात्र परीक्षा में असफल होने और उसी कक्षा में रह जाने या सदा के लिये शिक्षा-संस्था से निकाल दिये जाने पर अनुभव करता है । यहां उपस्थित सभी लोग भी यह महसूस करते हुए कि कोई खास बात हो गयी है , बड़ी ज़िन्दादिली से दूसरी बातों की चर्चा कर रहे थे । इस शाम को लेविन और कीटी विशेष रूप से सुखी और प्रेम के रंग में रंगे हुए थे । वे दोनों अपने प्रेम से सुखी हैं , इससे उन दो व्यक्तियों की ओर एक कटु-सा संकेत होता था , जो उन्हीं की तरह सुखी होना चाहते थे और नहीं हो सके तथा इस कारण उन्हें कुछ लज्जा की अनुभूति हो रही थी ।

“ मेरी बात को पत्थर की लकीर समझो कि अलेक्सान्द्र नहीं आयेंगे , ” बूढ़ी प्रिंसेस ने कहा ।

आज शाम की गाड़ी से ओब्लोन्स्की के आने की उम्मीद थी और बूढ़े प्रिंस ने लिखा था कि शायद वे भी आयेंगे ।

“ और मैं इसका कारण भी जानती हूं , ” प्रिंसेस कहती गयीं ।  
“ उनका कहना है कि नवदम्पति को शुरू में कुछ समय तक अकेले ही रहने देना चाहिये । ”

“ पापा ने तो हमें अकेले छोड़ ही रखा है । उनसे मिले हुए कितना अर्सा हो गया है , ” कीटी ने कहा । “ फिर हम नवदम्पति भी कहाँ हैं ? कभी के पुराने हो चुके हैं । ”

“लेकिन अगर वे नहीं आयेंगे, तो मैं तुमसे विदा लूंगी, बच्चो,” प्रिंसेस ने उदासी से आह भरकर कहा।

“यह भी कोई बात है, अम्मां!” दोनों बेटियों ने एकसाथ कड़ा विरोध किया।

“तुम उनके बारे में भी तो सोचो! अब तो...”

बूढ़ी प्रिंसेस का स्वर बिल्कुल अप्रत्याशित ही कांप उठा। बेटियां खामोश रहीं और उन्होंने एक-दूसरी की ओर देखा। “Maman, हमेशा कोई न कोई उदासी की बात ढूँढ़ निकालती हैं,” उनकी नज़रें कह रही थीं। वे नहीं जानती थीं कि प्रिंसेस के लिये बेटी के घर में रहना चाहे कितना ही सुखद क्यों न था, वे यहां अपनी उपस्थिति चाहे कितनी ही आवश्यक क्यों न समझती थीं, फिर भी जब से उन्होंने अपनी आखिरी और प्यारी बेटी की शादी कर दी थी और उनका पारिवारिक नीड़ खाली हो गया था, तब से प्रिंसेस को खुद अपने लिये और अपने पति के लिये यातनापूर्ण उदासी की अनुभूति होती थी।

“क्या बात है, अगाफ़्या मिखाइलोव्ना?” कीटी ने रहस्यपूर्ण मुद्रा और चेहरे पर अर्थपूर्ण भाव लिये सामने आ खड़ी हुई अगाफ़्या मिखाइलोव्ना से अचानक पूछा।

“रात के खाने के बारे में जानना चाहती हूं।”

“बहुत ठीक,” डौली ने कहा, “तुम जाकर रात के खाने के बारे में हिदायतें दो और मैं ग्रीशा के पास जाकर उसे पाठ याद करवाती हूं। आज उसने कुछ भी नहीं किया।”

“आज मेरी बारी है! मैं जाता हूं, डौली,” लेविन ने फ़ौरन उठते हुए कहा।

ग्रीशा को, जो हाई स्कूल में दाखिल हो चुका था, गर्मियों की छुट्टियों में अपने पाठ दोहराने थे। डौली मास्को में ही बेटे के साथ लातीनी भाषा का पाठ दोहरवाती थी और लेविन-दम्पति के यहां आने पर उसने गणित और लातीनी भाषा के सबसे मुश्किल पाठ दिन में कम से कम एक बार बेटे के साथ दुहराने का नियम-सा बना लिया था। लेविन ने उसकी जगह लेनी चाही। किन्तु मां ने एक बार लेविन को पाठ दुहरवाते हुए सुनकर यह महसूस किया कि वह इस काम को वैसे नहीं करता है, जैसे अध्यापक मास्को में करता था, और घबराते

तथा लेविन के दिल को ठेस न लगाने की कोशिश करते हुए दृढ़तापूर्वक उससे यह कह दिया कि अध्यापक की भांति पुस्तक के अनुसार पाठ दोहरवाना चाहिये और खुद उसके लिये ही इसे फिर से करना बेहतर होगा। लेविन को ओब्लोन्स्की पर इस बात के लिये गुस्सा आया कि उसकी लापरवाही के कारण मां को, जो पढ़ाई के बारे में कुछ नहीं जानती, बेटे की निगरानी करनी पड़ती है और अध्यापकों पर इसलिये खीझ आई कि वे बच्चों को इतनी बुरी तरह से पढ़ाते हैं। किन्तु अपनी साली को उसने उसी तरह से पाठ दोहरवाने का वचन दिया, जैसे वह चाहती थी। ग्रीशा को वह अपने ढंग से नहीं, बल्कि पुस्तक के अनुसार पाठ याद करवाता रहा और इसलिये उसमें उसका मन नहीं लगता था और वह पाठ का समय भूल जाता था। आज भी ऐसा ही हुआ था।

“नहीं, मैं जाता हूं, डौली, तुम बैठी रहो,” लेविन ने कहा। “हम सब कुछ ढंग से और पुस्तक के अनुसार करेंगे। हां, जब स्तीवा आ जायेगा और हम शिकार को चले जायेंगे, तब मुझे उसका पाठ छोड़ना होगा।”

और लेविन ग्रीशा के कमरे की तरफ़ चल दिया।

वारेन्का ने भी कीटी से कुछ ऐसा ही कहा। लेविन-दम्पति के सुखी, सुव्यवस्थित घर में भी वारेन्का उपयोगी होने का रास्ता निकाल लेती थी।

“मैं रात के खाने की व्यवस्था करवा लूंगी और आप बैठिये,” इतना कहकर वह अगाफ़्या मिखाइलोव्ना की ओर चल दी।

“हां, हां, शायद चूज़े नहीं मिले। तब अपने ही चूज़े...” कीटी ने कहा।

“हम अगाफ़्या मिखाइलोव्ना के साथ मिलकर सब तय कर लेंगी।” और वारेन्का उसको साथ लेकर गायब हो गयी।

“कितनी प्यारी लड़की है!” प्रिंसेस ने कहा।

“प्यारी नहीं, maman, बल्कि ऐसी कमाल की लड़की है, जैसी नहीं होतीं।

“तो आप लोग आज स्तेपान अर्काद्वेविच के आने की उम्मीद कर रहे हैं?” कोज़्निशेव ने स्पष्टतः वारेन्का की चर्चा न जारी रखने

की इच्छा से कहा। “एक-दूसरे से इतने भिन्न दो हमजुल्फों का मिलना बहुत मुश्किल है,” उसने सूक्ष्म मुस्कान के साथ कहा। “एक बेहद सक्रिय है और केवल लोगों में ही ऐसे खुशी महसूस करता है, जैसे मछली पानी में, और दूसरा, हमारा कोस्त्या, जो बड़ा सजीव, फुर्तीला और हर चीज़ के लिये बड़ा संवेदनशील है, किन्तु जैसे ही समाज में जाता है, वैसे ही या तो बेजान हो जाता है या फिर खुशकी पर मछली की तरह छटपटाता है।”

“हां, वह मामले की गम्भीरता की ओर ध्यान नहीं देता,” कोज़िनशेव को सम्बोधित करते हुए प्रिंसेस ने कहा। “मैं उससे यह कहने के लिये आपसे अनुरोध करनेवाली थी कि इसके लिये (उसने कीटी की ओर संकेत किया) यहां रुकना सम्भव नहीं और अवश्य ही मास्को आ जाना चाहिये। वह कहता है कि डाक्टर को यहां बुलवा भेजेगा...”

“Maman, वह सब कुछ करेगा, वह हर चीज़ के लिये तैयार है,” कीटी ने कहा। उसे इस कारण मां की बात अखरी थी कि वह इस चीज़ के लिये कोज़िनशेव से अपील कर रही थी।

इनकी बातचीत के दौरान पार्क के रास्ते पर घोड़ों की हिनहिनाहट और कंकड़ियों पर पहिर्यों की खड़खड़ाहट सुनाई दी।

डौली अपने पति की ओर जाने को उठ भी नहीं पाई थी कि उस कमरे की खिड़की में से, जहां ग्रीशा पढ़ रहा था, लेविन कूदकर बाहर चला गया और उसने ग्रीशा को भी बाहर खींच लिया।

“यह स्तीवा है!” लेविन छज्जे के नीचे से चिल्लाया। “हमने पाठ समाप्त कर लिया है, डौली! तुम कोई चिन्ता नहीं करो!” उसने इतना और कहा तथा छोकरे की तरह बग्घी की ओर दौड़ने लगा।

“Is, ea, id, ejus, ejus, ejus,” पथ पर उछलता-कूदता और लातीनी भाषा के सर्वनामों के रूप चिल्लाता हुआ ग्रीशा उधर दौड़ने लगा।

“कोई और भी है। शायद पापा हैं!” लेविन रास्ते के करीब रुककर चिल्लाया। “कीटी, खड़े जीने से नीचे नहीं उतरो, घूमकर आ जाओ।”

किन्तु जो बग्घी में बैठा था, उसे कीटी के पापा समझ कर उसने

भूल की थी। बग्घी के नज़दीक आने पर उसने देखा कि ओब्लोन्स्की की बगल में बूढ़े प्रिंस नहीं, बल्कि एक मोटा-तगड़ा और सुन्दर नौजवान बैठा है, जिसने पीछे की ओर फ़ीतों के लम्बे सिरों वाली स्काटलैंडी ढंग की टोपी पहन रखी थी। यह श्चेर्बात्स्की परिवार का दूर के रिश्ते का भाई, पीटर्सबर्ग और मास्को का शानदार नौजवान, “बहुत बढ़िया आदमी और शिकार का दीवाना,” जैसा कि ओब्लोन्स्की ने उसका परिचय कराते हुए कहा, वसीली वेस्लोव्स्की था।

बूढ़े प्रिंस के बजाय आने के कारण वेस्लोव्स्की ने जो निराशा पैदा की थी, उससे तनिक भी भेंप न महसूस करते हुए उसने बड़ी खुशमिज़ाजी से लेविन के साथ हाथ मिलाया, उसे अपने पुराने परिचय का स्मरण करवाया और ग्रीशा को उस कुत्ते के ऊपर से ले जाते हुए, जो ओब्लोन्स्की अपने साथ लाया था, बग्घी में बिठा लिया।

लेविन बग्घी में नहीं बैठा, बल्कि उसके पीछे-पीछे पैदल चलता रहा। उसे इस बात से कुछ खीझ महसूस हो रही थी कि बूढ़े प्रिंस नहीं आये, जिन्हें वह जितना अधिक जान पा रहा था, उतना ही अधिक प्यार करता था और उनकी जगह एकदम पराया तथा फ़ालतू व्यक्ति यानी वसीली वेस्लोव्स्की नमूदार हो गया था। उसे वह उस समय और भी अधिक पराया और फ़ालतू प्रतीत हुआ जब बरामदे के पास आने पर, जहां छोटे-बड़ों की खुशी से उमड़ती भीड़ जमा थी, उसने वसीली वेस्लोव्स्की को खास प्यार और सलीक़े से कीटी का हाथ चूमते देखा।

“आपकी बीवी और मैं cousins\* हैं और हमारी पुरानी जान-पहचान है,” वेस्लोव्स्की ने फिर तपाक से लेविन के साथ हाथ मिलाते हुए कहा।

“तो कहो, शिकार मिलेगा न?” ओब्लोन्स्की ने, जो सभी को कुछ न कुछ अच्छे शब्द कहने की उतावली में था, लेविन से पूछा। “मेरे और इस नौजवान के बहुत ही भयानक इरादे हैं। और maman, वे तब से मास्को नहीं गये। ओह तान्या, मैं तुम्हारे लिये कुछ लाया हूं! जाकर बग्घी के पीछे से ले लो,” वह सभी से बातें करता जा

---

\* रिश्तेदार। ( फ़्रांसीसी )

रहा था। “तुममें विन्नी नाज़गी आ गयी है, मेरी प्यारी डौली,” उसने पत्नी का हाथ फिर से चूमते, उसे अपने एक हाथ में थामे और दूसरे से उसे थपथपाते हुए कहा।

लेविन, जो क्षण भर पहले इतना खुश था, अब सभी की ओर उदासी से देख रहा था और उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था।

“इन होंठों से कल इसने किसे चूमा होगा?” पत्नी के प्रति ओब्लोन्स्की के स्नेह-प्रदर्शन को देखते हुए लेविन मन ही मन सोच रहा था। उसने डौली की ओर देखा और वह भी उसे अच्छी नहीं लगी।

“उसके प्यार का वह विश्वास नहीं करती। किसलिये फिर इतनी खुश हो रही है? देखकर नफ़रत होती है!” लेविन सोच रहा था।

उसने प्रिंसेस की ओर देखा, जो क्षण भर पहले तक उसे इतनी अच्छी लग रही थीं। उसे उनका वह अन्दाज़ अखरा, जिससे उन्होंने फ़ीतों की टोपी पहने इस वेस्लोव्स्की का ऐसे स्वागत किया मानो प्रिंसेस अपने घर में हों।

यहां तक कि कोज़िशेव भी, जो बरामदे में आ गया था, उस ढोंगपूर्ण मैत्रीभाव के कारण, जिससे उसने ओब्लोन्स्की का स्वागत किया, उसे अच्छा नहीं लगा। उसे मालूम था कि वह ओब्लोन्स्की को न तो पसन्द करता है और न उसके दिल में उसके लिये आदर ही है।

वारेन्का उसे इसलिये अखरी कि इस महानुभव के साथ उसने sainte nitouche\* परिचय किया, जबकि दिल में केवल यही सोच रही थी कि कैसे किसी की बीवी बने।

सबसे अधिक तो उसे कीटी बुरी लग रही थी, जो जशन के उस रंग में बह गयी थी, जैसा कि यह महानुभाव गांव में अपने आगमन को अपने तथा दूसरों के लिये समझता था। कीटी की वह मुस्कान उसे खास तौर पर खटक रही थी, जो वह उसकी मुस्कान के जवाब में होंठों पर ला रही थी।

ऊंचे-ऊंचे बात करते हुए सभी घर में चले गये। उन सबके बैठते ही लेविन मुड़ा और बाहर चला गया।

---

\* देवी की तरह। ( फ़्रांसीसी )

कीटी ने देखा कि पति का मूड कुछ खराब है। उसने उसके साथ एकान्त में क्षण भर बात करनी चाही, लेकिन वह यह कहकर जल्दी से भाग गया कि उसे दफ्तर में ज़रूरी काम है। एक अर्से से उसे खेती-बारी से सम्बन्धित काम-काज इतने महत्त्वपूर्ण नहीं प्रतीत हुए थे, जितने आज। “इन सबके लिये तो हर दिन जशन है,” वह सोच रहा था, “लेकिन यहां मेरे काम-काज जशनी नहीं हैं। वे इन्तज़ार नहीं करेंगे और उनके बिना जीना सम्भव नहीं।”

(७)

लेविन तभी घर लौटा, जब रात के खाने के लिये उसे बुलवा भेजा गया। कीटी और अगाफ़्या मिखाइलोव्ना ज़ीने पर खड़ी हुई यह सलाह-मशविरा कर रही थीं कि खाने की मेज़ पर कौन-सी शराबें रखी जायें।

“आप लोग यह क्या fuss\* कर रही हैं? वही रख दीजिये, जो हर दिन रखती हैं।”

“नहीं, स्तीवा वह नहीं पीता... कोस्त्या, ज़रा रुको, तुम्हें क्या हुआ है?” कीटी ने उसके पीछे-पीछे तेज़ी से क़दम बढ़ाते हुए पूछा। किन्तु उसने कीटी के पास आ जाने की प्रतीक्षा नहीं की और निर्दयता से बड़े-बड़े डग भरता हुआ भोजन कक्ष में पहुंच गया और वहां वेस्लोव्स्की तथा स्तेपान ओब्लोन्स्की के बीच चल रही आम, दिलचस्प बातचीत में शामिल हो गया।

“तो कल शिकार पर चल रहे हैं न?” ओब्लोन्स्की ने कहा।

“हां, हां, चलिये,” वेस्लोव्स्की ने दूसरी कुर्सी पर टेढ़ा बैठते और अपनी चर्बी-चढ़ी टांग को अपने नीचे दबाते हुए कहा।

“मैं बहुत खुशी से चलूंगा। आप इस साल शिकार के लिये जा भी चुके हैं क्या?” लेविन ने वेस्लोव्स्की की टांग को गौर से देखते और बनावटी खुशी ज़ाहिर करते हुए, जिससे कीटी बहुत अच्छी तरह परिचित थी और जो उसे बिल्कुल नहीं जंचती थी, वेस्लोव्स्की से पूछा।

---

\* भंभट। ( फ़्रांसीसी )

“कह नहीं सकता कि बड़े कुनाल मिलेंगे या नहीं, मगर छोटे कुनालों की कोई कमी नहीं। हां, चलना चाहिये तड़के ही। आप थक तो नहीं जायेंगे? स्तीवा, तुम थक तो नहीं गये?”

“मैं और थक जाऊं? आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ। आओ रतजगा करें! घूमने चलें!”

“सचमुच, बड़ा अच्छा ख्याल है, रतजगा हो जाये! बहुत खूब!” वेस्लोव्स्की ने समर्थन किया।

“ओह, इस बात का तो हमें यक़ीन है कि तुम जागते रह सकते हो और दूसरों की नींद भी हराम कर सकते हो,” डौली ने उस हल्के-से व्यंग्य के साथ पति से कहा, जिससे वह अब लगभग हमेशा स्तीवा को सम्बोधित करती थी। “मेरे ख्याल में तो अब सोने का वक़्त हो गया ... मैं जा रही हूं, मैं खाना नहीं खाऊंगी।”

“नहीं, तुम अभी कुछ देर और बैठो, प्यारी डौली,” ओब्लोन्स्की ने खाने की बड़ी मेज़ पर बीवी के पास जाते हुए कहा। “मुझे अभी बहुत सी बातें बतानी हैं!”

“वास्तव में कुछ भी नहीं।”

“जानती हो, वेस्लोव्स्की आन्ना के यहां हो आया है। वह फिर से उनके पास जानेवाला है। यहां से वे सिर्फ़ सत्तर वेर्स्ता\* दूर हैं। मैं भी ज़रूर वहां जाऊंगा। वेस्लोव्स्की, इधर आओ तो!”

वेस्लोव्स्की महिलाओं की तरफ़ जाकर कीटी के करीब बैठ गया।

“ओह, कृपया बताइये, आप आन्ना के यहां हो आये हैं न? वह कैसी है?” डौली ने उससे पूछा।

लेविन मेज़ के दूसरे सिरे पर ही बैठा रह गया और प्रिंसेस तथा वारेन्का से लगातार बातें करते हुए यह देखता रहा कि ओब्लोन्स्की, डौली, कीटी और वेस्लोव्स्की के बीच बड़ी सजीव और रहस्यपूर्ण बातचीत हो रही है। इतना ही नहीं कि रहस्यपूर्ण बातचीत हो रही थी, उसे अपनी पत्नी के चेहरे पर उस समय गम्भीर भाव की भी

---

\* वेर्स्ता—पुराने रूस में प्रचलित एक किलोमीटर से कुछ अधिक लंबा फ़ासला। —सं०

भलक दिखाई देती, जब वह बड़े उत्साह से कुछ बता रहे वेस्लोव्स्की के सुन्दर चेहरे को टकटकी बांधकर देखती होती।

“उनके यहां सब कुछ बहुत अच्छा है,” ब्रोन्स्की और आन्ना के बारे में वेस्लोव्स्की बता रहा था। “ज़ाहिर है कि मेरे लिये कोई निष्कर्ष निकालना ठीक नहीं होगा, लेकिन उनके घर में आदमी अपने को परिवार में अनुभव करता है।”

“वे क्या करने का इरादा रखते हैं?”

“लगता है कि जाड़े भर के लिये मास्को जाना चाहते हैं।”

“हम अगर एकसाथ ही वहां जायें, तो कितना अच्छा रहे! तुम कब जाओगे?” ओब्लोन्स्की ने वेस्लोव्स्की से पूछा।

“मैं जुलाई का महीना उनके यहां बिताऊंगा।”

“तुम जाओगी?” ओब्लोन्स्की ने बीबी से पूछा।

“मैं तो बहुत अरसे से चाहती थी और ज़रूर जाऊंगी,” डौली ने कहा। “मुझे उस पर तरस आता है और मैं उसे अच्छी तरह समझती हूं। वह बहुत ही अच्छी औरत है। मैं तुम्हारे जाने के बाद अकेली जाऊंगी और इस तरह किसी के लिये परेशानी का कारण नहीं बनूंगी। तुम्हारे बिना तो और भी अधिक अच्छा रहेगा।”

“अच्छी बात है,” ओब्लोन्स्की ने कहा। “और कीटी तुम?”

“मैं? मैं किसलिये जाऊंगी?” कीटी ने एकदम सुर्ख होते हुए जवाब दिया और पति की ओर देखा।

“आप आन्ना अर्कादियेव्ना से परिचित हैं?” वेस्लोव्स्की ने पूछा। “बहुत ही सुन्दर नारी है वह।”

“हां,” कीटी ने और भी अधिक लाल होते हुए जवाब दिया, उठी और पति के पास चली गयी।

“तो तुम कल शिकार के लिये जा रहे हो?” कीटी ने पति से जानना चाहा।

इन कुछ क्षणों में, विशेषतः उस लाली के कारण, जो वेस्लोव्स्की से बात करते समय कीटी के गालों पर छा गयी थी, लेविन का ईर्ष्या भाव बहुत दूर जा चुका था। इसलिये अब उसके शब्दों को सुनते हुए वह उनका अपने ही ढंग से अर्थ लगा रहा था। बाद में यह याद करने पर बेशक उसे बहुत अजीब-सा लगा, मगर इस समय तो यह साफ़

लगा कि अगर वह उसके शिकार पर जाने के बारे में पूछ रही है, तो केवल यह जानने के लिये कि वह वेस्लोव्स्की को, जिसे उसकी समझ के मुताबिक कीटी प्यार भी करने लगी थी, अपनी संगत का सुख प्रदान करेगा या नहीं।

“हां, मैं जाऊंगा,” अस्वाभाविक और स्वयं अपने लिये ही घृणित आवाज़ में उसने जवाब दिया।

“नहीं, कल घर पर रहना ही ज्यादा अच्छा होगा, क्योंकि डौली अपने पति से बिल्कुल नहीं मिल पाई। परसों चले जाना,” कीटी ने कहा।

कीटी के इन शब्दों का लेविन ने अब यह अर्थ लगाया — “मुझे ‘इस’ से अलग नहीं करो। तुम जाओगे, मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, लेकिन मुझे इस बाँके जवान की संगत का सुख पाने दो।”

“ओह, अगर तुम चाहती हो, तो हम कल नहीं जायेंगे,” लेविन ने विशेष मधुरता के साथ कहा।

इसी बीच वेस्लोव्स्की उस व्यथा की कल्पना तक न करते हुए, जो उसकी उपस्थिति के कारण लेविन को हो रही थी, कीटी के साथ-साथ ही मेज़ से उठा और मुस्कराते तथा प्यार की नज़र से कीटी को देखते हुए उसके पीछे-पीछे चल दिया।

लेविन ने इस नज़र को देखा। उसके चेहरे का रंग उड़ गया और क्षण भर को उसके लिये सांस लेना मुश्किल हो गया। “मेरी बीवी को ऐसे देखने की वह कैसे जुर्रत कर रहा है!” लेविन गुस्से से उबल रहा था।

“तो कल चलेंगे न? कृपया चलिये,” वेस्लोव्स्की ने कुर्सी पर बैठते और आदत के मुताबिक़ फिर से एक टांग अपने नीचे दबाते हुए कहा।

लेविन का ईर्ष्या भाव और आगे चला गया। वह अब अपने को धोखा दिया हुआ ऐसा पति महसूस कर रहा था, जिसकी केवल इसलिये ज़रूरत थी कि वह बीवी और उसके प्रेमी को जीवन की सुख-सुविधायें और खुशियां मुहैया करे... किन्तु इस सबके बावजूद उसने बड़ी नम्रता और आतिथ्यपूर्ण ढंग से वेस्लोव्स्की से उसके शिकारों, बन्दूक और घुटनों तक के जूतों के बारे में पूछताछ की और अगले दिन शिकार को जाने के लिये राज़ी हो गया।

लेविन की खुशकिस्मती ही कहिये कि बूढ़ी प्रिंसेस ने खुद उठें और कीटी को सोने जाने की सलाह देते हुए उसकी यातना का अन्त कर दिया। किन्तु लेविन को फिर एक नयी व्यथा सहन करनी पड़ी गृह-स्वामिनी को शुभ रात्रि कहते समय वेस्लोव्स्की ने फिर से उसका हाथ चूमना चाहा, किन्तु कीटी ने लज्जारुण होते और भोली-भाल रूखाई दिखाते हुए, जिसके लिये उसे बाद में मां की डांट सहनी पड़ी अपना हाथ पीछे खींचकर कहा –

“हमारे यहां ऐसा नहीं किया जाता।”

लेविन की नज़र में वह इस चीज़ के लिये दोषी थी कि उसने इस तरह के सम्बन्धों की अनुमति दी और इससे भी ज्यादा उसका यह दोष था कि इतने अटपटे ढंग से उनके बारे में अपनी नापसन्दगी जाहिर की।

“क्या तुक है अभी से जाकर सोने में!” ओब्लोन्स्की ने भोजन के समय शराब के कई गिलास चढ़ाने और अपने सबसे मधुर तथा काव्यमय मूड में आने के बाद कहा। “कीटी, उधर देखो तो,” उसने लाइम वृक्षों के पीछे से ऊपर उठते चांद की ओर इशारा करते हुए कहा, “कितना सुन्दर है वह! वेस्लोव्स्की, यह है प्रेम-गीत गाने का समय! जानती हो, उसकी खासी सुरीली आवाज़ है। हम दोनों रास्ते में गाते आये हैं। वह अपने साथ बहुत बढ़िया प्रेम-गीत लाया है, दो नये हैं। वारेन्का के साथ गाये जायें, तो मज़ा रहे।”

सबके अपने-अपने कमरों में चले जाने के बाद ओब्लोन्स्की और वेस्लोव्स्की बहुत देर तक तरु-पथ पर टहलते रहे और नये प्रेम-गीत का अभ्यास करते हुए उनके स्वर सुनाई देते रहे।

इन आवाज़ों को सुनता और नाक-भौंह सिकोड़े हुए लेविन अपनी पत्नी के शयन-कक्ष में आरामकुर्सी पर बैठा था और पत्नी के बार-बार यह पूछने पर कि उसे क्या हुआ है, हठपूर्वक मौन साधे था। लेकिन आखिर जब उसने सहमी-सी मुस्कान के साथ पूछा – “तुम्हें वेस्लोव्स्की को लेकर क्या कोई बात अच्छी नहीं लगी?” तो लेविन फट पड़ा और उसने सब कुछ कह डाला। उसने जो कुछ कहा, उससे उसके दिल को और भी ठेस लगी और इसलिये उसे और भी खीझ आई।

लेविन चढ़ी हुई भौंहों के नीचे भयानक रूप से चमकती आंखों के साथ कीटी के सामने खड़ा था और अपने मजबूत हाथों को ऐसे छाती पर दबाये था मानो अपने को वश में रखने के लिये एड़ी-चोटी का जोर लगा रहा हो। उसके चेहरे का भाव कठोर, यहां तक कि क्रूर भी होता, यदि उसमें वेदना की झलक न होती, जिसने कीटी के मर्म को छू लिया। उसके जबड़े कांप रहे थे और आवाज़ टूट रही थी।

“तुम इतना तो समझ लो कि मैं ईर्ष्या नहीं करता हूं—यह बड़ा घिनौना शब्द है। मैं ईर्ष्या और यह विश्वास नहीं कर सकता कि... मैं जो अनुभव कर रहा हूं, उसे व्यक्त नहीं कर सकता, मगर यह भयानक चीज़ है... मैं ईर्ष्या नहीं करता, किन्तु मेरे दिल को ठेस लगी है, मैं इसलिये अपने को अपमानित अनुभव करता हूं कि कोई तुम्हारे बारे में कुछ ऐसा सोचने की जुर्रत कर सकता है, तुम्हें ऐसी नज़रों से देखने का साहस कर सकता है।”

“कैसी नज़रों से?” कीटी ने पूछा और उसने उस शाम के सभी शब्दों और संकेतों की सभी तफ़्सीलों को अधिकतम ईमानदारी से याद करने का प्रयास किया।

अपने दिल की गहराई में कीटी को महसूस हो रहा था कि जिस समय वेस्लोव्स्की उसके पीछे-पीछे मेज़ के दूसरे सिरे पर आया था, उस क्षण कोई ऐसी बात हुई थी। किन्तु वह इसे लेविन से कहने और इस तरह उसकी व्यथा बढ़ाने की तो बात दूर, खुद अपने लिये स्वीकार करने का साहस नहीं कर पा रही थी।

“जैसी मैं इस समय हूं, भला इस रूप में मुझमें क्या आकर्षण हो सकता है?”

“ओह!” लेविन सिर थामकर चिल्ला उठा। “काश, तुमने यह न कहा होता!... मतलब यह हुआ कि अगर तुम आकर्षक होतीं...”

“नहीं, कोस्त्या, नहीं, ज़रा रुको, मेरी बात सुनो!” सहानुभूतिपूर्ण व्यथा-भाव से पति की ओर देखते हुए कीटी ने कहा। “तुम भला सोच ही क्या सकते हो, जब मेरे लिये पुरुषों का अस्तित्व ही नहीं, बिल्कुल नहीं!... क्या तुम यह चाहते हो कि मैं किसी से मिलूं ही नहीं?”

शुरू में उसे उसकी ईर्ष्या से ठेस लगी, इस बात का गुस्सा आया

कि बहुत मामूली, बहुत ही भोले-भाले मन बहलाव की भी उसे मनाही थी। किन्तु अब उसने पति को उस यातना से बचाने के लिये, जो वह अनुभव कर रहा था, न केवल ऐसी छोटी-मोटी चीजें, बल्कि सभी कुछ कुर्बान कर दिया होता।

“तुम इस बात को समझो कि मेरी स्थिति कितनी भयानक और हास्यास्पद है,” लेविन हताशापूर्ण फुसफुसाहट से कहता गया, “कि वह मेरे घर में है, देखा जाये, तो उसने कोई खास बुरी बात भी नहीं की, सिवा इसके कि ऐसी बेतकल्लुफी दिखाई है और टांग को अपने नीचे दबाकर बैठा है। वह इसे सबसे अच्छा अन्दाज़ मानता है और इसलिये मुझे उसके साथ बहुत अच्छा सलूक करना चाहिये।”

“लेकिन कोस्त्या, तुम बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा रहे हो,” कीटी ने दिल की गहराई में प्यार की उस शक्ति से खुश होते हुए, जो अब उसकी ईर्ष्या में व्यक्त हुई, कहा।

“सबसे भयानक बात तो यह है कि तुम — जैसी तुम हमेशा मेरे लिये रही हो और जो अब इतनी पावन-पवित्र हो — कि जब हम इतने सुखी हैं, ऐसे विशेष रूप से सुखी हैं और अचानक कोई कूड़ा-करकट ... कूड़ा-करकट नहीं, मैं उसे क्यों कोस रहा हूँ? मुझे उससे कोई मतलब नहीं, लेकिन तुम्हारी और मेरी खुशी पर ऐसा आघात क्यों हो?...”

“सुनो, मैं जानती हूँ कि ऐसा क्यों हुआ है,” कीटी ने कहना शुरू किया।

“क्यों? ऐसा क्यों हुआ है?”

“मैंने देखा था कि जब हम खाने के वक्त बातचीत कर रहे थे, तुम हम लोगों की तरफ़ कैसे देख रहे थे।”

“हां, हां!” लेविन ने सहमते हुए कहा।

कीटी ने उसे बताया कि उनके बीच क्या बातचीत हुई थी। यह बताते हुए वह उत्तेजना से बेदम हो रही थी। लेविन चुप रहा, फिर उसने कीटी के पीले पड़े और सहमे हुए चेहरे को गौर से देखा और अचानक सिर थाम लिया।

“कात्या, मैंने तुम्हें परेशान कर डाला! मुझे क्षमा कर दो, मेरी प्यारी! यह पागलपन है! हर तरह से मैं ही दोषी हूँ। ऐसी बेवकूफी के लिये इतनी यातना सहने में भी कोई तुक थी?”

“नहीं, मुझे तुम पर तरस आ रहा है।”

“मुझ पर? मुझ पर? मैं, मैं तो बिल्कुल पागल हूँ! लेकिन मैंने तुम्हें क्यों व्यथा दी? यह सोचकर दिल कांप उठता है कि कोई अजनबी आदमी हमारे सुख को ऐसे नष्ट कर सकता है ...”

“हां, यही तो सबसे ज्यादा दुख की बात है ...”

“नहीं, तब तो मैं जान-बूझकर गर्मी भर के लिये उसे यहां पर रोक लूंगा और उसपर अनुग्रहों की बौछार करूंगा,” लेविन ने कीटी का हाथ चूमते हुए कहा। “तुम देख लोगी। कल ... हां, सच ... कल तो हम शिकार पर जा रहे हैं।”

(८)

अगले दिन महिलायें अभी जागी भी नहीं थीं कि शिकार की बगियां और गाड़ियां दरवाजे के सामने आ खड़ी हुईं। लास्का सुबह से ही यह समझकर कि आज शिकार के लिये जा रहे हैं, जी भर कर भौंकने और उछलने-कूदने के बाद गाड़ी में कोचवान के पास बैठी थी और उत्तेजना तथा देर करने के कारण नाखुश होती हुई उस दरवाजे की ओर देख रही थी, जहां से शिकारी अभी तक नहीं निकले थे। वेस्लोव्स्की सबसे पहले बाहर निकला। वह मोटी-मोटी जांघों के आधे हिस्से तक पहुंचते नये ऊंचे जूते और हरी क्रमीज़ पहने था, गंधवाले चमड़े की कारतूसों की नयी पेटी कसे था, फ्रीतोंवाली स्काटलैंडी टोपी रखे था और गलपट्टी के बिना अंग्रेज़ी बन्दूक हाथ में लिये था। लास्का लपककर उसके पास गयी, उछल-कूदकर उसका अभिवादन किया और अपने ढंग से यह पूछा कि बाक़ी लोग जल्दी बाहर आ जायेंगे या नहीं। किन्तु उससे कोई उत्तर न पाकर प्रतीक्षा करने की पहलेवाली जगह पर लौट आई और सिर टेढ़ा कर तथा एक कान ऊपर उठाकर निश्चल बैठ गयी। आखिर फटाक से दरवाज़ा खुला और ओब्लोन्स्की का पीली चित्तियोंवाला क्राक नाम का कुत्ता हवा में चक्कर खाता और उछलता-कूदता हुआ बाहर आया। मुंह में सिगार दबाये और हाथ में बन्दूक लिये खुद ओब्लोन्स्की भी निकल आया। “नीचे, नीचे क्राक!” वह अपने कुत्ते को प्यार से डांटते हुए शान्त कर रहा था, जो उसकी

छाती और पेट पर अपने पंजे टिका रहा था और उन्हें शिकार डालने के थैले में फंसा रहा था। ओब्लोन्स्की जुराबों की जगह खुरदरा-सा कपड़ा टांगों पर लपेटे था, घटिया-से जूते, फटा हुआ पतलून और कम लम्बा कोट पहने था। सिर पर कोई फटी-पुरानी-सी टोपी थी, किन्तु नये ढंग की बन्दूक बड़ी प्यारी थी और शिकार का थैला तथा कारतूसों की पेटी, ये दोनों चीजें इस्तेमाल में लायी जाने के बावजूद बहुत ही उच्च कोटि की थीं।

फटे हाल होना, मगर शिकार के श्रेष्ठतम साज-सामान रखना, वेस्लोव्स्की शिकारी के इस वास्तविक बांकपन को पहले नहीं समझता था। ओब्लोन्स्की को देखते हुए वह यह समझ गया। फटे-पुराने कपड़े पहने ओब्लोन्स्की की सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट और खुशी से छलछलाती रईसी आकृति खूब चमक रही थी। वेस्लोव्स्की ने तय किया कि अगले शिकार के वक्त वह भी ऐसा ही ठाठ बनायेगा।

“और हमारा मेज़बान?” उसने पूछा।

“उसकी जवान बीवी है,” ओब्लोन्स्की मुस्कराकर जवाब दिया।

“सो भी ऐसी सुन्दर।”

“वह कपड़े पहन चुका था। शायद फिर से उसके पास भाग गया है।”

ओब्लोन्स्की ने ठीक अनुमान लगाया था। लेविन यह जानने के लिये फिर से बीवी के पास भाग गया था कि पिछले दिन की बेवकूफी के लिये उसने उसे माफ़ कर दिया या नहीं। वह उससे यह भी अनुरोध करना चाहता था कि ईसा के नाम पर सावधानी बरते। सबसे बड़ी चीज़ तो यह थी कि बच्चों से दूर रहे—वे किसी क्षण भी धकिया सकते हैं। इसके अलावा वह उससे इस बात की एक बार फिर पुष्टि चाहता था कि उसके दो दिन के लिये जाने के कारण वह नाराज़ नहीं है तथा उससे यह प्रार्थना भी करना चाहता था कि कल सुबह घुड़सवार के हाथ उसे अवश्य ही रुक्का भिजवा दे, बेशक दो शब्द ही लिख भेजे, ताकि उसे पता चल जाये कि वह सही-सलामत है।

जैसा कि हमेशा होता था, कीटी के लिये पति से दो दिन अलग रहना आसान नहीं था, किन्तु उसकी उत्साहपूर्ण आकृति, जो शिकारियों के ऊँचे जूतों और सफ़ेद कमीज़ में बहुत बड़ी लग रही थी, तथा शिकारी

की उसकी समझ में न आनेवाली उत्तेजना देखकर वह उसकी खुशी के लिये अपनी उदासी भूल गयी और उसे खुशी-खुशी विदा किया।

“क्षमा चाहता हूं, महानुभावो!” उसने भागकर ओसारे में आते हुए कहा। “नाश्ता रख दिया गया? कत्थई घोड़े को दायें क्यों जोत दिया? खैर, कोई फ़र्क़ नहीं। लास्का, चलो, बैठो अपनी जगह पर!”

“बछियों के भुण्ड में छोड़ दो,” उसने पशु-पालक से कहा, जो बरामदे के पास खड़ा हुआ बधिया बैलों के बारे में लेविन का मत जानने के लिये प्रतीक्षा कर रहा था। “माफ़ी चाहता हूं, वह एक और पाजी चला आ रहा है।”

लेविन गाड़ी में से कूदकर, जहां बैठ चुका था, उस बढ़ई से बात करने चल दिया, जो हाथ में फ़ीता लिये ओसारे की ओर आ रहा था।

“कल दफ़्तर में नहीं आये और अब मुझे देर करवा रहे हो। तो बताओ?”

“अगर इजाजत दें, तो एक और मोड़ बना दूं। सिर्फ़ तीन पैड़ियां बढ़ानी होंगी। मामला बिल्कुल फ़िट हो जायेगा। ऐसा करना अच्छा रहेगा।”

“तुम्हें मेरी बात पर कान देना चाहिये था,” लेविन ने गुस्से से जवाब दिया। “मैंने कहा था तुमसे कि पहले बल्ली लगा लो और फिर पैड़ियां बनाना। अब उसे ठीक नहीं किया जा सकता। जैसा मैंने कहा है, वैसा ही करो, नया जीना बनाओ!”

क्रिस्सा यह था कि घर के नये बन रहे भाग में बढ़ई ने जीना खराब कर दिया था। उसने ऊंचाई को ध्यान में रखे बिना उसे अलग से बनाया था और वह जीना जब वहां टिकाया गया, तो सभी पैड़ियां ढालू हो गयीं। बढ़ई अब तीन पैड़ियां बढ़ाकर इसी जीने को बनाये रखना चाहता था।

“बहुत बढ़िया काम हो जायेगा।”

“तीन पैड़ियां बढ़ाने पर वह जीना कहां पहुंच जायेगा?”

“आप भी ग़ज़ब कर रहे हैं,” बढ़ई ने तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ कहा। “ठीक जगह पर पहुंच जायेगा। हम उसे नीचे से चालू करेंगे,” उसने विश्वास दिलाने का संकेत करते हुए कहा,

“ऊपर को बढ़ता जायेगा , बढ़ता जायेगा और ठीक जगह पर पहुंच जायेगा । ”

“तीन पैड़ियों से जीने की लम्बाई भी तो बढ़ जायेगी ... तो वह कहां पहुंचेगा ? ”

“नीचे से जैसे जायेगा , वैसे ही ऊपर पहुंच जायेगा , ” बढ़ई ने हठ करते हुए विश्वासपूर्वक कहा ।

“छत के करीब और दीवार में पहुंच जायेगा । ”

“नहीं , हुजूर । वह नीचे से जायेगा । बढ़ता जायेगा , बढ़ता जायेगा और ठीक जगह पर पहुंच जायेगा । ”

लेविन ने बन्दूक साफ़ करने की सिलाई लेकर धूल पर जीने का खाका बनाना शुरू किया ।

“देखते हो ? ”

“जैसा आपका हुक्म , ” बढ़ई ने कहा । उसकी आंखों में अचानक चमक आ गयी थी और वह अन्ततः बात को समझ गया था । “लगता है कि नया जीना बनाना ही पड़ेगा । ”

“तो ऐसे ही करो , जैसे कहा गया है , ” लेविन ने गाड़ी में बैठते हुए चिल्लाकर कहा । “चलाओ गाड़ी ! फ़िलीप , कुत्तों को थामे रखना । ”

परिवार और खेतीबारी की सभी भंभटें पीछे छोड़ने पर लेविन को अब जीवन और प्रत्याशा की ऐसी तीव्र सुखानुभूति हो रही थी कि उसका बोलने-बतियाने का मन नहीं हो रहा था । इसके अलावा वह संकेन्द्रित उत्तेजना का वह भाव भी अनुभव कर रहा था , जिसकी हर शिकारी को अपने कार्य-स्थल के निकट पहुंचने पर अनुभूति होती है । उसके दिमाग़ में अब सिर्फ़ यही सवाल चक्कर काट रहे थे कि कोल्पेन्स्की दलदल में उन्हें शिकार मिलेंगे या नहीं , क्राक के मुक़ाबले में लास्का कैसी रहेगी और खुद उसे आज शिकार करने में कितनी कामयाबी हासिल होगी । इस नये आदमी के सामने कहीं उसकी नाक न कट जाये ? कहीं ओब्लोन्स्की बाज़ी न मार ले ? — यह विचार भी उसके मस्तिष्क में आ रहा था ।

ओब्लोन्स्की को भी कुछ ऐसी ही भावनाओं की अनुभूति हो रही थी और वह भी मौन साधे था । सिर्फ़ वेस्लोव्स्की ही खुशी से चहकता

हुआ लगातार बोलता जा रहा था। इस समय उसकी बातें सुनते हुए लेविन को यह याद करके शर्म आ रही थी कि पिछले दिन वह उस मामले में कितना अधिक ग़लत था। वेस्लोव्स्की वास्तव में ही बहुत भला, सीधा-सादा, उदार और खुशमिज़ाज आदमी था। अगर शादी से पहले लेविन की उससे भेंट हो गयी होती, तो वे दोस्त बन गये होते। ज़िन्दगी के प्रति उसका ज़शन का सा रवैया और कुछ शान दिखाने का ढंग लेविन को थोड़ा खटकता था। अपने लम्बे नाखूनों, टोपी और दूसरी चीज़ों के कारण वह मानो अपने को निश्चित रूप से ही महत्त्वपूर्ण मानता था। लेकिन उसकी खुशमिज़ाजी और सलीकेदारी के लिये यह माफ़ किया जा सकता था। लेविन को वह अच्छी शिक्षा-दीक्षा, फ़्रांसीसी और अंग्रेज़ी भाषाओं की अच्छी जानकारी और इसलिये भी पसन्द था कि वह उसी के सामाजिक वातावरण का व्यक्ति था।

वेस्लोव्स्की को बायीं ओर जुता हुआ दोन स्तेपी का घोड़ा बेहद अच्छा लगा। वह उसकी प्रशंसा करते नहीं थकता था।

“ऐसे घोड़े पर सवार होकर स्तेपी में सरपट दौड़ाया जाये, तो कैसा मज़ा रहे! ठीक है न?” वह कहता रहा।

स्तेपी के घोड़े पर घुड़सवारी के मामले में वेस्लोव्स्की कुछ ऐसी ऊट-पटांग और काव्यमयी कल्पना कर रहा था, जो वास्तविकता से बिल्कुल दूर थी। किन्तु उसकी सुन्दरता, प्यारी मुस्कान और गति-विधि के सजीलेपन के साथ मिलकर उसका भोलापन विशेषतः बहुत प्यारा लग रहा था। इस कारण कि लेविन को उसका स्वभाव पसन्द था या इसलिये कि वह अपने पिछले दिन के बुरे रवैये का प्रायश्चित्त करने के लिये उसमें सब कुछ अच्छा ही अच्छा देखना चाहता था, उसे उसके साथ बहुत भला लग रहा था।

तीन वेर्स्ता का रास्ता तय हो जाने पर वेस्लोव्स्की को अचानक सिगारों और अपने बटुए का ध्यान आया। उसके लिये यह कहना मुमकिन नहीं था कि वह उन्हें खो बैठा है या मेज़ पर छोड़ आया है। बटुए में तीन सौ सत्तर रूबल थे और इसलिये उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी।

“लेविन, एक बात कहूं, मैं गाड़ी में जुते हुए दोन के इस घोड़े पर जल्दी से घर हो आता हूं। यह बहुत बढ़िया रहेगा। क्या ख्याल

है?" उसने गाड़ी से उतरने के लिये लगभग तैयार होते हुए कहा।

"नहीं, इसकी क्या ज़रूरत है?" लेविन ने यह हिसाब लगाते हुए कि वेस्लोव्स्की का कम से कम छः पूड\* वज़न होगा, कहा।  
"मैं कोचवान को भेज देता हूँ।"

कोचवान उस घोड़े पर सवार होकर चला गया और बाक़ी दो घोड़ों की लगामें लेविन ने खुद सम्भाल लीं।

## (६)

"तो हमारा रास्ता क्या होगा? अच्छी तरह से बताओ," ओब्लोन्स्की ने कहा।

"हमारी योजना यह है—अब हम ग्वोज़्देवो तक जा रहे हैं। ग्वोज़्देवो में इस ओर के दलदल में बड़े कुनाल हैं और उस ओर छोटे कुनालोंवाली बहुत बढ़िया दलदलें हैं और वहां बड़े कुनाल भी होते हैं। इस वक़्त गर्मी है और शाम होते तक हम वहां (बीस वेर्स्टा) पहुंच जायेंगे और शाम को भी कुछ शिकार कर लेंगे। रात वहां बितायेंगे और कल सुबह बड़ी दलदलों में शिकार को जायेंगे।"

"रास्ते में क्या कुछ भी नहीं है?"

"है तो, लेकिन हमें देर हो जायेगी और फिर गर्मी भी है। छोटी-छोटी दो अच्छी जगहें हैं, लेकिन वहां शायद ही कुछ मिले।"

लेविन खुद भी इन जगहों पर जाना चाहता था, किन्तु वे घर के नज़दीक थीं, वह हमेशा वहां जा सकता था। फिर ये जगहें बहुत छोटी भी थीं—तीन आदमी वहां शिकार नहीं कर सकते थे। इसीलिये वह यह कहकर टाल-मटोल कर रहा था कि वहां शायद ही कुछ मिलेगा। छोटी दलदल के सामने पहुंचने पर लेविन ने आगे निकल जाना चाहा, किन्तु ओब्लोन्स्की की शिकारी नज़र ने सड़क पर से ही दिखाई देनेवाली दलदली घास को फ़ौरन ताड़ लिया।

"यहां नहीं चलेंगे क्या?" दलदल की ओर इशारा करते हुए ओब्लोन्स्की ने पूछा।

---

\* लगभग एक सौ किलोग्राम। —सं०

“लेविन, कृपया चलिये! कितनी बढ़िया जगह है!” वेस्लोव्स्की मिन्नत करने लगा और लेविन इन्कार नहीं कर सका।

गाड़ी रुकी ही थी कि कुत्ते एक दूसरे को मात देते हुए तेजी से दलदल की ओर भाग चले।

“क्राक! लास्का!”

कुत्ते लौट आये।

“तीनों को वहां तंगी महसूस होगी, मैं यहां रहूंगा,” लेविन ने यह आशा करते हुए कहा कि वे छोटे कुनालों के सिवा, जो कुत्तों के कारण उड़ गये थे और दलदल के ऊपर चक्कर काटते हुए चीख-चिल्ला रहे थे, वहां और कुछ नहीं पायेंगे।

“नहीं! चलिये लेविन, सब साथ चलते हैं!” वेस्लोव्स्की ने ज़ोर दिया।

“नहीं, वहां जगह कम है। लास्का, वापस आओ! आप लोगों को दूसरे कुत्ते की तो ज़रूरत नहीं होगी न?”

लेविन गाड़ी के पास रह गया और ईर्ष्या से शिकारियों को जाते देखने लगा। उन्होंने पूरी दलदल का चक्कर लगाया। जंगली मुर्गी और छोटे कुनालों के सिवा, जिनमें से एक का वेस्लोव्स्की ने शिकार कर लिया, दलदल में और कुछ भी नहीं था।

“अब देख लिया न क्यों मैं इस दलदल के लिये रुकना नहीं चाहता था,” लेविन ने कहा, “सिर्फ़ वक्त ही बरबाद हुआ।”

“नहीं, फिर भी मज़ा रहा। आपने देखा था न?” वेस्लोव्स्की ने हाथों में बन्दूक और कुनाल लिये अटपटे ढंग से गाड़ी में चढ़ते हुए कहा। “कितना बढ़िया शिकार किया मैंने इसका! सच है न? जल्द ही हम असली जगह पर पहुंच जायेंगे या नहीं?”

अचानक घोड़े आगे को लपके, लेविन का सिर किसी की बन्दूक की नली से जा टकराया और गोली दगने की आवाज़ हुई। वास्तव में तो गोली सिर टकराने से पहले चली थी, मगर लेविन को इसके प्रतिकूल प्रतीत हुआ। बात यह थी कि एक खटका नीचे करते हुए वेस्लोव्स्की से दूसरा खटका दब गया था। गोली ज़मीन से जा टकरायी और किसी को कोई चोट नहीं आई। ओब्लोन्स्की ने सिर हिलाया और वेस्लोव्स्की की ओर देखते हुए भर्त्सना के साथ हंस दिया। किन्तु

लेविन की उसे भला-बुरा कहने की हिम्मत नहीं हुई। एक तो इसलिये कि हर प्रकार की भर्त्सना टल गये खतरे और उस गुमटे का परिणाम मानी जाती, जो लेविन के माथे पर उभर आया था, और दूसरे, वेस्लोव्स्की शुरू में बड़े भोलेपन से बहुत दुखी हुआ और फिर इन तीनों के लिये इस सामान्य खतरे पर खुशमिजाजी से और उन्हें भी प्रभावित करता हुआ ऐसे हंसा कि लेविन खुद भी हंसे बिना न रह सका।

जब वे दूसरी दलदल के पास पहुंचे, जो काफ़ी बड़ी थी और जहां बहुत समय लग सकता था, लेविन ने उनसे न जाने को कहा। किन्तु वेस्लोव्स्की ने उसे फिर से राज़ी कर लिया। दलदल चूँकि संकरी थी, इसलिये लेविन मेहमाननवाज़ मेज़बान के नाते फिर गाड़ी के पास ही रह गया।

दलदल के पास पहुंचते ही क्राक सीधा टीलों की ओर बढ़ चला। वेस्लोव्स्की कुत्ते के पीछे पहले भागा। ओब्लोन्स्की के निकट पहुंचने के पहले एक बड़ा कुनाल उड़ा। वेस्लोव्स्की का निशाना चूक गया और यह बड़ा कुनाल बिना कटे चरागाह में जा बैठा। यह कुनाल वेस्लोव्स्की के लिये छोड़ दिया गया। क्राक ने उसे फिर से ढूंढ़ लिया, रुक गया, वेस्लोव्स्की उसे गोली का निशाना बनाकर गाड़ी की ओर लौट गया।

“अब आप शिकार के लिये जाइये और मैं घोड़ों के पास रहूंगा,” उसने कहा।

शिकारी की ईर्ष्या लेविन पर हावी होने लगी थी। वेस्लोव्स्की को लगामें पकड़ाकर वह दलदल की ओर चल दिया।

लास्का, जो देर से दर्द भरे अन्दाज़ में इस बेइन्साफ़ी के लिये कूंकूँ करती रही थी, टीलों वाली उस जगह की ओर भाग चली, जो लेविन की जानी-पहचानी और भरोसे की जगह थी और जहां क्राक नहीं गया था।

“तुम इसे रोकते क्यों नहीं?” ओब्लोन्स्की चिल्लाया।

“वह शिकार को डरायेगी नहीं,” लेविन ने अपनी लास्का के लिये खुश होते और उसके पीछे-पीछे तेज़ क़दम बढ़ाते हुए कहा।

लास्का अपने परिचित टीलों के जितना अधिकाधिक निकट पहुंचती जाती थी, अपने खोज-कार्य में वह उतनी ही अधिक गम्भीर होती जा रही थी। छोटे-से दलदली परिन्दे ने केवल क्षण भर को ही उसका

ध्यान गड़बड़ किया। उसने टीलों के सामने एक चक्कर लगाया, दूसरा शुरू किया और अचानक कांपकर वहीं रुक गयी।

“आओ, इधर आओ स्तीवा!” लेविन ने यह महसूस करते हुए कि उसका दिल कैसे जोर से धड़कने लगा है, पुकारकर कहा। अचानक उसकी तनावपूर्ण श्रवण-शक्ति पर से मानो कोई पर्दा हट गया, दूरी की सभी सीमाओं से मुक्त होकर सारी आवाजें गड़मड़ होने, किन्तु साफ़ तौर पर सुनाई देने लगीं। उसे ओब्लोत्स्की के पैरों की आहट सुनाई दी, जिसे उसने दूर से आती घोड़ों की टापों की आवाज़ समझा, टीले के एक सिरे पर पांव पड़ने से, जड़ों सहित घास के उखड़ने और उसके टूटने की आवाज़ को उसने बड़े कुनाल के पंखों की सरसराहट समझा। अपने निकट ही उसे पानी की छपछपाहट भी सुनाई दी, जिसे वह समझ नहीं पाया।

सावधानी से पांव रखता हुआ वह कुत्ते की ओर बढ़ा।

“भपट लो!”

लास्का के पास से बड़ा कुनाल नहीं, बल्कि छोटा कुनाल ऊपर को उड़ा। लेविन ने बन्दूक सीधी की, किन्तु उसी समय, जब वह निशाना साध रहा था, पानी की छपछपाहट की वही आवाज़ तेज़ हो गयी, निकट आ गयी और अजीब ढंग से कुछ ऊंचा चिल्लाते हुए वेस्लोव्स्की की आवाज़ इसके साथ मिल गयी। लेविन ने देखा कि वह ढंग से निशाना नहीं साध रहा है, फिर भी उसने गोली चला दी।

यह विश्वास हो जाने पर कि निशाना चूक गया है, लेविन ने मुड़कर देखा, तो पाया कि घोड़े और बग़्घी सड़क पर नहीं, बल्कि दलदल में पहुंचे हुए हैं।

वेस्लोव्स्की निशानेबाज़ी देखने के लिये बग़्घी को दलदल में बढ़ा लाया और घोड़ों को उसमें फंसा दिया।

“इस शैतान को यह क्या सूझी!” दलदल में फंसी बग़्घी की ओर जाते हुए लेविन ने मन ही मन कहा। “आप बग़्घी को यहां क्यों ले आये?” लेविन ने रुखाई से कहा और कोचवान को पुकारकर घोड़ों को दलदल से निकालने के काम में जुट गया।

लेविन को इसलिये बुरा लग रहा था कि उसका निशाना गड़बड़ करवा दिया गया था, उसके घोड़े दलदल में फंसा दिये गये थे और

मुख्यतः तो इस कारण उसे गुस्सा आ रहा था कि घोड़ों को दलदल में से निकालने के लिये उन्हें खोलना ज़रूरी था और इस काम में न तो ओब्लोन्स्की और न वेस्लोव्स्की ही उसका या कोचवान का हाथ बंटा रहा था, क्योंकि दोनों में से किसी को भी इस चीज़ की रत्ती भर जानकारी नहीं थी कि घोड़े को जोता या खोला कैसे जाता है। वेस्लोव्स्की द्वारा यह विश्वास दिलाये जाने पर कि यहां बिल्कुल सूखी जगह थी, लेविन ने उत्तर में एक भी शब्द नहीं कहा और चुपचाप घोड़ों को दलदल से निकालने के काम में लगा रहा। किन्तु बाद को काम में पूरी तरह डूब जाने और यह देखने पर कि वेस्लोव्स्की कितने यत्न से तथा जोर लगाते हुए मडगार्ड से पकड़कर बग्घी को पीछे खींच रहा है, यहां तक कि उसने मडगार्ड को तोड़ भी डाला था, तो लेविन ने अपने को इसलिये भला-बुरा कहा कि पिछले दिन की भावना के प्रभाव के कारण वह उसके साथ बहुत रुखाई से पेश आया था और उसने विशेष अपनापन दिखाकर इस रूखे व्यवहार की कटुता को दूर करने की कोशिश की। जब सब कुछ ठीक-ठाक हो गया और बग्घी सड़क पर पहुंचा दी गयी, तो लेविन ने नाश्ता निकालने का आदेश दिया।

“Bon appétit—bonne conscience! Ce poulet va tomber jusqu’au fond de mes bottes,\*” फिर से रंग में आते और दूसरा चूज़ा खत्म करते हुए वेस्लोव्स्की ने फ़्रांसीसी कहावत कही। “अब हमारी मुसीबतों का अन्त हो गया और सब कुछ अच्छे ढंग से होगा। किन्तु मुझे अपने अपराध के लिये बाक्स पर बैठना चाहिये। ठीक है न? क्यों? नहीं, नहीं, मैं आटोमेडान\*\* हूं। देखियेगा कि मैं कैसे आपको पहुंचाता हूं!” उसने लेविन के अनुरोध करने पर कि वह कोचवान को बाक्स पर बैठने दे, लगामें देने से इन्कार करते हुए कहा। “नहीं, मुझे अपने अपराध का प्रायश्चित्त करना चाहिये और यहां बाक्स पर मैं खूब मजे में हूं।” और उसने बग्घी आगे बढ़ा दी।

लेविन को इस बात का थोड़ा-सा डर था कि वह घोड़ों को,

---

\* अच्छी भूख का मतलब आत्मा साफ़ है। यह चूज़ा मेरी आत्मा की गहराई तक पहुंच रहा है। (फ़्रांसीसी)

\*\* होमर के महाकाव्य में कोचवान से अभिप्राय। — सं०

खास तौर से बायीं ओर के कत्थाई घोड़े को, परेशान कर डालेगा, जिसे काबू में रखना नहीं जानता था। किन्तु लेविन अनचाहे ही वेस्लो-व्स्की की खुशी के प्रभाव में आ गया, उन प्रेम-गीतों या क्रिस्से-कहानियों को सुनता रहा, जो वह बाक्स पर बैठा सुनाता या यह दिखाता जा रहा था कि अंग्रेजी ढंग से कैसे four in hand\* को सम्भाला जाये। इस तरह नाश्ते के बाद ये सभी हंसी-खुशी के मूड में ग्वोज़देवो दलदल पहुंच गये।

( १० )

वेस्लोव्स्की ने इतनी तेज़ी से घोड़ों को हांका कि वे अनुमानित समय से बहुत पहले, जबकि अभी गर्मी थी, दलदल में पहुंच गये।

अपनी इस यात्रा के मुख्य लक्ष्य यानी असली दलदल में पहुंचकर लेविन बरबस यह सोचने लगा कि वह वेस्लोव्स्की से कैसे अपना पिंड छुड़ाये और आज़ादी से घूमे। ओब्लोन्स्की भी स्पष्टतः यही सोच रहा था और उसके चेहरे पर लेविन को वह चिन्ता दिखाई दे रही थी, जो शिकार शुरू होने के पहले हमेशा असली शिकारी के चेहरे पर होती है, और खुशमिज़ाजी लिये वह चालाकी भी नज़र आ रही थी, जो ओब्लोन्स्की का विशेष लक्षण थी।

“तो हम कैसे जायेंगे? दलदल बहुत बढ़िया है, यहां बाज़ भी नज़र आ रहे हैं,” ओब्लोन्स्की ने नरकटों के ऊपर आसमान में चक्कर काटते दो बड़े-बड़े परिन्दों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। “जहां बाज़ हैं, वहां सम्भवतः शिकार भी हैं।”

“तो आप महानुभाव देख रहे हैं न,” लेविन ने अपने घुटनों तक के जूतों को ऊपर की ओर खींचते और बन्दूक की कारतूसी टोपियों का निरीक्षण करते हुए तनिक उदासी से कहा। “उन सरकंडों को देख रहे हैं न?” उसने नदी के दायीं ओर फैले बहुत बड़े, अध-कटे और भीगे हुए चरागाह में गहरे हरे रंग के छोटे-से द्वीप की ओर संकेत किया। “दलदल यहां से, बिल्कुल हमारे सामने से, देखते हैं, जहां अधिक हरियाली है, शुरू होती है। यहां से वह दायें को जाती है,

---

\* चार घोड़ों। ( अंग्रेज़ी )

जहां घोड़े घूम रहे हैं। वहां टीले हैं, बड़े कुनाल होते हैं और उस द्वीप के गिर्द एल्डर वृक्षों के कुंज तथा चक्की तक। वहां, देखते हैं, जहां छोटी धारा है। वह सबसे अच्छी जगह है। वहां मैंने एक बार सत्रह कुनाल मारे थे। हम दो कुत्तों के साथ अलग-अलग दिशाओं में जायेंगे और चक्की के पास जाकर एकसाथ हो जायेंगे।”

“तो कौन दायें और कौन बायें जायेगा?” ओब्लोन्स्की ने पूछा। “दायें अधिक चौड़ी जगह है, वहां आप दोनों जायें और मैं बायें जाता हूं,” उसने मानो यों ही लापरवाही से कहा।

“बहुत अच्छी बात है! हम इससे बाज़ी मार लेंगे। आइये चलें, आइये चलें!” वेस्लोव्स्की ने कहना शुरू किया।

लेविन के लिये सहमत होने के सिवा कोई चारा नहीं था और वे इस तरह से बंट गये।

दलदल में दाखिल होते ही दोनों कुत्ते एकसाथ शिकार ढूँढ़ने और गेरुई-सी भलक लिये पंकिल जल की ओर बढ़ चले। लेविन अपनी लास्का के शिकार ढूँढ़ने के इस सावधानीपूर्ण और अनिश्चित ढंग से परिचित था, वह सही जगह भी जानता था और वहां उसे कुनालों का एक भुण्ड पाने की आशा थी।

“वेस्लोव्स्की, मेरे निकट, निकट रहिये!” उसने दबी-दबी आवाज़ में अपने पीछे छप-छप करते आ रहे साथी से कहा। कोल्पेन्स्की दलदल में भूल से चल जानेवाली उसकी गोली के बाद लेविन बरबस ही इस ओर ध्यान देता था कि उसकी बन्दूक का मुंह किधर है।

“नहीं, मैं आपके लिये बाधा नहीं बनना चाहता। आप मेरे बारे में नहीं सोचिये।”

किन्तु लेविन अनचाहे ही उसके बारे में सोचता था और उसे विदा लेते समय कीटी द्वारा कहे गये ये शब्द याद हो आये—“ध्यान से शिकार करना, कहीं एक-दूसरे पर गोली मत चलाना”। कुत्ते एक-दूसरे से परे रहते और अपनी-अपनी खोज का अनुकरण करते हुए अधिकाधिक निकट आते जा रहे थे। कुनालों की इतनी तीव्र प्रतीक्षा थी कि गेरुए रंग के कीचड़ में से एड़ी को बाहर निकालने पर पैदा होनेवाली आवाज़ लेविन को कुनाल की चहक लगती थी और वह अपनी बन्दूक के दस्ते को कसकर थाम लेता था।

“ ठांय ! ठांय ! ” लेविन के कान के ऊपर गोली चलने की आवाज़ गूँज उठी। यह वेस्लोव्स्की ने बत्तखों के एक भुण्ड पर, जो इस समय दलदल के ऊपर, किन्तु शिकारियों के निशाने की पहुंच से दूर उड़ रहा था, गोलियां चलाई थीं। लेविन मुड़कर देख भी नहीं पाया था कि एक कुनाल चीखता हुआ उड़ा, उसके बाद दूसरा, तीसरा और एक के बाद एक आठ अन्य कुनाल उड़ चले।

ओब्लोन्स्की ने एक कुनाल को उसी समय मार गिराया, जब वह अपनी टेढ़ी-मेढ़ी उड़ान शुरू ही करनेवाला था और वह गोले की भांति दलदल में जा गिरा। ओब्लोन्स्की ने सरकंडों के निकट कम ऊंचाई पर उड़ते एक अन्य कुनाल का इतमीनान से निशाना साधा और गोली छूटने की आवाज़ के साथ यह कुनाल भी नीचे गिर गया और यह साफ़ नज़र आ रहा था कि वह कैसे अपना सही-सलामत पंख, जो नीचे से सफ़ेद था, फड़फड़ाता हुआ सरकंडों के बीच से बाहर आ रहा था।

लेविन की किस्मत ने उसका ऐसे साथ नहीं दिया। उसने पहले कुनाल पर बहुत ही नज़दीक से गोली चलाई और उसका निशाना चूक गया। जब वह ऊपर उठने लगा, तो फिर निशाना साधा, किन्तु इसी समय पैरों के पास से एक और कुनाल उड़ा, जिसने उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया और दूसरी बार उसका निशाना चूक गया।

जब तक इन्होंने अपनी बन्दूकों में गोलियां भरीं, एक और कुनाल उड़ा और वेस्लोव्स्की ने, जो दूसरी बार बन्दूक भर चुका था, पानी में दो बार छरें चला दिये। ओब्लोन्स्की ने अपने कुनाल उठा लिये और खुशी से चमकती आंखों से लेविन की तरफ़ देखा।

“ तो अब हम अलग होते हैं, ” ओब्लोन्स्की ने कहा और बायें पैर से कुछ लंगड़ाता, बन्दूक को किसी भी समय चलाने की तैयार स्थिति में रखता और कुत्ते को सीटी बजाकर बुलाता हुआ एक तरफ़ को चल दिया। लेविन और वेस्लोव्स्की दूसरी दिशा में चल दिये।

लेविन के साथ हमेशा ऐसा होता था कि जब उसके पहले निशाने चूक जाते थे, तो वह उत्तेजित हो उठता था, गुस्से में आ जाता था और दिन भर ऐसे बुरे ढंग से ही गोलियां चलाता था। आज भी ऐसा ही हुआ। कुनाल तो बहुत अधिक थे। कुत्तों के पास से, शिकारियों के पैरों के नज़दीक से कुनाल लगातार उड़ रहे थे और लेविन अपनी स्थिति

को सम्भाल सकता था। किन्तु वह जितनी अधिक गोलियां चलाता था, उतना ही अधिक अपने को वेस्लोव्स्की की नज़र में नीचे गिराता जाता था, जो बड़े रंग-तरंग में निशाने पर या निशाने के बिना गोलियां चलाता जाता था, निशाने खाली जाते थे और इससे उसे तनिक भी भेंप नहीं होती थी। लेविन उतावली करता था, अपने को वश में नहीं रख पाता था, अधिकाधिक उत्तेजित होता हुआ उस स्थिति तक पहुंच गया था कि गोली चलाते समय इस बात की आशा नहीं करता था कि वह शिकार को मार गिरायेगा। लगता था कि लास्का भी यह समझ रही थी। वह कुनालों को खोजने में काहिली दिखाने लगी और शिकारियों को हैरानी और तिरस्कार की नज़र से देखती थी। एक के बाद एक गोली छूटती थी। शिकारियों के चारों ओर बारूद का धुआं फैला था, मगर शिकार डालने के बड़े, चौड़े थैले में केवल तीन छोटे-छोटे और हल्के-हल्के कुनाल थे। इनमें से एक वेस्लोव्स्की द्वारा मारा गया था और एक साभा शिकार था। इसी समय दलदल के दूसरी ओर से अक्सर नहीं, किन्तु जैसा कि लेविन को प्रतीत हुआ, ओब्लोन्स्की की अर्धपूर्ण गोलियां छूटने की आवाज़ सुनाई देती थी और लगभग हर गोली के बाद यह भी सुनाई देती — “क्राक, क्राक, उठा लाओ!”

लेविन इससे और भी अधिक उत्तेजित हो जाता। कुनाल तो सरकंडों के ऊपर लगातार चक्कर काट रहे थे। सभी ओर से धरती पर कुनालों की चहक और हवा में उनकी आवाज़ें लगातार सुनाई दे रही थीं। पहले से उड़ाये गये और हवा में चक्कर काटनेवाले कुनाल अब शिकारियों के सामने नीचे बैठे थे। अब दो के बजाय दसियों चीखते हुए बाज़ दलदल के ऊपर उड़ रहे थे।

दलदल का आधा, बड़ा भाग लांघने के बाद लेविन और वेस्लोव्स्की उस जगह तक जा पहुंचे, जहां से सरकंडों से जा मिलनेवाली किसानों की चरागाहें लम्बी पट्टियों के रूप में शुरू होती थीं। पट्टियों को बांटने के लिये कहीं तो घास की रौंदी हुई पट्टियों और कहीं कटी घास की क़तार के रूप में निशान बना दिये गये थे। इन पट्टियों में से आधी की घास काटी जा चुकी थी।

यद्यपि चरागाह के घास-कटे भाग की तुलना में घासवाले भाग में

उतने ही अधिक पक्षियों के मिलने की आशा नहीं की जा सकती थी, तथापि ओब्लोन्स्की से मिल जाने का अपना वचन पूरा करने के लिये लेविन अपने साथी के साथ कटी और अनकटी पट्टियों पर आगे बढ़ने लगा।

“ऐ शिकारियो!” घोड़ा-गाड़ी, जिसका घोड़ा खोल दिया गया था, के पास बैठे किसानों में से एक ने चिल्लाकर कहा। “आओ, हमार साथ कुछ खावो! दारू पीवो!”

लेविन ने मुड़कर देखा।

“अरे आव भैया, आव!” लाल चेहरे वाला एक दढ़ियल, खुशमिजाज किसान सफ़ेद दांतों की झलक देता और धूप में चमकती हुई हरी-सी बोटल दिखा कर चिल्ला उठा।

“Qu'est ce qu'ils disent? \* वेस्लोव्स्की ने पूछा।

“वोदका पीने को बुलाते हैं। शायद इन्होंने चरागाह का बंटवारा किया है। मैंने तो पी ली होती,” लेविन ने चालाकी से काम लेते और यह आशा करते हुए कहा कि वेस्लोव्स्की वोदका के फेर में पड़कर किसानों के पास चला जायेगा।

“वे किसलिये पिला रहे हैं?”

“ऐसे ही, खुश होने के लिये। सच, चले जाइये उनके पास। आपके लिये दिलचस्प होगा।”

“Allons, c'est curieux.\*\*”

“जाइये, जाइये, चक्की का रास्ता तो आपको मिल ही जायेगा!” लेविन ने पुकारकर कहा और मुड़कर देखने पर उसे खुशी हुई कि भुका हुआ, थकी टांगों से ठोकरें खाता और सामने फैले हाथ में बन्दूक थामे वेस्लोव्स्की दलदल को लांघकर किसानों की तरफ़ जा रहा था।

“तुम भी आय जावो!” किसान ने लेविन को आवाज़ दी। “काहे घबरात है! जरा कचौड़ी चख लेनो!”

लेविन का वोदका पीने और रोटी का टुकड़ा खा लेने को बहुत मन हो रहा था। वह बुरी तरह थक गया था और महसूस करता

---

\* ये क्या कह रहे हैं? ( फ़्रांसीसी )

\*\* आइये चलें, यह तो जिज्ञासा की चीज़ है। ( फ़्रांसीसी )

था कि रुके जाते पैरों को दलदल में से ज़बर्दस्ती घसीट रहा है। क्षण भर को उसका मन दुविधा में पड़ गया। किन्तु इसी समय लास्का रुक गयी। आन की आन में उसकी थकावट हवा हो गयी और वह फुर्ती से कीचड़ में पांव बढ़ाता हुआ लास्का के पास पहुंचा। उसके अपने पैरों के पास कुनाल उड़ा, लेविन ने गोली चलाई और उसे मार डाला। लास्का वहीं खड़ी रही। “मारो!” लास्का के करीब से एक अन्य कुनाल उड़ा। लेविन ने गोली दागी। किन्तु यह उसके लिये बुरा दिन था—निशाना चूक गया। जब वह मारे गये कुनाल को ढूंढ़ने गया, तो वह भी नहीं मिला। उसने सारे सरकंडों को छान मारा, किन्तु लास्का यह मानती ही नहीं थी कि उसने पक्षी को मार गिराया है और इसलिये जब वह उसे खोजने के लिये भेजता, तो वह ढूंढ़ने का ढोंग करती, मगर खोजती नहीं।

वेस्लोव्स्की के बिना भी, जिसे लेविन अपनी असफलता के लिये दोषी ठहराता था, स्थिति बेहतर नहीं हुई। कुनाल तो यहां भी बहुत थे, मगर लेविन का एक के बाद एक निशाना चूकता जाता था।

सूरज की टेढ़ी किरणें अभी भी काफ़ी गर्म थीं, पसीने से बिल्कुल तर उसके कपड़े तन से चिपकते जाते थे, पानी से भरा हुआ बायां जूता भारी था और फच्च-फच्च करता था, बारूद की धूल से गन्दे हुए चेहरे से पसीने की बूंदें चू रही थीं, मुंह का ज़ायका कसैला था, नाक में बारूद और ठहरे पानी की बू घुसी हुई थी, कानों में लगातार कुनालों की चहक गूंज रही थी, बन्दूक की नलियां इतनी गर्म थीं कि छूना असम्भव था, दिल की धड़कन तेज़ और संक्षिप्त थी, हाथ उत्तेजना से कांप रहे थे और थके हुए पांव टीलों से ठोकरें खाते और दलदल में जमे जाते थे। किन्तु लेविन चलता ही जा रहा था, गोलियां चलाता ही जा रहा था। आखिर एक लज्जाजनक निशाना चूकने पर उसने अपनी बन्दूक और टोपी ज़मीन पर फेंक दी।

“नहीं, मुझे होश में आना चाहिये,” उसने अपने आपसे कहा। लेविन ने बन्दूक और टोपी उठाई, लास्का को अपने पास बुलाया और दलदल से बाहर चला गया। सूखी ज़मीन पर जाकर वह टीले पर बैठ गया, उसने अपने जूते उतारे, एक जूते में से पानी निकाला, इसके बाद दलदल के करीब गया, जंग के ज़ायकेवाला पानी पिया,

बेहद गर्म हुई नलियों को भिगोकर ठण्डा किया और अपना मुंह-हाथ धोया। ताज़ादम होकर तथा उत्तेजित न होने का पक्का इरादा करके वह उसी जगह की ओर चल दिया, जहां एक कुनाल जा बैठा था।

उसने शान्त रहना चाहा, मगर बात पहले जैसी ही हुई। पक्षी का निशाना साधने के पहले ही उसकी उंगली ने बन्दूक का घोड़ा दबा दिया। मामला अधिकाधिक बिगड़ता ही चला जा रहा था।

जब वह दलदल से निकलकर एल्डर वृक्षों के कुंज की ओर चला, जहां उसे ओब्लोन्स्की से मिलना था, तो उसके थैले में केवल पांच कुनाल थे।

ओब्लोन्स्की को देखने के पहले उसे उसका कुत्ता दिखाई दिया। दलदल के बदबूदार कीचड़ से पूरी तरह काला हुआ क्राक एल्डर वृक्ष की एक टेढ़ी-तिरछी जड़ के नीचे से उछलकर सामने आया और उसने विजेता के अंदाज़ में लास्का को सूँघा। क्राक के पीछे एल्डर वृक्ष की छाया में ओब्लोन्स्की की सुघड़ आकृति दिखाई दी। लाल चेहरा, पसीने से तर, कालर का बटन खुला हुआ और पहले की तरह थोड़ा लंगड़ाता हुआ वह सामने से चला आ रहा था।

“तो शिकार कैसा रहा? आप लोगों ने धमाके तो बहुत किये!” उसने खुशमिज़ाजी से मुस्कराते हुए कहा।

“और तुम्हारा?” लेविन ने पूछा। किन्तु पूछने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि उसे उसका भरा हुआ थैला दिखाई दे रहा था।

“बुरा नहीं रहा।”

उसने चौदह पक्षी मारे थे।

“बहुत अच्छी दलदल है! ज़रूर वेस्लोव्स्की तुम्हारे आड़े आता रहा होगा। दो को एक कुत्ते की मदद से शिकार करने में तकलीफ़ होती है,” ओब्लोन्स्की ने अपनी विजय के रंग को तनिक हल्का करते हुए कहा।

(११)

ओब्लोन्स्की के साथ लेविन जब उस किसान के भोंपड़े में आया, जहां हमेशा ठहरता था, तो वेस्लोव्स्की वहां पहले से ही मौजूद था।

वह भोंपड़े के बीचोंबीच बैठा था और दोनों हाथों से एक बेंच को थामे था, जबकि एक फ़ौजी, घर की मालकिन का भाई, कीचड़ से लथपथ उसके घुटनों तक के जूते उतार रहा था और वेस्लोव्स्की ऐसी खुशमिजाजी से हंस रहा था, जिससे दूसरों को भी बरबस हंसी आ जाती थी।

“मैं अभी-अभी आया हूँ। Ils ont été charmants.\* आप कल्पना करें, उन्होंने मुझे खिलाया, पिलाया। क्या ग़ज़ब की रोटी थी! Délicieux!\*\*और वोदका – इससे ज़्यादा मज़ेदार तो मैंने कभी पी ही नहीं! और किसी भी हालत में पैसे लेने को तैयार नहीं हुए। लगातार यही कहते रहे – ‘बुरो नहीं मानत, सरकार’।”

“पैसे काहे को? मतलब, आपकी सेवा की। आप क्या सोचत, वे वोदका बेचत?” फ़ौजी ने आखिर भीगे जूते के साथ कीचड़ से काली हुई जुराब उतारते हुए कहा।

शिकारियों के जूतों और अपने को चाटकर साफ़ करते हुए गन्दे कुत्तों द्वारा लाये गये कीचड़ और गन्दगी, दलदल तथा बारूद की गन्ध, जो भोंपड़े में बस गयी थी, और छुरियों-कांटों की अनुपस्थिति के बावजूद शिकारियों ने ऐसे मजे से चाय पी और खाना खाया, जैसा कि शिकार के वक़्त ही होता है। नहा-धोकर और साफ़-सुथरे होकर वे सूखी घास वाले भाड़े-बुहारे सायबान में चले गये, जहाँ कोचवानों ने इन महानुभावों के लिये बिस्तर तैयार कर दिये थे।

बेशक भुटपुटा हो रहा था, फिर भी शिकारियों में से किसी का भी सोने को मन नहीं हो रहा था।

निशानेबाज़ी, कुत्तों और पहले के शिकारों के बारे में संस्मरणों और क्रिस्सों की चर्चा होने के बाद सभी की दिलचस्पी की बातचीत शुरू हो गयी। वेस्लोव्स्की के मुँह से इस रात्रि-विश्राम और सूखी घास की सुगन्ध, टूटी घोड़ा-गाड़ी के बांकपन (वह उसे इस कारण टूटी हुई लग रही थी कि उसके बम उतार लिये गये थे), उसे वोदका पिलानेवाले खुशमिजाज किसानों और अपने-अपने स्वामी के पैरों के पास लेटे हुए कुत्तों का अनेक बार बड़ा उत्साहपूर्ण बखान सुनने के

---

\* कमाल के हैं ये लोग। (फ़्रांसीसी)

\*\* बेहद मज़ेदार! (फ़्रांसीसी)

बाद ओब्लोन्स्की ने किसी माल्थस के यहां पिछली गर्मी में किये गये शिकार के मजे का वर्णन किया। माल्थस रेलवे से सम्बन्धित एक प्रसिद्ध धनी था। ओब्लोन्स्की ने बताया कि त्वेर गुबेर्निया में इस माल्थस द्वारा खरीदी हुई कैसी बढ़िया दलदलें थीं, कैसे वह उनकी सार-सम्भाल करता था, कैसी बग्घियों और गाड़ियों में शिकारियों को शिकार की जगहों पर पहुंचाया गया और दलदल के पास कैसा तम्बू लगाया गया तथा उसमें कैसा नाश्ता दिया गया।

“मैं तुम्हें समझने में असमर्थ हूं,” लेविन ने घास के अपने बिस्तर पर कोहनियों के सहारे उचकते हुए कहा, “तुम्हें क्या ऐसे लोगों से नफ़रत नहीं होती? यह मैं समझता हूं कि लाफ़ीत के साथ नाश्ता करना बहुत मजे की बात है, पर क्या तुम्हें इस तरह की अय्याशी अखरती नहीं? ये सभी लोग हमारे पुराने ठेकेदारों की तरह ऐसा पैसा बटोरते हैं कि आम लोग उनसे नफ़रत करते हैं। वे इस नफ़रत की परवाह नहीं करते और बेईमानी से जमा किये गये धन से उस नफ़रत से मुक्ति पाते हैं।”

“बिल्कुल ठीक है!” वेस्लोव्स्की ने राय जाहिर की। “सोलह आने सही! जाहिर है कि ओब्लोन्स्की तो *bonhomie*\* से ऐसा करता है, लेकिन दूसरे यह कहते हैं—ओब्लोन्स्की तो उनके यहां जाता है।”

“कतई ऐसी बात नहीं है,” ओब्लोन्स्की ने कहा और लेविन को लगा मानो ऐसा कहता हुआ वह मुस्करा रहा था, “मैं उसे धनी व्यापारियों और कुलीनों से ज्यादा बेईमान नहीं मानता हूं। इन सभी लोगों ने मेहनत और अक्ल से पैसा कमाया है।”

“हां, लेकिन कैसी मेहनत से? क्या यह मेहनत है कि किसी चीज़ का ठेका ले लिया जाये और फिर उससे नफ़ा हासिल किया जाये?”

“बेशक मेहनत है। इस मानी में मेहनत है कि अगर वह या उसके जैसे दूसरे लोग न होते, तो रेलवे लाइनें न बनतीं।”

“लेकिन यह किसी किसान या विद्वान जैसी तो मेहनत नहीं।”

“मान लेते हैं, लेकिन इस मानी में मेहनत है कि उसके काम

---

\* सहृदयता। ( फ़्रांसीसी )

का एक नतीजा सामने आता है—रेलवे लाइन बनती है। मगर तुम तो रेलवे लाइनों को बेकार की चीज़ मानते हो।”

“नहीं, यह दूसरी बात है। मैं यह मानने को तैयार हूँ कि वे उपयोगी हैं। किन्तु किसी भी श्रम के अनुरूप न प्राप्त किया जानेवाला लाभ बेईमानी है।”

“मगर यह अनुरूपता कौन तय करेगा?”

“बेईमानी और चालाकी से प्राप्त धन,” लेविन ने यह अनुभव करते हुए कि वह ईमानदारी और बेईमानी के बीच स्पष्ट अन्तर नहीं कर सकता, कहा, “जैसे कि बैंकों के नफ़े,” वह कहता गया। “मेहनत किये बिना बड़ी दौलत हासिल करना गुनाह है, जैसा कि ठेकों के मामले में होता था। सिर्फ़ शक्ल बदल गयी। *Le roi est mort, vive le roi!*\* अभी-अभी ठेकों को ख़त्म किया गया था और अब रेलवे लाइनें और बैंक सामने आ गये—ये भी मेहनत के बिना नफ़े कमाते हैं।”

“हां, यह सब शायद सच और बड़ी समझदारी की बात हो... क्राक, लेट जाओ!” ओब्लोन्स्की ने तन खुजलाते और सारी सूखी घास को उलट-पलट करते कुत्ते को डांटा। उसे स्पष्टतः अपने दृष्टिकोण की न्यायसंगतता के बारे में विश्वास था और इसलिये वह शान्त था तथा बड़े इतमीनान से बात कर रहा था। “लेकिन तुमने ईमानदारी और बेईमानी की मेहनत का फ़र्क़ साफ़ नहीं किया। अपने हेड क्लर्क के मुक़ाबले में मैं ज़्यादा तनख़्वाह पाता हूँ, गो वह मुझसे बेहतर काम जानता है—तुम्हारे ख़्याल में यह बेईमानी है?”

“मैं नहीं जानता।”

“तो मैं तुम्हें बताता हूँ—मान लो, खेतीबारी के धन्धे में तुम अगर पांच हज़ार का नफ़ा पाते हो और हमारा मेज़बान किसान कितनी ही मेहनत करने पर भी पचास रूबल से अधिक नहीं पाता, तो यह उसी तरह की बेईमानी है, जैसे अपने हेड क्लर्क की तुलना में मेरा अधिक तनख़्वाह पाना और इंजन-ड्राइवर के मुक़ाबले में माल्थस का कहीं ज़्यादा पैसा कमाना। इसके उलट, मैं इन लोगों के प्रति समाज

---

\* बादशाह नहीं रहा, बादशाह जिन्दाबाद! (फ़्रांसीसी)

का एक शत्रुतापूर्ण रवैया अनुभव करता हूं, जिसका कोई आधार नहीं है, और मुझे लगता है कि यहां ईर्ष्या ...”

“नहीं, यह सही नहीं है,” वेस्लोव्स्की ने कहा, “ईर्ष्या नहीं हो सकती, लेकिन इस मामले में कोई बेईमानी की बात ज़रूर है।”

“नहीं, तुम मुझे अपनी बात कहने दो,” लेविन ने अपना विचार आगे बढ़ाया। “तुम कहते हो, यह अन्याय है कि मैं पांच हजार पाता हूं और किसान पचास रुपये। यह बिल्कुल सही है। यह अन्याय है और मैं यह महसूस करता हूं, लेकिन ...”

“वास्तव में ऐसा ही है। भला हम क्यों खाते-पीते और शिकार खेलते रहते हैं और कुछ नहीं करते, जबकि किसान हमेशा मेहनत करता रहता है?” वेस्लोव्स्की ने कहा, जिसने स्पष्टतः जीवन में पहली बार ऐसा सोचा और इसलिये बिल्कुल सच्चे दिल से ऐसा कहा था।

“हां, तुम महसूस करते हो, लेकिन अपनी जागीर उसे नहीं देते हो,” ओब्लोव्स्की ने मानो जान-बूझकर लेविन को चिढ़ाते हुए कहा।

पिछले कुछ अर्से से इन दोनों हमजुल्फों के बीच मानो एक गुप्त शत्रुतापूर्ण रवैया पैदा हो गया था। ऐसे लगता था मानो जब से उनकी दोनों बहनों से शादी हुई थी, उनके बीच इस बात की स्पर्धा आरम्भ हो गयी थी कि किसने अपने जीवन को अधिक अच्छा रूप दिया है और अब यह शत्रुता व्यक्तिगत रंग लेनेवाली बातचीत में प्रकट होने लगी थी।

“मैं इसलिये उसे अपनी जागीर नहीं देता कि कोई मुझसे ऐसा करने की मांग नहीं करता और अगर मैं चाहता, तो भी न दे पाता,” लेविन ने जवाब दिया, “और फिर दूँ भी, किसे?”

“इस किसान को दे दो, वह इन्कार नहीं करेगा।”

“लेकिन मैं उसे कैसे दूंगा? उसके साथ जाकर उसके नाम करवा दूँ?”

“मैं नहीं जानता, लेकिन अगर तुम्हें इस बात का यकीन है कि तुम्हें इसका अधिकार नहीं है ...”

“नहीं, मुझे यकीन नहीं है। इसके उलट, मैं ऐसा महसूस करता हूं कि मुझे उसे देने का हक नहीं है, कि ज़मीन और परिवार के प्रति मेरी ज़िम्मेदारियां हैं।”

“नहीं, लेकिन अगर तुम यह मानते हो कि ऐसी असमानता अन्यायपूर्ण है, तो ऐसा क्यों नहीं करते...”

“मैं ऐसा कर रहा हूँ, लेकिन नकारात्मक ढंग से, यानी इस अर्थ में कि स्थिति के उस अन्तर को बढ़ाने का यत्न नहीं करूँगा, जो मेरे और उसके बीच विद्यमान है।”

“क्षमा करना, यह तो तुम अन्तर्विरोधी बातें कर रहे हो।”

“हां, यह तो अटपटे तर्क वाला स्पष्टीकरण है,” वेस्लोव्स्की ने पुष्टि की। “अरे! हमारा मेज़बान,” उसने किसान से कहा, जो सायबान के दरवाज़ों को चरमराता हुआ भीतर आया था। “क्या अभी तक सोये नहीं?”

“इतनी जल्द कौन सोवत है, सरकार! हम सोचत कि हमारे महानुभाव सोवत, परन सुन पड़ा कि बोलत-बतियावत। हम तो यहां से अंकुड़ा लेन आयो। यह कुत्ता काटत तो नहीं?” उसने नंगे पैरों से सावधानी से आगे बढ़ते हुआ कहा।

“तुम कहां सोओगे?”

“हम तो रात को घोड़े चरावन जात।”

“ओह, कैसी प्यारी रात है,” हल्की लाली की रोशनी में सायबान के खुले दरवाज़े में से नज़र आते भोंपड़े के सिरे और गाड़ी को देखते हुए वेस्लोव्स्की ने कहा। “सुन रहे हैं औरतें गा रही हैं और सच, कुछ बुरा नहीं गा रही हैं। ये कौन गा रही हैं?” उसने घर के मालिक से पूछा।

“किसान छोकरियां गावत, सरकार।”

“आइये घूमने चलें! नींद तो आयेगी नहीं। ओब्लोन्स्की, चलें!”

“यहां लेटे-लेटे वहां जाना कितना अच्छा होता,” ओब्लोन्स्की ने अंगड़ाई लेते हुए कहा। “लेटे रहना बहुत अच्छा है।”

“तो मैं अकेला जाता हूँ,” फुर्ती से उठते और जूते पहनते हुए वेस्लोव्स्की ने कहा। “तो मैं जा रहा हूँ, महानुभावो। अगर मज़ा रहा, तो मैं आपको भी बुला लूँगा। आपने मुझे शिकार का लुत्फ़ दिलवाया है और इसलिये मैं आपको भी नहीं भूलूँगा।”

“है न भला नौजवान?” वेस्लोव्स्की के जाने और किसान द्वारा दरवाज़ा बन्द कर देने पर ओब्लोन्स्की ने पूछा।

“हां, भला है,” लेविन ने कुछ ही देर पहले हुई बातचीत के बारे में सोचते हुए जवाब दिया। उसे लगा कि जिस हद तक मुमकिन हुआ उसने अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट ढंग से व्यक्त कर दिया है और फिर इन दोनों ने, जो खासे समझदार और निश्छल लोग हैं, एक स्वर से यह कहा था कि वह अटपटे तर्कों से अपने को सन्तोष दे रहा है। उसे यह बात खल रही थी।

“तो यह बात है, मेरे दोस्त। दो में से एक चीज़ हो सकती है—या तो यह स्वीकार करो कि समाज की वर्तमान व्यवस्था न्यायपूर्ण है और तब तो तुम्हें अपने अधिकारों की रक्षा करनी चाहिये, या यह मानो कि अन्यायपूर्ण लाभ पा रहे हो, जैसा कि मैं करता हूं, और खूब मजे से उनका आनन्द लूटो।”

“नहीं, अगर यह अन्यायपूर्ण होता, तो तुम खूब मजे से इनका आनन्द न लूट पाते। कम से कम मैं ऐसा न कर सकता। मेरे लिये तो मुख्य बात यह अनुभव करना है कि इसमें मेरा कोई अपराध नहीं।”

“तो क्यों, क्या सचमुच चला न जाये?” ओब्लोन्स्की ने स्पष्टतः तनावपूर्ण विचारों से थकान अनुभव करते हुए पूछा। “नींद तो आयेगी नहीं। सच, चलें।”

लेविन ने कोई जवाब नहीं दिया। बातचीत के दौरान उसके द्वारा कहा हुआ यह शब्द कि वह केवल नकारात्मक अर्थ में न्यायपूर्ण काम करता है, उसे परेशान कर रहा था। “क्या केवल नकारात्मक ढंग से ही न्यायपूर्ण हुआ जा सकता है?” वह अपने आपसे पूछ रहा था।

“कितनी तेज़ गन्ध है ताज़ा सूखी घास की!” ओब्लोन्स्की ने उठते हुए कहा। “किसी तरह भी नींद नहीं आयेगी। लगता है कि वेस्लोव्स्की ने वहां कुछ मामला जमा लिया है। ठहाके और उसकी आवाज़ सुन रहे हो न? क्या चला न जाये? आओ, चलें!”

“नहीं, मैं नहीं जाऊंगा,” लेविन ने जवाब दिया।

“क्या तुम यह भी उसूली तौर पर कर रहे हो?” ओब्लोन्स्की ने अंधेरे में अपनी टोपी ढूंढते हुए मुस्कराकर प्रश्न किया।

“उसूली तौर पर नहीं, लेकिन मैं किसलिये जाऊं?”

“सुनो, तुम अपने लिये बड़ी मुसीबत पैदा कर रहे हो,” ओब्लोन्स्की ने अपनी टोपी ढूंढ लेने के बाद उठते हुए कहा।

“वह क्यों?”

“क्या मैं यह देख नहीं रहा हूँ कि अपनी बीवी के मामले में तुमने क्या रुख अपना रखा है? मैंने सुना था कि कैसे तुम दोनों सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न के रूप में यह तय कर रहे थे कि तुम दो दिन के लिये शिकार को जाओगे या नहीं। कुछ समय के लिये एक आदर्श के रूप में तो यह अच्छा है, किन्तु जीवन भर नहीं चल सकेगा। मर्द को आज़ाद होना चाहिये, उसकी मर्दों वाली कुछ दिलचस्पियाँ हैं। मर्द में मर्दों वाली बात होनी चाहिये,” ओब्लोन्स्की ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

“तुम्हारा मतलब? यही कि जाकर किसान लड़कियों से इश्क करूँ?” लेविन ने पूछा।

“अगर खुशी मिले तो क्यों न जाया जाये। *Ca ne tire pas à conséquence.\** मेरी बीवी का इससे कोई नुक़सान नहीं होगा और मुझे खुशी मिलेगी। सबसे बड़ी बात तो यह है—घर की पवित्रता बनाये रहो। घर में कुछ नहीं होना चाहिये। लेकिन अपने हाथ नहीं बांधो।”

“शायद ठीक हो,” लेविन ने रुखाई से जवाब दिया और करवट ले ली। “कल तड़के ही जाना है, मैं किसी को नहीं जगाऊंगा और पौ फटते ही चला जाऊंगा।”

“*Messieurs, venez vite!*”\*\* वापस आनेवाले वेस्लोव्स्की की आवाज़ सुनाई दी। “*Charmante!*\*\*\* मैंने खोजी है। *Charmante*, बिल्कुल ग्रेतखेन! मेरा तो उससे परिचय भी हो गया है। सच, बहुत ही बढ़िया है!” वह ऐसे ज़ाहिर कर रहा था मानो वह उसी के लिये इतनी सुन्दर बनायी गयी थी और वह उससे खुश था, जिसने उसके लिये उसे बनाया था।

लेविन ने ऐसे ज़ाहिर किया मानो वह सो रहा है और ओब्लोन्स्की जूते पहन तथा सिगार जलाकर सायबान से बाहर चला गया और जल्द ही उनकी आवाज़ें शान्त हो गयीं।

---

\* इसमें कोई बुराई नहीं। ( फ़्रांसीसी )

\*\* महानुभावो, जल्दी से आओ! ( फ़्रांसीसी )

\*\*\* बला की खूबसूरत है! ( फ़्रांसीसी )

लेविन को देर तक नींद नहीं आयी। वह अपने घोड़ों को सूखी घास चरते सुनता रहा, इसके बाद घर का मालिक अपने बड़े बेटे को साथ लेकर रात को घोड़े चराने के लिये चला गया, इसके बाद उसे सायबान के दूसरी ओर से यह सुनाई दिया कि कैसे फ़ौजी अपने भानजे यानी गृह-स्वामी के छोटे बेटे के साथ सोने के लिये लेटा। उस लड़के ने अपनी पतली-सी आवाज़ में कुत्तों के बारे में, जो उसे भयानक और बहुत बड़े प्रतीत हुए थे, अपनी राय भी जाहिर की। इसके पश्चात लड़के ने यह पूछा कि ये कुत्ते किसका शिकार करेंगे और कैसे फ़ौजी ने खरखरी और उनींदी-सी आवाज़ में उसे यह बताया कि शिकारी कल दलदल में जाकर गोलियां चलायेंगे, और बाद में लड़के के सवालियों से निजात पाने के लिये उसने कहा: “सो जाओ, वास्का, सो जाओ, नहीं तो,” और उसके फ़ौरन बाद खुद खर्राटे भरने लगा तथा सब कुछ शान्त हो गया। सिर्फ़ घोड़ों की हिनहिनाहट और कुनालों की आवाज़ें ही सुनाई देती रहीं। “क्या केवल नकारात्मक ही?” उसने अपने आपसे पूछा। “लेकिन अगर ऐसा है, तो भी क्या? मैं तो दोषी नहीं हूं।” और वह अगले दिन के बारे में सोचने लगा।

“कल सुबह ही जाऊंगा और पक्का इरादा कर लूंगा कि अपने को शांत रखूंगा। ढेरों-ढेर कुनाल हैं। बड़े कुनाल भी हैं। यहां लौटने पर कीटी का रुक्का मिलेगा। हां, स्तीवा शायद ठीक ही कहता है—मैं उसके साथ मर्द की तरह पेश नहीं आता, उसके इशारों पर नाचने लगा हूं... मगर क्या किया जाये! फिर नकारात्मक!”

नींद की गोद में जाते हुए लेविन को वेस्लोव्स्की और ओब्लोन्स्की की हंसी और खुशीभरी आवाज़ें सुनाई देती रहीं। उसने घड़ी भर को आंखें खोलੀं—चांद निकल आया था और खुले तथा चांदनी में बेहद चमकते दरवाज़े के पास खड़े हुए वे बातें कर रहे थे। ओब्लोन्स्की लड़की की ताज़गी के बारे में कुछ कह रहा था, ताज़ा-ताज़ा निकली हुई गिरी से उसकी तुलना कर रहा था, और वेस्लोव्स्की दूसरों को बरबस हंसा देनेवाली अपनी हंसी से हंसते हुए कुछ दोहरा रहा था, जो उससे शायद किसी किसान द्वारा कहे हुए शब्द थे—“अपनी बीवी के धोरे रहन का जतन करवो!” लेविन ने ऊंघते-ऊंघते कहा—

“महानुभावो, कल तड़के ही!” और सो गया।

लेविन बहुत सवेरे ही जाग गया और उसने अपने साथियों को जगाने की कोशिश की। वेस्लोव्स्की जुराब सहित एक टांग फैलाये हुए पेट के बल ऐसे गहरी नींद सोया पड़ा था कि उससे कोई जवाब हासिल करना ही मुमकिन नहीं था। ओब्लोन्स्की ने नींद में ही इतनी सुबह जाने से इन्कार कर दिया। यहां तक कि लास्का भी, जो सूखी घास के एक सिरे पर गुड़ीमुड़ी होकर सोई पड़ी थी, मन मारकर उठी और उसने बड़ी काहिली से एक-एक करके अपनी पिछली टांगों को फैलाया और सीधा किया। लेविन ने जूते पहने, बन्दूक ली और सायबान के चूंचर करते दरवाजे को सावधानी से खोलकर बाहर चला गया। कोचवान घोड़ा-गाड़ियों के पास सोये पड़े थे और घोड़े ऊंच रहे थे। केवल एक घोड़ा धीरे-धीरे जई खा रहा था और फूंक से उसे नांद में इधर-उधर बिखरा रहा था। अहाते में अभी काफ़ी धुंधलका था।

“इत्ते भोरे काहे उठ गयो, बेटा?” भोंपड़े में से बाहर आनेवाली बूढ़ी मालकिन ने एक अच्छे और पुराने परिचित की भांति लेविन से स्नेहपूर्वक पूछा।

“शिकार के लिये जा रहा हूं, मौसी। यहां से दलदल में पहुंच जाऊंगा न?”

“भोंपड़ों के पीछे सीध में, हमार खलिहान के धोरे-धोरे सन के खेत तक जाव, वहां से पगडंडी सुरू होवत।”

संवलाये हुए नंगे पैरों से सावधानी से कदम बढ़ाते हुए बुढ़िया लेविन को खलिहान तक छोड़ने चली गयी और वहां उसके रास्ते से बाड़ भी हटा दी।

“सीधे दलदल मांही पहुंच जावत। हमार लोग वहां रात को घोड़े चरावन गयो।”

लास्का खुशी से पगडंडी पर आगे-आगे भागी जा रही थी। लेविन उसके पीछे-पीछे, हल्की और तेज़ चाल से चल रहा था तथा लगातार आसमान को ताकता जा रहा था। वह चाहता था कि उसके दलदल तक पहुंचने के पहले सूरज न चढ़े। लेकिन सूरज ने देर नहीं की। जब

वह बाहर निकला था, तो चांद चमक रहा था और अब पारे के टुकड़े की भांति केवल हल्की-सी आभा दिखा रहा था। भोर के तारे को पहले न देखना असम्भव था, किन्तु अब उसे खोजना जरूरी था। दूर के खेत में पहले जो अस्पष्ट-से धब्बे थे, अब बिल्कुल साफ़ नज़र आने लगे थे। वे रई की फ़सल के पूले थे। पराग-मुक्त हो चुके सन के ऊँचे, सुगन्धित पौधों के बीच सूरज की रोशनी के बिना नज़र न आनेवाली ओस लेविन के पांव और कमर से ऊपर तक उसकी कमीज़ भिगो रही थी। प्रातःकाल की पारदर्शी नीरवता में हल्की आवाज़ भी सुनाई पड़ रही थी। एक मधुमक्खी गोली की तरह सनसनाती हुई लेविन के कान के पास से गुज़र गयी। गौर से देखने पर उसे दूसरी और तोसरी मधुमक्खी दिखाई दी। ये सभी मधुमक्खी पालनशाला से उड़कर आ रही थीं और सन के खेत के ऊपर दलदल की दिशा में ग़ायब हो जाती थीं। पगडंडी उसे सीधे दलदल में ले गयी। दलदल को भाप से पहचाना जा सकता था, जो उसमें से कहीं घनी और कहीं हल्की-हल्की उठ रही थी और जिसके फलस्वरूप उसमें सरकंडे और सरपत की भाड़ियां द्वीपों की भांति डोलती-सी लग रही थीं। रात को घोड़े चरानेवाले लड़के और किसान दलदल तथा पगडंडी के सिरे पर लेटे हुए थे और पौ फटने के पहले वे सभी कोट ओढ़कर सो गये थे। पिछाड़ी बंधे हुए तीन घोड़े उनके पास ही घूम रहे थे। एक अपनी बेड़ी को खनखना रहा था। लास्का आगे जाने की अनुमति मांगती और मुड़ मुड़कर पीछे देखती हुई अपने मालिक के साथ-साथ जा रही थी। सोये हुए किसानों के पास से गुज़रने और दलदल के किनारे के बिल्कुल करीब पहुंचने पर लेविन ने कारतूसों की टोपियों की जांच की और लास्का को छूट दे दी। तीन साल का तगड़ा भूरा घोड़ा कुत्ते को देखकर उछल पड़ा और पूंछ ऊपर उठाकर हिनहिनाया। बाक़ी घोड़े भी डर गये और अपनी बंधी हुई टांगों से पानी में छपछपाते और फच-फच की आवाज़ के साथ गाढ़े कीचड़ में से अपने सुमों को बाहर निकालते हुए दलदल में से बाहर भागने लगे। लास्का रुककर घोड़ों की ओर उप-हासपूर्ण और लेविन की तरफ़ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगी। लेविन ने लास्का को सहलाया और यह संकेत देने के लिये सीटी बजायी कि अपना काम शुरू कर सकती हो।

लास्का खुश-खुश और काम की चिन्ता करती हुई अपने पैरों के नीचे डोलती धसान पर भागने लगी।

दलदल में भागते ही लास्का ने जड़ों, दलदली घासों और ठहरे पानी की परिचित गन्धों तथा घोड़ों की लीद की अपरिचित गन्ध के बीच इस सारी जगह पर बसी हुई पक्षी की गन्ध, उसी पक्षी की विशेष गन्ध अनुभव की, जो उसे सबसे ज्यादा उत्तेजित करती थी। कहीं-कहीं काई और दलदली झाड़ियों के बीच यह गन्ध बहुत तेज़ थी, मगर उसके लिये यह तय करना सम्भव नहीं था कि किस दिशा में वह तेज़ और किस में धीमी थी। दिशा मालूम करने के लिये हवा से दूर हटना ज़रूरी था। अपनी टांगों की गति को अनुभव न करते हुए लास्का तनाव के साथ ऐसे सरपट दौड़ती हुई कि ज़रूरत होने पर किसी भी छलांग के समय रुक सके, पूरब से आनेवाली सुबह की ठण्डी हवा से दूर दायें को चली गयी और हवा की ओर मुंह किया। नथुनों को चौड़ा करके हवा को सूंघते हुए उसने फ़ौरन यह महसूस कर लिया कि केवल पक्षियों के निशान ही नहीं, बल्कि वे खुद भी यहां उसके सामने थे और सो भी एक नहीं, बहुत से। लास्का कुछ कम वेग से दौड़ने लगी। वे यहां थे, लेकिन किस जगह, वह अभी यह तय नहीं कर सकती थी। इसी जगह को ढूंढ़ पाने के लिये उसने चक्कर भी काटना शुरू कर दिया कि अचानक मालिक की आवाज़ ने उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। “लास्का! इधर!” लेविन ने दूसरी ओर इशारा करते हुए कहा। वह मानो उससे यह पूछती हुई खड़ी रही कि जैसे उसने शुरू किया था, क्या वैसे ही अधिक अच्छा नहीं रहेगा। लेकिन मालिक ने गुस्से से अपना आदेश दोहराया और पानी से ढके हुए टीले की ओर संकेत किया, जहां कुछ भी नहीं हो सकता था। लास्का ने उसकी बात मानी, यह ढोंग किया कि खोज रही है, उसे खुश करने के लिये सारे टीले का चक्कर लगाकर फिर से पहले-वाली जगह पर आ गयी और फिर से फ़ौरन उन्हें अनुभव किया। अब जब मालिक उसके काम में बाधा नहीं डाल रहा था, तो उसे मालूम था कि क्या करना है और अपने नीचे देखे बिना, ऊंचे टीलों से ठोकर खाते और पानी में गिरते, किन्तु लचीली तथा मज़बूत टांगों की बदौलत स्थिति का सामना करते हुए उसने चक्कर काटना शुरू

किया, जिसे मामले को उसे स्पष्ट कर देना चाहिये था। पक्षियों की गन्ध अधिकाधिक तीव्र और स्पष्ट होती हुई उसे स्तम्भित कर रही थी और अचानक उसके लिये यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि उनमें से एक, यहीं, टीले के पीछे, पांच कदमों की दूरी पर उसके सामने है और वह रुक गयी, उसने पूरी तरह दम साध लिया। अपनी छोटी टांगों के कारण वह अपने सामने कुछ भी देख नहीं सकती थी, किन्तु गन्ध से यह जानती थी कि वह पांच कदमों से अधिक दूरी पर नहीं बैठा है। वह उसे अधिकाधिक अनुभव करती और प्रतीक्षा का आनन्द लेती हुई खड़ी थी। उसकी तनावपूर्ण पूंछ बिल्कुल सीधी थी और केवल सिरे पर ही तनिक कांप रही थीं। उसका मुंह ज़रा खुला हुआ था और कान खड़े थे। उसका एक कान दौड़ने के समय ही पीछे को मुड़ गया था और वह तेज़, किन्तु सावधानी से सांस ले रही थी और इससे भी अधिक सावधानी के साथ यानी सिर घुमाने के बजाय उसने आंखों से ही अपने मालिक की तरफ़ देखा। जाने-पहचाने चेहरे, किन्तु सदैव भयानक आंखोंवाला मालिक टीलों से ठोकरें खाता और जैसा कि लास्का को प्रतीत हुआ, बहुत ही धीमे-धीमे उसकी तरफ़ आ रहा था। लास्का को लग रहा था कि वह बेहद धीमी चाल से आ रहा है, जबकि लेविन भाग रहा था।

शिकार को खोजने के इस खास ढंग की ओर ध्यान देते हुए, जब वह अपने सारे शरीर को ज़मीन से चिपकाये और मुंह को ज़रा खोले मानो पिछली टांगों को घसीटती प्रतीत होती है, लेविन समझ गया कि वह कुनालों की तरफ़ खिंच रही है, लेविन ने मन ही मन सफलता की, विशेषतः पहले पक्षी के शिकार की सफलता की प्रार्थना की और भागकर उसके पास पहुंचा। उसके बिल्कुल नज़दीक पहुंचने पर वह अपने सामने देखने लगा और अपनी ऊंचाई की बदौलत उसने आंखों से वह देखा, जो लास्का ने नाक से देखा था। टीलों के बीच की थोड़ी-सी जगह पर उसे एक बड़ा कुनाल दिखाई दिया। वह सिर घुमाये और आवाज़ पर कान लगाये था। कुछ देर बाद उसने अपने पंखों को थोड़ा फैलाया, उसे फिर से सिकोड़ कर अटपटे ढंग से पूंछ हिलाई और टीले के कोने के पीछे छिप गया।

“भपट लो, भपट लो,” लास्का को पीछे से धकेलते हुए लेविन

चिल्लाया। “लेकिन मैं नहीं जा सकती,” लास्का सोच रही थी। “कहां जाऊं मैं? यहां से मैं उन्हें महसूस कर रही हूं, लेकिन अगर मैं आगे बढ़ूंगी, तो कुछ भी समझ नहीं पाऊंगी कि वे कहां हैं और कौन हैं।” किन्तु लेविन ने उसे घुटने से धकेला और उत्तेजित फुस-फुसाहट में कहा—

“भपट लो, भपट लो!”

“अगर वह ऐसा ही चाहता है, तो मैं कर देती हूं, लेकिन अब मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं होगी,” उसने सोचा और पूरे जोर से टीलों के बीच आगे भाग चली। अब वह कुछ भी महसूस नहीं कर रही थी, कुछ भी समझे बिना सिर्फ देख और सुन रही थी।

पहले वाली जगह से कोई दस कदम की दूरी पर से बड़े कुनाल की भारी आवाज़ और पंखों की खास फड़फड़ाहट करते हुए एक बड़ा कुनाल उड़ा। गोली चलते ही वह सफ़ेद छाती के बल गीली धरती पर आ गिरा। दूसरे कुनाल ने भी प्रतीक्षा नहीं की और कुत्ते द्वारा डराये जाने के बिना ही लेविन के पीछे से उड़ चला।

लेविन जब उसकी ओर मुड़ा, तो वह दूर जा चुका था। किन्तु उसकी गोली उसे जा लगी। कोई बीस कदम तक उड़ने के बाद वह तेज़ी से ऊपर को उठा और फिर चक्कर काटता तथा हवा में फेंके हुए गेंद की तरह सूखी जगह पर नीचे आ गिरा।

“अब बात बनेगी!” गर्म शरीर वाले मोटे-मोटे कुनाल थैले में डालते हुए लेविन ने सोचा। “क्यों लास्का, बात बनेगी न?”

बन्दूक में गोलियां भरने के बाद लेविन जब आगे चला, तो सूरज, जो बेशक बादलों के पीछे होने के कारण दिखाई नहीं दे रहा था, चढ़ चुका था। दूज का चांद अपनी पूरी चमक खोकर सफ़ेद बादल की तरह आसमान में दिख रहा था और एक भी सितारा नज़र नहीं आ रहा था। दलदली घासों, जो पहले ओस के कारण रुपहली लग रही थीं, अब सुनहरी हो गयी थीं। गेरुआ पानी पीला हो गया था। नीली घासों ने पीला-हरित रंग धारण कर लिया था। दलदली पक्षी ओस से चमकने और नदी के पास लम्बी-लम्बी परछाइयां डालनेवाली झाड़ियों में फुदक रहे थे। बाज़ जाग उठा था और एक पूले पर बैठा दायें-बायें सिर घुमाता हुआ नाराज़गी से दलदल को ताक रहा था।

डोम कौए खेतों की ओर उड़ रहे थे और एक नंगे पांव छोकरा घोड़ों को उस बूढ़े की तरफ़ हांक रहा था, जो कोट के नीचे से उठकर बैठ गया था और अपने को खुजला रहा था। गोलियां चलने से निकला हुआ धुआं हरी घास के ऊपर सफ़ेद दूध की तरह फैला हुआ था।

लड़कों में से एक भागकर लेविन के पास आया।

“चाचा, कल यहां बत्तखें थीं!” उसने चिल्लाकर लेविन से कहा और कुछ दूरी पर उसके पीछे-पीछे चलता रहा।

लेविन को इस लड़के के सामने, जो उसके काम का अनुमोदन कर रहा था, एक के बाद एक, तीन कुनालों को मारकर और भी ज्यादा खुशी हुई।

### ( १३ )

शिकारियों का यह कहना कि अगर पहला जानवर और पहला पक्षी हाथ से नहीं निकलेगा, तो शिकार बढ़िया रहेगा, ठीक साबित हुआ।

थका-हारा, भूखा-प्यासा और बहुत ही खुश लेविन तीसेक वेस्ती का चक्कर काटकर और उन्नीस कुनाल तथा एक जंगली बत्तख का शिकार करके, जिसे उसने पेटी से बांध लिया था, क्योंकि थैले में उसके लिये जगह नहीं थी, सुबह के कोई दसेक बजे घर लौटा। उसके साथी कभी के जाग चुके थे, बेहद भूख महसूस करके नाश्ता भी कर चुके थे।

“रुको, रुको, मुझे मालूम है कि उन्नीस हैं,” लेविन ने कुनालों और बड़े कुनालों को दुबारा गिनते हुए कहा। वे अब उड़ान के समय की भांति सुन्दर नहीं लग रहे थे और मुड़मुड़ा तथा सिमट-सिमटा गये थे, उनपर खून के धब्बे लगे हुए थे और उनके सिर एक ओर को लटके हुए थे।

गिनती सही थी और ओब्लोन्स्की की ईर्ष्या लेविन को अच्छी लगी। घर लौटने पर कीटी का रुक्का मिलने से भी उसे खुशी हुई।

“मैं बिल्कुल स्वस्थ और खुश हूं। अगर तुम मेरे कारण चिन्तित हो, तो पहले से भी अधिक निश्चित हो सकते हो। मेरी एक नयी

अंग-रक्षिका आ गयी है - मारीया व्यास्येव्ना " ( यह दाई और लेविन के पारिवारिक जीवन में एक नयी और महत्वपूर्ण व्यक्ति थी ) । " वह मुझे देखने आई है । उसने मुझे पूरी तरह स्वस्थ पाया और हमने तुम्हारे आने तक उसे यहीं रोक लिया है । सभी मजे में और स्वस्थ हैं तथा तुम कृपया लौटने की जल्दी नहीं करो । अगर शिकार अच्छा हो रहा है , तो एक दिन और रुक जाना । "

बढ़िया शिकार और बीवी का रुकना ये दो ऐसी बड़ी खुशियां थीं कि इसके बाद होनेवाली दो अप्रिय बातों से लेविन बहुत क्षुब्ध नहीं हुआ । पहली अप्रिय बात तो यह थी कि बगल में जुतनेवाला लाल घोड़ा , जिससे स्पष्टतः पिछले दिन बहुत ज्यादा काम लिया गया था , चारा नहीं खा रहा था और बड़ा उदास-सा था । कोचवान का कहना था कि उसे बहुत थका दिया गया है ।

" कल उसे खूब दौड़ाया गया , कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच , " उसने कहा । " दस वेर्स्ता तक बुरी तरह दौड़ाते रहे ! "

दूसरी अप्रिय बात , जिसने शुरू में उसका मूड खराब किया , लेकिन जिस पर बाद में वह बेहद हंसता रहा , यह थी कि कीटी द्वारा बहुत बड़े परिमाण में दी गयी खाने-पीने की चीजों में से , जो , ऐसा लगता था , कि हफ्ते भर में भी नहीं खायी जा सकेंगी , कुछ भी बाक़ी नहीं बचा था । शिकार से थका-हारा और भूखा-प्यासा लौटनेवाला लेविन कचौड़ियों की इतनी स्पष्ट कल्पना कर रहा था कि घर के निकट पहुंचने पर वह उनकी वैसे ही गन्ध महसूस करने लगा , जैसे लास्का शिकार की , तथा उसे अपने मुंह में उनके ज़ायके की भी अनुभूति होने लगी । उसने फ़िलिप से फ़ौरन कचौड़ियां लाने को कहा । किन्तु पता चला कि कचौड़ियां ही नहीं , चूजे भी खाये जा चुके थे ।

" क्या भूख है उसकी ! " ओब्लोन्स्की ने हंसते और वेस्लोव्स्की की तरफ़ इशारा करते हुए कहा । " यों भूख तो मुझे भी कुछ कम नहीं लगती , लेकिन वह तो हद ही है ... "

" तो क्या हो सकता है ! " लेविन ने उदासी से वेस्लोव्स्की की तरफ़ देखते हुए कहा । " फ़िलिप , तो मांस ही लाओ । "

“वह भी खाया जा चुका है और हड्डियां मैंने कुत्तों को दे दीं,” फ़िलिप ने जवाब दिया।

लेविन को बहुत बुरा लगा और उसने झल्लाकर कहा:

“कुछ तो मेरे लिये भी छोड़ दिया होता!” और उसका रोने को मन हुआ।

“तो शिकार निकाल कर ही साफ़ करो,” उसने वेस्लोव्स्की की तरफ़ न देखने की कोशिश करते हुए कांपती आवाज़ में फ़िलिप से कहा, “और उन पर बिच्छूबूटी भी डाल देना। मेरे लिये और कुछ नहीं, तो दूध ही ला दो।”

दूध से पेट भर लेने के बाद उसे इस बात की शर्म महसूस हुई कि उसने एक पराये आदमी के सामने इस तरह अपनी झल्लाहट जाहिर की और वह भूख के कारण आनेवाले अपने गुस्से का मज़ाक़ उड़ाने लगा।

शाम को वे फिर शिकार के लिये गये और तब वेस्लोव्स्की ने भी कुछ कुनाल मार लिये। रात को वे घर के लिये रवाना हो गये।

दलदलों की ओर आने की तरह ही वापसी का रास्ता भी खूब हंसी-खुशी भरा रहा। वेस्लोव्स्की कभी गाता, तो कभी बड़े चटखारे ले लेकर उन किसानों के साथ अपनी संगत का हाल सुनाता, जिन्होंने उसे वोदका पिलाई थी और कहा था “बुरो नहीं मानत, सरकार”, या फिर रात को “गिरियों” और किसान छोकरियों और उस किसान से अपनी भेंट का किस्सा सुनाता, जिसने उससे पूछा था कि वह शादी-शुदा है या नहीं तथा यह जानकर कि अविवाहित है, कहा था— “दूजन की बीवियों को काहे देखत-फिरत, जतन कर अपनी लाइवो।” इन शब्दों से वेस्लोव्स्की को खास तौर पर बहुत हंसी आती थी।

“कुल मिलाकर मैं अपनी इस यात्रा से बेहद खुश हूं। और लेविन आप?”

“मैं बहुत खुश हूं,” लेविन ने सच्चे दिल से कहा। उसे इस बात की विशेष रूप से प्रसन्नता हो रही थी कि वह केवल वेस्लोव्स्की के प्रति घर पर अनुभव होनेवाला शत्रु भाव ही नहीं, बल्कि, इसके विपरीत, बहुत ही मित्रता अनुभव कर रहा था।

अगले दिन अपने खेत-खलिहान , आदि का चक्कर लगाने के बाद सुबह के दस बजे लेविन ने वेस्लोव्स्की के कमरे पर दस्तक दी।

“Entrez,\*” वेस्लोव्स्की ने ऊंची आवाज़ में कहा। “आप मुझे माफ़ करें, मैंने अभी-अभी ablutions\*\* समाप्त किया है,” केवल अंडरवीयर में उसके सामने खड़े हुए वेस्लोव्स्की ने मुस्कराकर कहा।

“कृपया शर्माइये नहीं,” लेविन खिड़की के करीब बैठ गया। “आप अच्छी तरह सोये न?”

“मुर्दे की तरह। आज शिकार के लिये कितना बढ़िया दिन है!”

“आप चाय पीते हैं या कॉफ़ी?”

“कुछ भी नहीं। मैं नाश्ता करता हूँ। मुझे तो सचमुच शर्म आ रही है। मेरे ख्याल में महिलायें उठ भी गयी होंगी? अब थोड़ा घूम लेना अच्छा रहेगा। आप मुझे अपने घोड़े दिखाइये।”

बाग़ में घूमने, घुड़शाला में जाने और उसके साथ समानान्तर डंडों पर व्यायाम भी करने के बाद लेविन अपने मेहमान को लिये हुए घर लौटा और उसके साथ मेहमानखाने में गया।

“शिकार खूब बढ़िया रहा और दिल पर कितनी छापें पड़ी हैं!” वेस्लोव्स्की ने कीटी के पास जाते हुए, जो समोवार के निकट बैठी थी, कहा। “कितने अफ़सोस की बात है कि महिलायें ऐसी खुशियों से वंचित हैं।”

“इसमें क्या बात है, उसे घर की मालकिन से कुछ तो कहना ही चाहिये,” लेविन ने अपने आपसे कहा। उसे वेस्लोव्स्की की मुस्कान, उस विजेता जैसी अभिव्यक्ति में, जिसके साथ उसने कीटी को सम्बोधित किया, फिर कुछ बुरा लगा...

कीटी की मां मेज़ के दूसरे सिरे पर दाई मारीया व्लास्येव्ना और ओब्लोन्स्की के साथ बैठी थीं। उन्होंने लेविन को अपने पास बुला लिया और उसके साथ कीटी के बच्चा जनने के लिये मास्को जाने

\* भीतर आ जाइये। ( फ़्रांसीसी )

\*\* नहाना-धोना। ( फ़्रांसीसी )

और इस उद्देश्य से वहां घर तैयार करने की चर्चा करने लगीं। जिस तरह विवाह की सभी तैयारियां लेविन को अप्रिय लगती थीं, क्योंकि वे अपनी तुच्छता से विवाह की गरिमा को तिरस्कारपूर्ण बनाती थीं, भावी शिशु-जन्म ( जिसकी तिथि का हिसाब वे उंगलियों पर लगा लेती थीं ) की तैयारियां उसे और भी अधिक तिरस्कारपूर्ण प्रतीत होती थीं। वह भावी शिशु को लपेटने के ढंग से सम्बन्धित बातचीत की ओर कान न देने की कोशिश करता और निरन्तर बुनी जानेवाली पट्टियों तथा लिनन से बनाये जानेवाले तिकोणों की ओर से नज़र चुराने का प्रयास करता, जिन्हें डौली बहुत अधिक महत्त्व देती थी। बेटे के जन्म की घटना ( उसे विश्वास था कि बेटा ही होगा ), जिसका उसे आश्वासन दिया जा रहा था, किन्तु जिसका अभी उसे यक़ीन नहीं होता था—इतनी असाधारण बात लगती थी यह—उसको एक ओर तो इतनी अपार और इसलिये असम्भव खुशी प्रतीत होती थी, और दूसरी ओर इतनी रहस्यपूर्ण बात मालूम होती थी कि जो होने-वाला है, उसकी जानकारी को स्वीकार कर लेना और इसके फलस्वरूप एक साधारण और खुद लोगों के हाथों से बनायी जानेवाली चीज़ की तरह उसकी तैयारी करना उसे घृणित और तिरस्कारपूर्ण लग रहा था।

किन्तु कीटी की मां उसकी भावनाओं को नहीं समझती थीं और इस बारे में लेविन के सोचने तथा बात करने की अनिच्छा को उसकी उदासीनता तथा विचारहीनता मानती थीं और इसलिये उसे चैन नहीं लेने देती थीं। उन्होंने ओब्लोन्स्की को फ़्लैट ढूँढ़ने का काम सौंप दिया था और अब लेविन को अपने पास बुलाया।

“मैं कुछ नहीं जानता, प्रिंसेस। जैसा चाहें, वैसा करें,” लेविन ने कहा।

“यह तय करना चाहिये कि आप लोग कब वहां आयेंगे।”

“सच मानिये, मैं यह नहीं जानता। मैं जानता हूं कि मास्को और डाक्टरों के बिना लाखों-करोड़ों बच्चे पैदा होते हैं... फिर किस-लिये...”

“अगर ऐसी बात है, तो...”

“नहीं, जैसा कीटी चाहे।”

“कीटी के साथ इस बात की चर्चा नहीं की जा सकती ! तुम क्या चाहते हो कि मैं उसे डरा दूँ ? इस वसन्त में निकम्मी दाई के कारण नतालया गोलीत्सिना की मौत हो गयी।”

“आप जैसा कहेंगी, मैं वैसा ही करूंगा,” उसने उदासी से जवाब दिया।

प्रिंसेस उसे कुछ बताने लगीं, मगर वह उनकी बातों पर कान नहीं दे रहा था। यह सही है कि प्रिंसेस की बातों से उसे कुछ बुरा लग रहा था, किन्तु इस बातचीत से नहीं, बल्कि समोवार के पास जो हो रहा था, उसे देखकर उसका मूड बिगड़ रहा था।

“नहीं, यह बर्दाश्त नहीं हो सकता,” वह कीटी पर भुके तथा अपनी मधुर मुस्कान के साथ उससे कुछ कहते वेस्लोव्स्की तथा लज्जारुण और भाव-विह्वल होती हुई कीटी पर कभी-कभी नज़र डालते हुए मन ही मन सोच रहा था।

वेस्लोव्स्की की मुद्रा, उसकी नज़र और मुस्कान में कुछ शक पैदा करनेवाली चीज़ थी। लेविन को कीटी की नज़र में भी कुछ ऐसा भोंडापन-सा नज़र आया। फिर से उसके लिये दुनिया में अंधेरा ही अंधेरा हो गया। फिर पिछले दिन की तरह थोड़ी-सी चेतावनी के बिना उसने अपने को अचानक सौभाग्य, चैन और गरिमा के शिखर से हताशा, क्रोध और अपमान के गर्त में फेंका हुआ पाया। फिर से सभी और हर चीज़ उसके लिये घृणित हो गयी।

“जैसा चाहती हैं वैसा ही कीजिये, प्रिंसेस,” उसने फिर से उधर देखते हुए कहा।

“सिर पर ताज रखनेवाले को चैन नहीं मिलता !” ओब्लोन्स्की ने मज़ाक़ करते हुए कहा। उसने स्पष्टतः प्रिंसेस के साथ बातचीत की तरफ़ ही नहीं, बल्कि लेविन की बेचैनी के कारण की ओर भी इशारा किया, जिसकी तरफ़ उसका ध्यान गया था। “कितनी देर कर दी तुमने आज डौली।”

सभी डौली के स्वागत के लिये खड़े हुए। वेस्लोव्स्की क्षण भर को उठा और नयी पीढ़ी के युवजन के एक लक्षण के अनुरूप महिलाओं के प्रति आदरभाव की कमी दिखाकर, उसने तनिक सिर झुकाया और किसी बात पर हंसते हुए फिर से अपनी बात जारी रखी।

“मुझे माशा ने तंग कर डाला। पिछली रात वह चैन से नहीं सोई और मचलती रही,” डौली ने कहा।

वेस्लोव्स्की ने कीटी के साथ फिर आन्ना के बारे में इस सम्बन्ध में पिछले दिन वाली बातचीत शुरू की थी कि क्या प्यार ऊंचे समाज की परिस्थितियों की अवहेलना कर सकता है या नहीं। कीटी को यह बातचीत अच्छी नहीं लग रही थी। इसका विषय और वह अन्दाज़, जिसमें यह बातचीत हो रही थी, तथा खास तौर पर इसलिये भी यह उसे उद्वेलित कर रही थी कि पति पर होनेवाले इसके प्रभाव को वह जानती थी। लेकिन वह इतनी निश्छल और सरल-हृदय थी कि इस बातचीत को बन्द नहीं कर सकती थी। वह तो उस ऊपरी खुशी को भी नहीं छिपा सकती थी, जो इस नौजवान द्वारा उसकी स्पष्ट प्रशंसा से उसे प्राप्त हो रही थी। वह इस बातचीत को बन्द करना चाहती थी, किन्तु नहीं जानती थी कि क्या करे। उसे मालूम था कि वह जो कुछ भी करेगी, पति की नज़र से बचा नहीं रहेगा और वह उसका बुरा ही अर्थ लगायेगा। वास्तव में ही, जब उसने डौली से यह पूछा कि माशा को क्या हुआ है, और वेस्लोव्स्की ने यह प्रतीक्षा करते हुए कि उसके लिये यह ऊबभरी बात कब खत्म होती है, डौली की ओर उदासीनता से देखना शुरू कर दिया, तो लेविन को कीटी का यह प्रश्न अस्वाभाविक और घृणित धूर्तता-सा प्रतीत हुआ।

“तो क्या आज हम खुमियां बटोरने चलेंगी?” डौली ने पूछा।

“कृपया चलिये, मैं भी चलूंगी,” कीटी ने कहा और उसके चेहरे पर सुखीं दौड़ गयी। उसने शिष्टतावश वेस्लोव्स्की से यह पूछना चाहा कि वह चलेगा या नहीं, मगर ऐसा नहीं किया। “तुम किधर चल दिये कोस्त्या?” जब वह दृढ़ कदमों से उसके करीब से गुज़र रहा था, तो कीटी ने अपराधी की सी सूरत से यह प्रश्न किया। कीटी के चेहरे पर दिखनेवाले अपराधी के से भाव ने उसके सभी सन्देहों की पुष्टि कर दी।

“मेरी अनुपस्थिति में मिस्तरी यहां आ गया था, मैं अभी तक उससे नहीं मिला,” कीटी की ओर देखे बिना उसने उत्तर दिया।

वह नीचे उतर गया, मगर अभी अपने अध्ययन कक्ष से बाहर

नहीं गया था कि उसे पत्नी के जाने-पहचाने, असावधानी और तेज़ी से अपनी ओर आते क़दमों की चाप सुनाई दी।

“क्या बात है?” लेविन ने रुखाई से पूछा। “हम व्यस्त हैं।”

“क्षमा चाहती हूँ,” उसने जर्मन मिस्तरी को सम्बोधित किया, “मुझे पति से थोड़ी बातचीत करनी है।”

जर्मन ने बाहर जाना चाहा, किन्तु लेविन ने उससे कहा—

“आप तकलीफ़ नहीं कीजिये।”

“गाड़ी तीन बजे जाती है न?” जर्मन ने पूछा। “कहीं देर न हो जाये।”

लेविन ने जर्मन मिस्तरी को कोई जवाब नहीं दिया और खुद पत्नी के साथ बाहर चला गया।

“तो आप क्या कहना चाहती हैं मुझसे?” लेविन ने फ़्रांसीसी में कहना शुरू किया।

लेविन उसके चेहरे की तरफ़ नहीं देख रहा था और यह देखना भी नहीं चाहता था कि कीटी अपनी इस समय की स्थिति में सिर से पाँव तक कांप रही थी और उसकी सूरत बहुत ही दयनीय और दीन-सी लग रही थी।

“मैं... मैं यह कहना चाहती हूँ कि ऐसे जीना सम्भव नहीं, कि यह यातना है,” वह कह उठी।

“यहां भण्डारघर में लोग-बाग हैं,” उसने भल्लाकर कहा, “तमाशा नहीं करो।”

“तो आओ, इधर चलें!”

वे बीच वाले कमरे में खड़े थे। कीटी ने बग़ल वाले कमरे में जाना चाहा। किन्तु वहां अंग्रेज़ शिक्षिका तान्या को पढ़ा रही थी।

“तो बाग़ में चलते हैं!”

बाग़ में पगडंडी को साफ़ करता हुआ एक किसान सामने आ गया। इस बात के बारे में सोचे बिना कि किसान कीटी का आंसुओं से भीगा और उसका उत्तेजित चेहरा देखेगा, यह चिन्ता किये बिना कि वे किसी दुर्भाग्य से दूर भागे जाते जैसे लोगों के समान लगते हैं, वे यह अनुभव करते हुए तेज़ क़दमों से आगे बढ़े जा रहे थे कि उन्हें खुलकर बात कर लेनी चाहिये, ग़लतफ़हमी को दूर करना चाहिये,

दोनों को अकेले एकसाथ होना चाहिये और इस तरह उस यातना से मुक्ति पानी चाहिये, जो वे अनुभव कर रहे थे।

“ऐसे जीना सम्भव नहीं! यह तो यातना है। मैं यातना सहती हूँ, तुम यातना सहते हो। किसलिये?” कीटी ने कहा, जब वे आखिर लाइम वृक्षों की वीथी के सिरे पर एकान्त में रखी बेंच के पास पहुंच गये।

“लेकिन तुम मुझे एक बात बताओ—उसके अन्दाज़ में कुछ अशिष्ट, घटिया और भयानक रूप से घटिया था न?” लेविन ने कीटी के सामने उसी मुद्रा में, उसी तरह छाती पर मुट्टियां बांधकर खड़े हुए पूछा, जैसे उसने वेस्लोव्स्की के आने की रात को किया था।

“हां, था,” कीटी ने कांपती आवाज़ में जवाब दिया। “लेकिन कोस्त्या, क्या तुम यह नहीं देखते कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं? मैं तो सुबह से ही ऐसा अन्दाज़ अपनाना चाहती थी, मगर ये लोग... किसलिये वह यहां आया? कितने सुखी थे हम दोनों!” उसने रुंधे जाते कण्ठ से कहा। सिसकियों के कारण उसका गर्भावस्था का सारा शरीर ऊपर उठ रहा था।

माली को यह देखकर हैरानी हुई कि यद्यपि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा था और उन्हें किसी से भागना नहीं था और इस बेंच पर उन्हें विशेष रूप से सुखद भी कुछ नहीं मिल सकता था, फिर भी वे शान्त और खिले हुए चेहरों के साथ उसके पास से गुज़र कर घर को गये।

## (१५)

पत्नी को ऊपर पहुंचाकर लेविन घर के उस भाग में गया, जहां डौली रह रही थी। डौली भी किसी कारणवश इस दिन बहुत क्षुब्ध थी। वह कमरे में चक्कर काटती हुई कोने में खड़ी तथा आंसू बहाती बेटी को डांट रही थी—

“दिन भर कोने में खड़ी रहेगी, खाना भी अकेली ही खायेगी, खेलने को एक भी गुड़िया नहीं मिलेगी और तुझे नया फ़ाक भी सीकर नहीं दूंगी,” यह न जानते हुए कि उसे क्या सज़ा दे, वह कह रही थी।

“नहीं, यह तो बहुत ही बुरी लड़की है!” उसने लेविन को

सम्बोधित करते हुए कहा। “न जाने उसमें कहां से ऐसे घिनौने रुझान पैदा हो रहे हैं?”

“लेकिन उसने किया क्या है?” लेविन ने उदासीनता से पूछा क्योंकि वह अपने मामले के बारे में सलाह करना चाहता था और इसलिये उसे बुरा लग रहा था कि ग़लत वक़्त पर यहां आ गया है।

“यह और ग्रीशा रस्पबेरियां बटोरने गये थे और वहां... मैं तो बता भी नहीं सकती कि उसने क्या किया। बहुत ही अफ़सोस होता है कि miss Elliot यहां नहीं है। यह तो किसी भी चीज़ की तरफ़ ध्यान नहीं देती, निरी मशीन है... *Figurez vous, que la petite...\**

और डौली ने बच्ची का अपराध कह सुनाया।

“इससे कुछ भी साबित नहीं होता, इसमें घिनौने रुझानों की तो कोई बात नहीं, यह तो सिर्फ़ शरारत है,” लेविन ने उसे शान्त करते हुए कहा।

“लेकिन तुम कुछ परेशान से दिखते हो? किसलिये आये हो?” डौली ने पूछा। “वहां क्या हो रहा है?”

यह सवाल करने के अन्दाज़ से लेविन समझ गया कि उसके लिये वह बताना मुश्किल नहीं होगा, जो वह बताना चाहता था।

“मैं वहां नहीं गया, मैं कीटी के साथ बाग़ में था। जब से... स्तीवा आया है, हमारे बीच तब से दूसरी बार झगड़ा हो चुका है।”

डौली ने बुद्धिमत्तापूर्ण और मन की बात समझनेवाली आंखों से उसकी तरफ़ देखा।

“तुम अपने दिल पर हाथ रखकर कहो कि... कीटी के नहीं, बल्कि इस महानुभाव के अन्दाज़ में कुछ ऐसा था जो किसी पति के लिये अप्रिय, नहीं, अप्रिय नहीं, बहुत घिनौना, बहुत तिरस्कारपूर्ण हो सकता है?”

“समझ नहीं पा रही कि तुम से कैसे कहूं... खड़ी रहो, खड़ी रहो कोने में!” डौली ने माशा से कहा, जो मां के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान देखकर दूसरी ओर घूमना चाहती थी। “ऊंचे समाज के मतानुसार तो वह वैसा ही व्यवहार कर रहा है, जैसा सब जवान लोग करते

---

\* कल्पना कीजिये कि यह लड़की... (फ़्रांसीसी)

हैं। Il fait la cour à une jeune et jolie femme,\* और ऊंचे समाज के पति के लिये यह शान की बात होनी चाहिये। ”

“हां, हां,” लेविन ने मुरझाते हुए कहा, “लेकिन तुमने इसकी ओर ध्यान दिया न?”

“मैंने ही नहीं, स्तीवा का भी इस तरफ़ ध्यान गया। उसने चाय के बाद मुझसे साफ़ शब्दों में कहा : je crois que वेस्लोव्स्की fait un petit brin de cour à कीटी।\*\* ”

“बहुत ख़ूब, अब मुझे चैन पड़ गया। मैं उसे यहां से भगा दूंगा,” लेविन ने कहा।

“तुम क्या पागल हुए हो?” डौली घबराकर चिल्ला उठी। “यह तुम क्या कह रहे हो कोस्त्या, होश में आओ!” डौली ने हंसते हुए कहा। “अब तुम फ़ैनी के पास जा सकती हो,” उसने माशा से कहा। “नहीं, अगर तुम चाहते हो, तो मैं स्तीवा से कह दूंगी। वह उसे यहां से ले जायेगा। यह कहा जा सकता है कि तुम्हारे यहां मेहमान आनेवाले हैं। वैसे भी वह हमारे घर के वातावरण के अनुकूल नहीं है।”

“नहीं, नहीं, मैं खुद यह करूंगा।”

“लेकिन तुम भगड़ा कर लोगे?... ”

“बिल्कुल नहीं। मुझे ऐसा करने में मज़ा आयेगा,” वास्तव में ही खुशी से आंखें चमकाते हुए लेविन ने कहा। “तुम इसे माफ़ कर दो, डौली। अब वह ऐसी हरकत नहीं करेगी,” उसने छोटी-सी अपराधिनी के बारे में कहा, जो फ़ैनी के पास नहीं गयी थी और भौंहें चढ़ाये हुए, डांवांडोल मन से मां के सामने खड़ी थी और उससे नज़र मिलने की प्रतीक्षा कर रही थी।

मां ने उसकी तरफ़ देखा। बच्ची सुबक-सुबककर रोने लगी और उसने मां के घुटनों के बीच अपना सिर छिपा लिया। डौली ने अपना दुबला-पतला और कोमल हाथ उसके सिर पर रख दिया।

---

\* वह जवान और सुन्दर नारी के प्रति प्रेम-प्रदर्शन कर रहा है। ( फ़्रांसीसी )

\*\* मेरे ख़्याल में वेस्लोव्स्की कुछ-कुछ कीटी के आगे-पीछे घूम रहा है। ( फ़्रांसीसी )

“हमारे और उसके बीच साभा ही क्या है?” लेविन ने सोचा और वेस्लोव्स्की को ढूँढ़ने चल दिया।

ड्योढ़ी लांघते ही उसने स्टेशन जाने के लिये बग्घी जोतने का आदेश दिया।

“कल एक स्प्रिंग टूट गया था,” नौकर ने जवाब दिया।

“तो टमटम जोतने को कहो. जल्दी से। मेहमान कहां है?”

“वे अपने कमरे में गये हैं।”

लेविन उस वक्त वेस्लोव्स्की के पास पहुंचा, जब वह सूटकेस से अपनी चीजें निकालने तथा नये प्रेम-गीतों को अपने सामने फैलाने के बाद घुड़सवारी करने के लिये चमड़े का पायताबा माप रहा था।

लेविन के चेहरे पर कोई विशेष भाव था या खुद वेस्लोव्स्की ने यह महसूस कर लिया कि *ce petit brin de cour*,\* जो उसने की है, इस घर में उचित नहीं है, किन्तु लेविन के ऐसे आने से वह कुछ (जितना कि ऊंचे समाज के आदमी के लिये सम्भव हो सकता है) परेशान जरूर हो उठा था।

“आप चमड़े का पायताबा पहनकर घुड़सवारी करते हैं?”

“हां, इससे कहीं ज्यादा सफ़ाई रहती है,” वेस्लोव्स्की ने अपनी मोटी टांग को कुर्सी पर रखकर नीचे वाली हुक अटकाते और नेकदिली तथा खुशमिजाजी से मुस्कराते हुए कहा।

वह निश्चय ही भला नौजवान था और वेस्लोव्स्की की आंखों में कातरता देखकर उसे उस पर दया और गृह-स्वामी होने के नाते अपने पर शर्म आई।

मेज़ पर डंडे का वह टुकड़ा पड़ा था, जिसे उन्होंने सुबह कसरत के वक्त टेढ़े हुए समानान्तर डंडों को सीधा करने की कोशिश में तोड़ दिया था। लेविन ने यह टुकड़ा उठा लिया और यह न समझ पाते हुए कि कैसे बात शुरू करे, उसके फटे हुए सिरे को तोड़ने लगा।

“मैं चाहता था...” वह चुप हो गया, लेकिन अचानक कीटी और जो कुछ हुआ था, उसका ध्यान आने पर उसने दृढ़ता से उसकी आंखों में देखते हुए कहा: “मैंने आपके लिये घोड़े जोतने को कह दिया है।”

---

\* थोड़ी चोंचलेबाजी। ( फ़्रांसीसी )

“क्या मतलब?” वेस्लोव्स्की ने हैरानी से कहना शुरू किया।  
“कहां जाने के लिये?”

“आपको स्टेशन पर पहुंचाने के लिये,” डंडे के सिरे को तोड़ते हुए लेविन ने उदासी से जवाब दिया।

“आप कहीं जा रहे हैं या कोई दूसरी बात हो गयी है?”

“हुआ यह है कि मेरे यहां मेहमान आनेवाले हैं,” लेविन अपनी मजबूत उंगलियों से डंडे के फटे सिरे को जल्दी-जल्दी तोड़ता जा रहा था।  
“मेहमान नहीं आ रहे हैं, कुछ हुआ भी नहीं है, लेकिन मैं आपसे जाने का अनुरोध करता हूं। मेरी अशिष्टता का आप जो भी चाहें, अर्थ लगा सकते हैं।”

वेस्लोव्स्की सीधा हुआ।

“मैं आपसे इस बात को स्पष्ट करने की प्रार्थना करता हूं...”  
मामले को आखिर समझने पर उसने गरिमा से कहा।

“मैं स्पष्ट नहीं कर सकता,” लेविन ने अपने कांपते जबड़े को छिपाने की कोशिश करते हुए धीमी आवाज़ में धीरे-धीरे उत्तर दिया।  
“यही ज़्यादा अच्छा होगा कि आप ऐसा करने को न कहें।”

चूंकि डंडे के फटे हुए सारे सिरे तोड़े जा चुके थे इसलिये लेविन ने उसके मोटे सिरे को उंगलियों से कसकर पकड़ लिया, डंडे के दो टुकड़े किये और नीचे गिरते सिरे को फुर्ती से पकड़ लिया।

सम्भवतः लेविन के तनावपूर्ण हाथों, सुबह व्यायाम के समय छूकर देखी मांस-पेशियों, चमकती आंखों, धीमी आवाज़ और कांपते जबड़े पर नज़र डाल लेने से शब्दों के बिना ही सब कुछ स्पष्ट हो गया। वेस्लोव्स्की ने कंधे झटकते और तिरस्कारपूर्वक मुस्कराकर सिर झुका दिया।

“मैं ओब्लोन्स्की से मिल सकता हूं?”

वेस्लोव्स्की के कंधे झटकने और मुस्कराने से लेविन झल्लाया नहीं। “इसके सिवा वह कर ही क्या सकता है?” उसने सोचा।

“मैं अभी उसे आपके पास भेज देता हूं।”

“यह क्या पागलपन है!” दोस्त से यह मालूम होने पर कि उसे घर से निकाला जा रहा है तथा लेविन को बाग़ में दूढ़कर, जहां वह मेहमान के जाने की राह देख रहा था, ओब्लोन्स्की ने उससे कहा।

“Mais c’est ridicule! \* तुम्हें किस कुत्ते ने काटा है? Mais c’est du dernier ridicule! \*\* तुम्हें क्या प्रतीत हुआ अगर उस नौजवान ने ... ”

किन्तु लेविन को कुत्ते ने जिस जगह काटा था, वह शायद अभी भी टीस रही थी और इसलिये ओब्लोन्स्की ने जब कारण स्पष्ट करवाना चाहा तो लेविन के चेहरे का फिर से रंग उड़ गया और उसने उसे फौरन टोकते हुए कहा –

“कृपया कारण स्पष्ट नहीं करो! मैं इसके सिवा कुछ कर नहीं सकता। मैं तुम्हारे और उसके सामने बेहद शरमिंदा हूँ। लेकिन मैं समझता हूँ कि उसे यहां से जाने पर बहुत दुख नहीं होगा और मुझे तथा मेरी पत्नी को उसकी उपस्थिति खटकती है।”

“किन्तु यह उसका अपमान है! Et puis c’est ridicule\*\*\*”

“और मेरे लिये अपमानजनक और यातनापूर्ण भी है! फिर मेरा तो कोई दोष ही नहीं है और मैं किसलिये यह व्यथा सहन करूँ!”

“तुमसे ऐसी आशा तो मैंने कभी नहीं की थी! On peut être jaloux mais à ce point, c’est du dernier ridicule!\*\*\*\*”

लेविन जल्दी से मुड़ा और स्तीवा से दूर वीथी पर चला गया और वहां अकेला ही इधर-उधर टहलने लगा। जल्द ही उसे टमटम की खड़खड़ाहट सुनाई दी और उसने वृक्षों के पीछे से देखा कि स्काटलैंडी टोपी पहने सूखी घास पर बैठा ( दुर्भाग्य से टमटम में गद्दी नहीं थी ) और गड्ढों पर उछलता हुआ वेस्लोव्स्की वीथी से होकर आगे निकल गया।

“यह और क्या मुसीबत है?” लेविन ने सोचा, जब भागते हुए घर से बाहर आनेवाले नौकर ने टमटम को रोका। यह मिस्तरी था, जिसके बारे में लेविन बिल्कुल भूल ही गया था। मिस्तरी ने वेस्लोव्स्की को प्रणाम किया, उससे कुछ कहा, इसके बाद टमटम में सवार हो गया और दोनों एक साथ चले गये।

---

\* यह तो हास्यास्पद बात है! ( फ्रांसीसी )

\*\* यह तो बहुत ही हास्यास्पद बात है! ( फ्रांसीसी )

\*\*\* फिर यह तो हास्यास्पद बात है। ( फ्रांसीसी )

\*\*\*\* आदमी से जलन हो सकती है लेकिन इस हद तक – यह तो बहुत ही हास्यास्पद है! ( फ्रांसीसी )

ओब्लोन्स्की और प्रिंसेस को लेविन की यह हरकत बहुत बुरी लगी। वह खुद भी अपने को न केवल बेहद ridicule, \* बल्कि पूरी तरह अपराधी और अपमानित अनुभव कर रहा था। किन्तु यह याद करके कि वह तथा उसकी पत्नी को कितनी यातना सहनी पड़ी थी, उसने अपने आपसे यह सवाल किया कि अगर दुबारा उसे ऐसा करना पड़ता, तो उसने कैसा व्यवहार किया होता और उसे उत्तर मिला कि बिल्कुल ऐसा ही।

इस सबके बावजूद इस दिन का अन्त होते-होते प्रिंसेस के सिवा, जो लेविन की इस हरकत को माफ़ नहीं कर सकीं, बाक़ी सभी सज़ा पाने के बाद बच्चों या कठिन औपचारिक स्वागत-समारोह के पश्चात वयस्कों की तरह असाधारण रूप से सजीव और खुश हो उठे। चुनांचे प्रिंसेस की ग़ैरहाज़िरी में वेस्लोव्स्की के निकाले जाने की बात का एक पुरानी दास्तान की तरह ज़िक्र किया जाने लगा। और डौली ने तो, जिसने अपने पिता से हास्यपूर्ण ढंग से बातें सुनाने की कला पायी थी, तीन-चार बार वेस्लोव्स्की का यही किस्सा सुनाया और वह उसमें हर बार हंसी का नमक-मसाला बढ़ाती रही। वारेन्का के तो हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गये। डौली ने बताया कि वह मेहमान के सम्मान में नये रिबन बांधकर दीवानख़ाने में गयी ही थी कि अचानक उसे टमटम की खड़खड़ सुनाई दी। और कौन था टमटम में? खुद वेस्लोव्स्की, स्काटलैंडी टोपी पहने, अपने प्रेम-गीतों और चमड़े के पायताबों के साथ सूखी घास पर आसन जमाये।

“और कुछ नहीं तो बग़्घी ही जुतवा देते। नहीं, और फिर सुनाई दिया — रुक जाइये ! मैंने सोचा कि उस पर तरस आ ही गया। मगर देखती क्या हूँ कि एक मोटे जर्मन को उसकी बग़ल में बिठा दिया गया और टमटम चल दी ... और मैं अपने रिबनों को लिये ज्यों की त्यों रह गयी।”

( १६ )

डौली ने अपने इरादे को अमली शक़ल दी और आन्ना से मिलने गयी। उसे बहन के दिल को दुखाते और उसके पति को ठेस पहुंचाते

---

\* हास्यास्पद। ( फ़्रांसीसी )

बहुत अफ़सोस हुआ। वह इस बात को अच्छी तरह समझती थी कि ब्रोन्स्की के साथ किसी भी तरह का सम्बन्ध न रखने के मामले में लेविन दम्पति कितना अधिक सही थे। किन्तु वह आन्ना के पास जाना और उसे यह दिखाना अपना कर्त्तव्य मानती थी कि उसकी परिस्थिति-परिवर्तन के बावजूद उसके प्रति उसकी भावनायें नहीं बदल सकतीं।

आन्ना के यहां जाने के मामले में उसे लेविन दम्पति पर न निर्भर होना पड़े, इसलिये डौली ने गांव से किराये के घोड़े लाने को कहा। किन्तु यह मालूम होने पर लेविन ने उसके पास जाकर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की।

“तुम ऐसा क्यों सोचती हो कि तुम्हारा वहां जाना मुझे पसन्द नहीं है? अगर मुझे ऐसा पसन्द नहीं भी है, तो यह चीज़ और भी ज़्यादा बुरी लग रही है कि तुम मेरे घोड़े नहीं ले रही हो,” उसने कहा। “तुमने एक बार भी मुझसे यह नहीं कहा कि तुम निश्चित रूप से जा रही हो। पहली बात तो यह है कि तुम्हारे लिये गांव से घोड़े किराये पर लेना मुझे अखरेगा और इससे भी बड़ी बात है कि वे लोग ऐसा करने को तैयार हो जायेंगे, किन्तु पहुंचायेंगे नहीं। मेरे यहां घोड़े हैं। अगर तुम मेरा दिल नहीं दुखाना चाहतीं, तो मेरे घोड़े ले लो।”

डौली को उसकी बात माननी पड़ी। नियत दिन पर लेविन ने अपनी बड़ी साली को भिजवाने के लिये चार घोड़े और रास्ते की चौकी पर बदली के घोड़ों की भी व्यवस्था कर दी। उसने खेत में काम करने-वाले और घुड़सवारी के घोड़ों में से उन्हें चुना और यद्यपि वे घोड़े बहुत सुन्दर नहीं थे, तथापि उसे एक दिन में मंज़िल पर पहुंचा सकते थे। इस समय जबकि प्रिंसेस और दार्ई जानेवाली थीं तथा उनके लिये भी घोड़ों की ज़रूरत थी, लेविन को ऐसा करना मुश्किल लगा, किन्तु वह मेहमाननवाज़ी के कर्त्तव्य को पूरा करते हुए डौली को अपने यहां से किराये के घोड़ों पर नहीं जाने दे सकता था। इसके अलावा वह यह जानता था कि इस यात्रा के लिये डौली को बीस रूबल किराये के रूप में देने पड़ेंगे, जो उसके लिये बहुत महत्त्व रखते हैं और डौली की कठिन आर्थिक परिस्थिति को लेविन व्यक्तिगत कठिनाई के समान अनुभव करता था।

लेविन की सलाह के मुताबिक डौली पौ फटने के पहले ही रवाना हो गयी। रास्ता अच्छा था, बगधी आरामदेह थी, घोड़े तेज़ी से दौड़ रहे थे और बगधी के बाक्स पर कोचवान के साथ नौकर की जगह मुंशी बैठा हुआ था, जिसे लेविन ने सुरक्षा की दृष्टि से साथ भेजा था। डौली की आंख लग गयी और केवल उस सराय के करीब पहुंचने पर ही, जहां घोड़े बदलने थे, उसकी आंख खुली।

धनी किसान के यहां, जहां स्विजाज्स्की के पास जाने के समय लेविन भी ठहरा था, चाय पीने और औरतों से बच्चों के बारे में तथा बूढ़े किसान से काउंट व्रोन्स्की के बारे में बातचीत करने के बाद, जिसने काउंट की बहुत प्रशंसा की, डौली दस बजे आगे चल दी। घर पर बच्चों की देखभाल में उलझे रहने के कारण उसे सोचने-विचारने का कभी कोई वक्त नहीं मिलता था। चुनांचे इस चार घंटे के सफ़र के दौरान पहले के दबे-घुटे सभी विचार उसके दिमाग में उमड़ पड़े और उसने अपनी सारी जिन्दगी पर सभी पहलुओं से नज़र डाली, जैसा कि पहले कभी नहीं किया था। खुद उसे ही अपने विचार बड़े अजीब से लगे। सबसे पहले तो उसने बच्चों के बारे में सोचा, जिनकी देखभाल करने का प्रिंसेस और खास तौर पर कीटी ने यक़ीन दिलाया था ( वह कीटी पर अधिक भरोसा कर सकती थी ), किन्तु फिर भी उसे उनकी चिन्ता बनी हुई थी। “कहीं माशा फिर से शरारत न करने लगे, ग्रीशा को कहीं घोड़ा दुलत्ती न मार दे, लिली का पेट कहीं और ज़्यादा न खराब हो जाये।” लेकिन कुछ देर बाद वर्तमान के प्रश्न निकट भविष्य के प्रश्नों की जगह लेने लगे। वह सोचने लगी कि कैसे इस जाड़े में मास्को में नया फ़्लैट लेना चाहिये, मेहमानखाने का फ़र्नीचर बदलना और बड़ी बेटी के लिये फ़र का कोट बनवाना चाहिये। इसके बाद काफ़ी आगे के सवाल उसके सामने आने लगे – कैसे बच्चों को दीन-दुनिया के क़ाबिल बनायेगी। “लड़कियों की तो बहुत फ़िक्र नहीं,” वह सोच रही थी, “लेकिन लड़के?”

“अच्छी बात है कि अब मैं ग्रीशा को पढ़ाती हूं, लेकिन यह तो सिर्फ़ इसलिये मुमकिन है कि खुद मुझे कुछ फ़ुरसत है, मैं बच्चे पैदा नहीं करती हूं। जाहिर है कि स्तीवा से तो कुछ भी उम्मीद नहीं की जा सकती। मैं भले लोगों की मदद से इन्हें रास्ते पर चला दूंगी।

लेकिन अगर फिर बच्चा जनना पड़ा ... ” और उसके दिमाग में ख्याल आया कि बाइबल का यह कथन कितना अन्यायपूर्ण है कि नारी यातनायें सहकर बच्चों को जन्म दे। “जन्म देना तो कोई बात नहीं, किन्तु उसे गर्भ में रखना – यह है यातना तो,” उसने अपनी अन्तिम गर्भावस्था और इस बच्चे की मृत्यु की कल्पना करते हुए सोचा। उसे सराय में एक जवान औरत से हुई अपनी बातचीत याद आ गयी। इस प्रश्न के उत्तर में कि उसके बच्चे हैं या नहीं उस सुन्दर युवा औरत ने उत्तर दिया था –

“एक छोरी जन्मी, भगवान ने ले ली, वा को मारी दे दी।”

“तुम्हें उसके लिये बहुत दुख है?” डौली ने पूछा।

“दुख काहे होत है? बूढ़े के ढेर सारे पोते-पोतियां। बस, चिन्ता ही बनी रहत। न काम कर पावत, न कुछ और। हाथ बंधे रहत।”

जवान औरत की सुन्दरता और खुशमिजाजी के बावजूद डौली को यह जवाब घृणापूर्ण प्रतीत हुआ था। किन्तु अब उसे ये शब्द बरबस याद हो आये। उसके इन मानवद्वेषी शब्दों में कुछ सच्चाई अवश्य थी।

“वैसे तो,” अपने पन्द्रह वर्ष के दाम्पत्य जीवन पर नज़र डालते हुए डौली सोच रही थी, “गर्भवती होना, जी मतलाना, दिमाग का कुन्द होना, सभी चीज़ों के प्रति उदासीनता आ जाना और सबसे बढ़कर यह कि शक्ल-सूरत का बिगड़ जाना। प्यारी, जवान कीटी ही इतनी भद्दी लगती है और मैं जानती हूं कि गर्भवती होने पर मैं तो बहुत ही बदसूरत हो जाती हूं। प्रसव-पीड़ा, यातना, भयानक यातना, वह अन्तिम क्षण ... इसके बाद बच्चे को दूध पिलाना, उनींदी रातें और भयानक पीड़ा ... ”

डौली चूचियों की सूजन के कारण होनेवाली पीड़ा की याद मात्र से ही सिहर उठी। हर बच्चे के मामले में ही उसे यह पीड़ा सहनी पड़ी थी। “इसके बाद बच्चों की बीमारियां, हर वक्त सिर पर मंडरानेवाला भय; इसके बाद उनका पालन-शिक्षण, उनके घिनौने रुझान (रस्पबेरियां चुनने के समय माशा की हरकत उसे याद हो आई), शिक्षा, लातीनी भाषा – यह सभी कुछ समझ में न आनेवाली और कठिन चीज़ है। और फिर इन बच्चों की मृत्यु भी हो जाती है।” फिर से उसकी कल्पना में आखिरी बेटे की मृत्यु की, जो कण्ठ-शोध से मरा था,

उसके मां के हृदय में लगातार टीस पैदा करनेवाली, कटु स्मृति सजीव हो उठी। उसे याद आया उसका दफ़नाया जाना, उसके छोटे से गुलाबी ताबूत के प्रति सभी की उदासीनता, कनपटियों पर घुंघराले बालों वाले छोटे से पीले माथे और सुनहरी लेस की सलीब वाले ताबूत के गुलाबी ढक्कन को बन्द करते समय बच्चे के खुले और आश्चर्यचकित मुंह को देखकर मां के एकाकी हृदय के टुकड़े-टुकड़े करनेवाला दर्द।

“और यह सब किसलिये? इस सब का क्या नतीजा होगा? यही कि मैं, जिसे क्षण भर को चैन नहीं मिलता, जो कभी तो गर्भवती रहती हूं, कभी बच्चे को पालती हूं, हमेशा खीजती और बड़बड़ाती हूं, खुद व्यथित हूं और दूसरों को व्यथित करती रहती हूं, पति को अच्छी नहीं लगती, इसी तरह अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दूंगी और बदकिस्मत, बुरे ढंग से पाले-पोसे तथा निर्धन बच्चे बड़े हो जायेंगे। इस समय भी अगर लेविन दम्पति के यहां गर्मी न गुज़रती तो जाने हमारा कैसे काम चलता। निश्चय ही कोस्त्या और कीटी इतनी व्यवहारकुशलता दिखाते हैं कि हमें कुछ महसूस नहीं होता। लेकिन ऐसा हमेशा तो नहीं चल सकता। उनके अपने बच्चे हो जायेंगे और तब वे हमारी मदद नहीं कर सकेंगे – अभी भी उन्हें तंगी महसूस हो रही है। तो क्या पापा हमारी मदद करेंगे, जिन्होंने अपने पास लगभग कुछ भी नहीं रखा? चुनांचे बच्चों को मैं खुद तो पैरों पर खड़ा कर नहीं सकती, केवल दूसरों की मदद से ही और वह भी अपमान सहकर। यदि अधिकतम सौभाग्य की भी कल्पना करूं – कि बच्चे और नहीं मरेंगे और मैं किसी तरह उनका पालन-पोषण कर लूंगी। तब भी मैं अधिक से अधिक यही आशा कर सकती हूं कि वे दुष्ट नहीं निकलेंगे। मैं बस इतनी ही आशा कर सकती हूं। इसके लिये कितनी यातना सहनी होगी, कितना श्रम करना होगा। पूरा जीवन नष्ट हो गया!” उसे फिर से वह याद हो आया, जो जवान किसान औरत ने कहा था और फिर से उसे बहुत बुरा सा लगा। किन्तु वह इस चीज़ से सहमत हुए बिना न रह सकी कि इन शब्दों में कुछ भोंडा सत्य जरूर है।

“क्या अभी हमें काफ़ी दूर जाना है, मिखाईल?” डौली ने अपने को भयभीत करनेवाले विचारों को भुलाने के लिये मुंशी से पूछा।

“कहते हैं कि इस गांव से सात वेर्स्ता और दूर है।”

उसके मां के हृदय में लगातार टीस पैदा करनेवाली, कटु स्मृति सजीव हो उठी। उसे याद आया उसका दफ़नाया जाना, उसके छोटे से गुलाबी ताबूत के प्रति सभी की उदासीनता, कनपटियों पर घुंघराले बालों वाले छोटे से पीले माथे और सुनहरी लेस की सलीब वाले ताबूत के गुलाबी ढक्कन को बन्द करते समय बच्चे के खुले और आश्चर्यचकित मुंह को देखकर मां के एकाकी हृदय के टुकड़े-टुकड़े करनेवाला दर्द।

“और यह सब किसलिये? इस सब का क्या नतीजा होगा? यही कि मैं, जिसे क्षण भर को चैन नहीं मिलता, जो कभी तो गर्भवती रहती हूं, कभी बच्चे को पालती हूं, हमेशा खीजती और बड़बड़ाती हूं, खुद व्यथित हूं और दूसरों को व्यथित करती रहती हूं, पति को अच्छी नहीं लगती, इसी तरह अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दूंगी और बदक्रिस्मत, बुरे ढंग से पाले-पोसे तथा निर्धन बच्चे बड़े हो जायेंगे। इस समय भी अगर लेविन दम्पति के यहां गर्मी न गुज़रती तो जाने हमारा कैसे काम चलता। निश्चय ही कोस्त्या और कीटी इतनी व्यवहारकुशलता दिखाते हैं कि हमें कुछ महसूस नहीं होता। लेकिन ऐसा हमेशा तो नहीं चल सकता। उनके अपने बच्चे हो जायेंगे और तब वे हमारी मदद नहीं कर सकेंगे — अभी भी उन्हें तंगी महसूस हो रही है। तो क्या पापा हमारी मदद करेंगे, जिन्होंने अपने पास लगभग कुछ भी नहीं रखा? चुनांचे बच्चों को मैं खुद तो पैरों पर खड़ा कर नहीं सकती, केवल दूसरों की मदद से ही और वह भी अपमान सहकर। यदि अधिकतम सौभाग्य की भी कल्पना करूं — कि बच्चे और नहीं मरेंगे और मैं किसी तरह उनका पालन-पोषण कर लूंगी। तब भी मैं अधिक से अधिक यही आशा कर सकती हूं कि वे दुष्ट नहीं निकलेंगे। मैं बस इतनी ही आशा कर सकती हूं। इसके लिये कितनी यातना सहनी होगी, कितना श्रम करना होगा। पूरा जीवन नष्ट हो गया!” उसे फिर से वह याद हो आया, जो जवान किसान औरत ने कहा था और फिर से उसे बहुत बुरा सा लगा। किन्तु वह इस चीज़ से सहमत हुए बिना न रह सकी कि इन शब्दों में कुछ भोंडा सत्य ज़रूर है।

“क्या अभी हमें काफ़ी दूर जाना है, मिखाईल?” डौली ने अपने को भयभीत करनेवाले विचारों को भुलाने के लिये मुंशी से पूछा।

“कहते हैं कि इस गांव से सात वेर्स्ता और दूर है।”

बग्घी गांव की सड़क को लांघती हुई एक छोटे-से पुल की ओर बढ़ गयी। पुल पर प्रफुल्ल देहाती नारियों का एक दल पीठों पर पूले बांधने के लिये घास के गट्टे लादे ऊंचे-ऊंचे और खुशी से बातें करता हुआ चला जा रहा था। औरतें बग्घी को देखने के लिये जिज्ञासावश रुक गयीं। अपनी ओर देखते हुए ये सारे चेहरे डौली को स्वस्थ, खुशी भरे और उसके जीवन को खुशी से चिढ़ाते हुए से प्रतीत हुए। “सभी जीते हैं, सभी जीवन का आनन्द लूटते हैं,” इन औरतों के पास से गुजरते, किसी टीले पर चढ़ते, फिर दुलकी चाल से उतरते और पुरानी बग्घी के स्प्रिंगों पर मजे से डोलते हुए डौली सोचती रही। “किन्तु मैं, जैसे कि जेलखाने से, चिन्ताओं से मुझे मारे डालनेवाली दुनिया से बाहर आई हूं और क्षण भर को अभी मुझे होश आया है। सभी जी रही हैं—ये औरतें, मेरी बहन नताली, वारेन्का और आन्ना, जिसके यहां मैं जा रही हूं, सिर्फ मैं ही इससे वंचित हूं।

“और ये आन्ना को भला-बूरा कहते हैं। किसलिये? क्या मैं उससे अच्छी हूं? कम से कम मेरा पति तो है, जिसे मैं प्यार करती हूं। वैसे तो नहीं जैसा कि मैं चाहती, फिर भी प्यार करती हूं। किन्तु आन्ना अपने पति को नहीं चाहती थी। उसका क्या अपराध है? वह जीना चाहती है। भगवान ने हमारे दिलों में प्यार का बीज बोया है। बहुत मुमकिन है कि मैंने भी ऐसा ही किया होता। मैं अभी तक यह नहीं जानती कि उस भयानक समय में, जब वह मेरे पास मास्को आई थी, मैंने उसकी बात मानकर अच्छा किया या नहीं। उस समय पति को छोड़कर मुझे नयी ज़िन्दगी शुरू करनी चाहिये थी। मैं प्यार कर सकती थी और सही अर्थ में प्यार पा सकती थी। क्या अब ज्यादा अच्छा है? मैं उसकी इज़्जत नहीं करती। मुझे उसकी ज़रूरत है,” वह पति के बारे में सोच रही थी, “और मैं उसे बर्दाश्त करती हूं। क्या यह ज्यादा अच्छा है? तब तो मैं किसी को अच्छी लग भी सकती थी, मुझमें मेरी कुछ खूबसूरती बाकी थी,” डौली सोचती जा रही थी और उसका मन हुआ कि दर्पण में अपने को देखे। उसके सफ़री थैले में आईना था और उसने चाहा कि उसे निकाले। किन्तु कोचवान और उसकी बगल में बैठे डोलते हुए क्लर्क की पीठों की ओर देखने पर उसे लगा कि अगर उनमें से किसी ने भी मुड़कर देख लिया,

तो उसे बड़ी शर्म आयेगी और इसलिये उसने दर्पण नहीं निकाला।

किन्तु दर्पण में अपने को देखे बिना ही वह यह सोच रही थी कि अभी भी देर नहीं हुई। उसे कोज़िनशेव की याद हो आई, जो उसमें खास दिलचस्पी लेता रहा था, स्तीवा के दोस्त, भले तूरोव्सिन का ध्यान आया, जिसने बच्चों के लाल बुखार से बीमार होने पर उसके साथ मिलकर उनकी देखभाल की थी और जो उसका दीवाना था। एक अन्य, एकदम जवान व्यक्ति भी था, जो, जैसा कि उसके पति ने मज़ाक़ में कहा था, उसे तीनों बहनों में सबसे ज़्यादा खूबसूरत मानता था। और डौली की कल्पना में अत्यधिक आवेगपूर्ण और असम्भव प्रेम-लीलाओं के चित्र उभरने लगे। “आन्ना ने बहुत ही अच्छा किया और कम से कम मैं तो किसी भी तरह उसकी भर्त्सना नहीं करूंगी। वह सुखी है, दूसरे व्यक्ति को सुखी बना रही है और मेरी तरह से भूली-बिसरी हुई नहीं है। निश्चय ही वह सदा की भांति ताज़ा और समझदार होगी और सभी चीज़ों के लिये उसका दिल-दिमाग़ खुला होगा,” डौली सोच रही थी और एक शरारती मुस्कान से उसके होंठों पर बल पड़ गये। ऐसा खास तौर पर इसलिये हुआ कि आन्ना की प्रेम-लीला के बारे में सोचते हुए उसने अपने प्रेम-दीवाने एक कल्पित व्यक्ति के साथ ऐसी ही प्रेम-लीला की अपने लिये भी कल्पना की। आन्ना की भांति उसने भी पति के सामने सब कुछ स्वीकार कर लिया। इस ख़बर से ओब्लोन्स्की की हैरानी और परेशानी ने उसे मुस्कराने के लिये विवश कर दिया।

इसी तरह दिवा-स्वप्न देखते हुए वह बड़ी सड़क से वोज़्द्वीजेन्स्कोये गांव की ओर ले जानेवाले मोड़ पर पहुंच गयी।

(१७)

कोचवान ने घोड़ों को रोका और दायीं तरफ़ के राई के खेत पर नज़र डाली, जहां एक घोड़ा-गाड़ी के पास कुछ किसान बैठे थे। क्लर्क ने चाहा कि कूदकर उनके पास जाये, किन्तु फिर इरादा बदल लिया और एक किसान को अपनी तरफ़ आने का इशारा करते हुए आदेशपूर्ण ढंग से पुकारा। बग़्घी के रुक जाने पर हवा बन्द हो गयी और घोड़ों के

पसीने से तर शरीरों से घुड़-मक्खियां चिपक गयीं, जो भल्लाकर उन्हें दूर भगा रहे थे। हंसियों पर पड़नेवाली चोटों के कारण सुनाई दे रही धातु की टनक शान्त हो गयी। एक किसान उठा और बग्गी की तरफ चल दिया।

“क्या जान निकल गयी?” मुंशी ने जर्जर सड़क के ऊबड़-खाबड़ हिस्से की लीकों पर धीरे-धीरे पग बढ़ाते हुए बूढ़े से ऊंची आवाज़ में भल्लाकर कहा। “ज़रा फुर्ती दिखाओ न!”

घुंघराले बालों के गिर्द छाल का टुकड़ा लपेटे और पसीने से कुछ काली हुई भुकी पीठवाले बूढ़े ने अपनी चाल तेज़ कर दी, बग्गी के करीब पहुंचा और अपने सांवले हाथ से उसका मडगार्ड थाम लिया।

“वोज़्द्वीजेन्स्कोये गांव? जागीरदार की हवेली? काउंट के यहां?” बूढ़े किसान ने प्रश्नों को दोहराया। “टीले पर चढ़त, बायें मुड़त। सीधे वहीं पहुंचत। कहां मिलन चाहत? काउंट से?”

“वे घर पर ही हैं क्या?” डौली ने यह न जानते हुए कि किसान से आन्ना के बारे में कैसे पूछे, अस्पष्ट-सा प्रश्न किया।

“घर पर ही होवत,” किसान ने अपने नंगे पांव बदलते और धूल पर पंजों के साफ़ निशान छोड़ते हुए जवाब दिया। “घर पर ही होवत,” उसने दोहराया। वह स्पष्टतः बातचीत जारी रखना चाहता था। “कल भी कुछ मेहमान आवत रह्यो। बहुत मेहमान होत उनके घर मां... तू क्या कहत है?” उसने घोड़ा-गाड़ी के पास बैठे और उसे पुकारते हुए एक छोकरे को सम्बोधित करते हुए पूछा। “हां! कुछ देर पहले घोड़ों पर चढ़िके फ़सल काटन की मसीन देखन जात रहत। अब तो घर मां ही होवत। आप कौन होत?”

“हम बहुत दूर से आये हैं,” कोचवान ने बाक्स पर चढ़ते हुए जवाब दिया। “तो दूर नहीं है?”

“कहत तो, पास मां होत। टीले पर चढ़िहो...” उसने बग्गी के मडगार्ड पर हाथ फेरते हुए फिर से रास्ते के बारे में बताया।

जवान, तगड़ा और चौड़े कंधों वाला लड़का भी पास आ गया।

“फ़सल कटाई का कुछ काम मिल जात?” उसने पूछा।

“मालूम नहीं।”

“बायें मुड़त ही सीधे वहां पहुंच जात,” किसान ने कहा, जो

स्पष्टतः उन्हें जाने नहीं देना चाहता था और बातचीत जारी रखने को उत्सुक था।

कोचवान ने बग़्घी बढ़ायी, किन्तु वे नुक्कड़ तक पहुंचे ही थे कि किसान चिल्ला उठा —

“रुकवो! ऐ भैया! बग़्घी रोक देवो!” एक साथ दो ऊंची आवाज़ें सुनाई दीं।

कोचवान ने बग़्घी रोक ली।

“वे तो आप ही इधर आवत। देखत होवे!” किसान चिल्ला उठा। “देखवो कितने मानुस होवत,” उसने चार घुड़सवारों और सैर-गाड़ी में बैठे दो लोगों की ओर इशारा करते हुए कहा।

ब्रोन्स्की और जाकी, वेस्लोव्स्की और आन्ना घोड़ों पर थे तथा सैर-गाड़ी में प्रिंसेस वर्वारा और स्विजाज्स्की बैसे थे। ये लोग सवारी करने और फ़सल काटने की नई लायी गयी मशीनों को काम करते देखने गये थे।

बग़्घी के रुक जाने पर घुड़सवार अपने घोड़ों को क़दम क़दम चलाने लगे। वेस्लोव्स्की के साथ आन्ना आगे-आगे आ रही थी। कटे अयालों और छोटी पूंछ वाले तगड़े और छोटे क़द के अंग्रेज़ी घोड़े पर सवार आन्ना बड़े इतमीनान से उसे बढ़ा रही थी। ऊंची टोपी के नीचे से बाहर निकले हुए काले बालों वाले उसके सिर, गदराये कन्धों, घुड़सवारी की काली पोशाक में उसकी पतली कमर और उसकी सारी शान्त तथा सुन्दर मुद्रा ने डौली को आश्चर्यचकित कर दिया।

शुरू में तो डौली को आन्ना का घुड़सवारी करना कुछ अशिष्ट-सा लगा। उसके मन में महिलाओं के घुड़सवारी करने के विचार के साथ कुछ हल्की चोंचलेबाज़ी का भाव जुड़ा हुआ था, जो किसी तरह की लिये तो उचित था, किन्तु जो आन्ना को उसकी वर्तमान स्थिति में शोभा नहीं देता था। किन्तु आन्ना को निकट से देखने पर उसे उसके घुड़सवारी करने के बारे में कोई आपत्ति न रही। लालित्य के साथ-साथ उसकी मुद्रा, पोशाक और गतिविधि में सब कुछ इतना सरल, शान्त और गरिमापूर्ण था कि उससे अधिक स्वाभाविक और कुछ नहीं हो सकता था।

आन्ना के करीब ही तेज़ दौड़ने के कारण उत्तेजित भूरे घोड़े पर

सवार वेस्लोव्स्की आ रहा था। वह लहराते फ़ीतों वाली स्काटलैंडी टोपी पहने था, अपनी मोटी-मोटी टांगों को सामने की ओर अकड़ाये था, स्पष्टतः अपने पर मुग्ध हो रहा था। और उसे पहचानते ही डौली के होंठों पर बरबस चुहल भरी मुस्कान आ गयी। ब्रोन्स्की इनके पीछे-पीछे आ रहा था। वह बढ़िया नस्ल के मुश्की घोड़े पर सवार था, जो सरपट दौड़ने के कारण स्पष्टतः उत्तेजित था। ब्रोन्स्की लगामों की मदद से उसे क़ाबू में कर रहा था।

इनके पीछे जाकी की पोशाक में एक छोटा-सा आदमी घोड़े पर आ रहा था। स्विट्ज़रलैंड की और प्रिंसेस वर्बारा नयी सैर-गाड़ी में थे, जिसमें ऊंचे क़द का काला घोड़ा जुता था और अपनी हल्की चाल से घुड़सवारों के निकट पहुंच रहा था।

पुरानी बग्घी के एक कोने में सिमट-सिकुड़ कर बैठी डौली की छोटी-सी आकृति को पहचानते ही आन्ना का चेहरा खुशी भरी मुस्कान से खिल उठा। वह खुशी से हुमकी, सिहरी और घोड़े को सरपट दौड़ाने लगी। बग्घी के पास पहुंचकर वह सहारे के बिना ही नीचे कूद गयी और घुड़सवारी की पोशाक का पल्लू थामे डौली की ओर भाग चली।

“मैं ऐसा ही सोचती थी, मगर इसे मानने की हिम्मत नहीं हो रही थी। यह हुई न खुशी! तुम तो मेरी प्रसन्नता की कल्पना भी नहीं कर सकतीं!” वह कभी डौली को चूमते और कभी पीछे हटकर मुस्कराते हुए कह रही थी।

“इसे कहते हैं खुशी, अलेक्सेई!” उसने घोड़े से उतरकर अपनी तरफ़ आते ब्रोन्स्की से कहा।

अपना ऊंचा भूरा टोप उतारकर ब्रोन्स्की डौली के पास गया।

“आप विश्वास नहीं करेंगी कि आपके आने से हमें कितनी अधिक खुशी हुई है,” उसने अपने शब्दों को विशेष महत्व प्रदान करते और मुस्कराकर अपने मज़बूत, सफ़ेद दांतों की झलक देते हुए कहा।

वेस्लोव्स्की ने घोड़े से नीचे उतरे बिना अपनी टोपी उतार ली और खुशी से उसके फ़ीतों को सिर के ऊपर हिला कर मेहमान का स्वागत किया।

“यह प्रिंसेस वर्बारा हैं,” सैर-गाड़ी के निकट आ जाने पर डौली की प्रश्नसूचक दृष्टि के उत्तर में आन्ना ने कहा।

“ओह !” डौली ने कहा और उसके चेहरे पर बरबस अप्रसन्नता का भाव झलक उठा।

प्रिंसेस वर्वारा उसके पति की मौसी थी। डौली उसे बहुत अरसे से जानती थी और उसकी इज्जत नहीं करती थी। उसे मालूम था कि प्रिंसेस वर्वारा जिन्दगी भर अपने अमीर रिश्तेदारों के यहां टुकड़े तोड़ती रही है, किन्तु यह देखकर कि अब वह ब्रोन्स्की के यहां रह रही है, जो उसके लिये सर्वथा पराया व्यक्ति था, वह अपने पति के कारण लज्जित हो रही थी। आन्ना ने डौली के चेहरे के भाव को देखा और सकपका उठी, उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी, उसने अपनी घुड़सवारी की पोशाक का पल्लू छोड़ दिया, जो उसके पांव में अटक गया।

डौली चुप-चुप सैर-गाड़ी के पास गयी और उसने रुखाई से प्रिंसेस वर्वारा का अभिवादन किया। स्विट्ज़रलैंड की से भी उसका पूर्व-परिचय था। उसने पूछा कि जवान बीवी वाले उसके सनकी दोस्त का क्या हाल-चाल है। पंचमेले घोड़ों तथा मरम्मत के धब्बों वाले मड़गाड़ों पर उड़ती-सी नज़र डालकर उसने महिलाओं से सैर-गाड़ी में जाने का प्रस्ताव किया।

“और मैं इस बग़्घी में चला जाऊंगा,” उसने कहा। “घोड़ा बड़ा शान्त है और प्रिंसेस खूब अच्छे ढंग से उसे चलाती हैं।”

“नहीं, आप जहां थे, वहीं रहिये,” आन्ना ने निकट आकर कहा, “हम दोनों बग़्घी में जायेंगी,” और डौली का हाथ थामकर उसे अपने साथ ले गयी।

ऐसी बढ़िया सैर-गाड़ी, जो उसे पहले कभी देखने को नहीं मिली थी, ऐसे बढ़िया घोड़े और आन्ना को घेरे हुए ऐसे सजीले और शानदार लोगों को देखकर डौली दंग रह गयी। सबसे अधिक तो उसे अच्छी तरह जानी-पहचानी और प्यारी आन्ना में हुए परिवर्तन ने चकित किया। कम पैनी दृष्टि रखनेवाली, आन्ना को पहले से न जानने और विशेषतः ऐसे विचारों में, जिनमें डौली यात्रा के दौरान खोयी रही थी, न खोयी रहनेवाली कोई दूसरी नारी आन्ना में कोई खास बात न देख पाती। किन्तु डौली इस समय उस अस्थायी सौंदर्य से हैरान रह गयी थी, जो प्यार के क्षणों में ही नारी में दिखाई देता है और जो इस

वक्त उसे आन्ना के चेहरे पर नज़र आया। उसके चेहरे की हर चीज़ – गालों और ठोड़ी के स्पष्ट गुल, होंठों के बल, मुस्कान, जो मानो चेहरे के गिर्द उड़ रही थी, आंखों की चमक, गतिविधियों का सजीलापन और चुस्ती, आवाज़ की गहराई, यहां तक कि खीभ और स्नेह का मिला-जुला वह ढंग, जिससे उसने वेस्लोव्स्की को उत्तर दिया, जो उसके घोड़े पर सवारी करने और उसे यह सिखाने की अनुमति चाहता था कि वह दायें पांव से अपनी सरपट दौड़ शुरू किया करे – यह सभी कुछ विशेष रूप से आकर्षक था और ऐसा लगता था कि वह खुद यह जानती तथा इससे खुश होती थी।

दोनों नारियों के बग़्घी में बैठ जाने पर वे दोनों ही अचानक भेंप अनुभव करने लगीं। आन्ना को डौली की अपने पर जमी हुई और प्रश्नपूर्ण दृष्टि में भेंप महसूस हो रही थी और डौली को स्विट्ज़रलैंड की “बग़्घी” कहने के बाद बरबस इस गन्दी और पुरानी बग़्घी के कारण शर्म आ रही थी, जिसमें आन्ना उसके साथ आ बैठी थी। कोचवान फ़िलिप और क्लर्क भी ऐसा ही अनुभव कर रहे थे। क्लर्क तो अपनी भेंप मिटाने के लिये महिलाओं को बग़्घी में चढ़ाते हुए दौड़-धूप करने लगा, किन्तु कोचवान फ़िलिप उदास हो गया और उसने भविष्य में ऐसी बाहरी श्रेष्ठता के रोब में न आने का इरादा बनाया। बढ़िया हल्की चाल वाले मुश्की घोड़े पर नज़र डालकर और अपने मन में यह तय कर वह व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया कि यह सैर-सपाटे के लिये तो ठीक है, मगर गर्म दिन में चालीस वेस्टर्स की मंज़िल नहीं मार सकेगा।

छकड़े के पास बैठे हुए सभी किसान उठ कर खड़े हो गये थे और जिज्ञासा तथा प्रसन्नता से अतिथि के स्वागत को देखते हुए अपनी टिप्पणियां कर रहे थे।

“ये भी परसन होत, सायद बहुत दिन भेंट न होवत,” सिर के गिर्द छाल लपेटे हुए घुंघराले बालों वाले बूढ़े ने कहा।

“चाचा गेरासिम, एह मुसकी घोड़ा हमार पूले खींच ले जात, तो मजा आवत।”

“अरे, वह बिरजिस पहने छोरी होत?” उनमें से एक ने नारियों के जीन पर सवार होते हुए वेस्लोव्स्की की ओर संकेत करते हुए कहा।

“छोरी नहीं, पुरुष होत। देखत कैसे उछलकर चढ़ि बैठयो!”

“लगत आज भपकी न आवत?”

“भपकी की काहे बात करते!” बूढ़े ने तिरछी नज़र से सूरज की तरफ़ देखते हुए कहा। “देखो दिन ढलत। हंसिये उठाइवो, घर चलवो।”

( १८ )

आन्ना ने डौली के चिन्ताओं से मुरझाये और भुर्रियों पर धूल जमे चेहरे को बहुत ध्यान से देखा और वह कहना चाहा, जो वह सोच रही थी यानी यह कि डौली दुबली हो गयी है। किन्तु यह याद करके कि खुद पहले से बेहतर हो गयी है और यह कि डौली की नज़र ने ऐसा ही कह दिया है, उसने गहरी सांस ली और अपनी चर्चा करने लगी।

“तुम मेरी ओर देख रही हो,” आन्ना ने कहा, “और सोच रही हो कि अपनी वर्तमान स्थिति में सुखी हो सकती हूँ या नहीं? तो बताऊँ। मुझे यह मानते हुए शर्म आती है, लेकिन ... मैं बेहद, बेहद सुखी हूँ। मेरे साथ तो मानो जादू जैसा कुछ हुआ है, उस सपने जैसा, जब बहुत भयानक और दिल दहलानेवाला सा कुछ दिखाई देता है और आंख खुलने पर उनका नाम-निशान तक बाक़ी नहीं रहता। मैं जाग चुकी हूँ! मैं भारी यातना, मैं उस भय को जी चुकी हूँ और अब बहुत समय से, खासकर जब से हम यहां आये हैं, मैं बहुत सुखी हूँ!” आन्ना ने प्रश्नपूर्ण सहमी-सी मुस्कान के साथ डौली की तरफ़ देखते हुए कहा।

“मैं कितनी खुश हूँ,” डौली ने मुस्कराकर, किन्तु बरबस अपनी इच्छा से अधिक रुखाई के साथ कहा। “मैं तुम्हारे लिये बहुत खुश हूँ। तुमने मुझे पत्र क्यों नहीं लिखा?”

“क्यों नहीं लिखा? इसलिये कि मेरा ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई ... तुम मेरी स्थिति को भूल जाती हो ...”

“मुझे लिखने की हिम्मत नहीं कर सकी? काश तुम्हें मालूम होता कि मैं कैसे ... मैं मानती हूँ ...”

डौली ने वे विचार व्यक्त करने चाहे, जो आज सुबह उसके दिमाग में आये थे, किन्तु न जाने क्यों, उसे अब ऐसा करना उचित नहीं प्रतीत हुआ।

“खैर, हम इसकी बाद में चर्चा करेंगी। ये सब इमारतें क्या हैं?” डौली ने बातचीत का विषय बदलने और बबूल तथा लिलक झाड़ियों की हरी बाड़ के पीछे से नज़र आनेवाली लाल और हरी छतों की ओर संकेत करते हुए पूछा। “बस्ती-सी लगती है।”

किन्तु आन्ना ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया।

“नहीं, नहीं! तुम यह बताओ कि मेरी स्थिति को कैसी मानती हो, तुम इसके बारे में क्या सोचती हो?” आन्ना ने पूछा।

“मैं मानती हूँ कि...” डौली ने कहना शुरू किया, किन्तु इसी समय आन्ना के नाटे घोड़े को दायां पांव आगे बढ़ाकर सरपट दौड़ने का अभ्यास कराकर तथा छोटी जाकेट पहने महिलाओं की नर्म चमड़े वाली काठी पर ज़ोर से ऊपर-नीचे झटके खाता और सरपट घोड़ा दौड़ाता वेस्लोव्स्की उनके पास से गुज़रा।

“बात बन रही है, आन्ना अर्कादयेव्ना,” उसने चिल्लाकर कहा।

आन्ना ने उसकी तरफ़ देखा तक नहीं। किन्तु डौली को फिर ऐसा लगा कि बग़्घी में यह लम्बी बातचीत शुरू करना ठीक नहीं होगा और इसलिये उसने अपने विचार को संक्षिप्त करते हुए कहा—

“मैं कुछ भी नहीं मानती। मैं हमेशा तुम्हें प्यार करती रही हूँ और जब कोई प्यार करता है तो उस पूरे व्यक्ति को ही, जैसा वह है, प्यार करता है, उसे नहीं, जैसा मैं चाहूंगी कि वह हो।”

आन्ना ने अपनी सहेली के चेहरे से नज़र हटा ली और आंखें सिकोड़कर (यह उसकी नयी आदत थी, जिससे डौली अपरिचित थी) डौली के इन शब्दों का पूरा सार समझने के लिये विचारों में डूब गयी। स्पष्टतः उन्हें उसी रूप में समझकर, जिसमें वह समझना चाहती थी, उसने डौली की तरफ़ देखा।

“अगर तुम्हारे कोई गुनाह होते भी,” आन्ना ने कहा, “तो तुम्हारे आने और यह शब्द कहने से वे सब माफ़ हो जाते।”

डौली ने देखा कि आन्ना की आंखें छलछला आयी हैं। डौली ने मौन रहते हुए उसका हाथ दबाया।

“तो यह इमारतें क्या हैं? कितनी अधिक हैं ये,” कुछ देर चुप रहने के बाद डौली ने अपना प्रश्न दोहराया।

“ये काम करनेवालों के घर, अश्वपालन फ़ार्म की इमारतें और अस्तबल हैं,” आन्ना ने जवाब दिया। “यहां से पार्क शुरू होता है। यह सभी कुछ बुरी हालत में था, मगर अलेक्सेई ने मानो इनको नया जीवन दे डाला है। अपनी इस जागीर से उसे बहुत प्यार है और खेतीबारी के काम में बहुत ही दिलचस्पी ले रहा है, जिसकी मैंने कभी आशा नहीं की थी। वैसे कमाल का आदमी है वह! जिस काम को भी हाथ में लेता है, उसे खूब अच्छी तरह से सिरे चढ़ाता है। वह न केवल ऊब ही महसूस नहीं करता, बल्कि जी-जान से काम में जुट जाता है। जैसा कि अब मैं उसे जानती हूं, वह हिसाब-किताब का पक्का, कुशल प्रबन्धक और खेतीबारी के मामले में बढ़िया मालिक बन गया है। इस चीज़ में तो वह कंजूस भी है। लेकिन खेतीबारी के मामले में ही। जहां हजारों-लाखों का सवाल होता है, वह ज़रा परवाह नहीं करता,” आन्ना ने खुशी और चालाकी भरी उस मुस्कान के साथ कहा, जो नारियों के होंठों पर अकसर तब दिखाई देती है, जब वे सिर्फ़ उन्हीं को मालूम होनेवाले अपने प्रिय व्यक्ति के गुणों की चर्चा करती हैं। “वह बहुत बड़ी इमारत देख रही हो न? वह नया अस्पताल है। मेरे ख्याल में इस पर एक लाख से अधिक रूबल खर्च होंगे। यह अब उसका dada\* है। और जानती हो कि यह शौक्र पैदा कैसे हुआ? शायद किसानों ने कम लगान पर उन्हें चरागाह दे देने को कहा, उसने इन्कार कर दिया और इसके लिये मैंने उसे कंजूस होने का ताना दिया। ज़ाहिर है कि इसी कारण नहीं, बल्कि सभी चीज़ों को ध्यान में लेते हुए उसने यह दिखाने के लिये कि वह कंजूस नहीं है, अस्पताल बनवाना शुरू कर दिया। तुम चाहो तो इसे *c'est une petitesse\*\** कह सकती हो, लेकिन मैं उसे इसके लिये और भी ज़्यादा प्यार करती

---

\* सबसे बड़ा शौक्र। ( फ़्रांसीसी )

\*\* मामूली बात। ( फ़्रांसीसी )

हूँ। अभी तुम हवेली देखोगी। वह दादा के ज़माने की बनी हुई है और उसमें बाहर से कोई तबदीली नहीं हुई है।”

“कितनी बढ़िया है हवेली!” डौली ने बाग़ के पुराने वृक्षों की विभिन्न रंगी हरियाली के पीछे से दिखाई देती स्तम्भोंवाली सुन्दर इमारत को देखते और बरबस हैरान होते हुए कहा।

“सचमुच बढ़िया है न? हवेली की छत पर से बहुत ही बढ़िया नज़ारा दिखाई देता है।”

इनकी बग्घी बजरी-बिछे और फूलों से सजे एक अहाते में दाखिल हुई, जहाँ दो आदमी फूलों की एक क्यारी के गिर्द खुरदरे और सरंध्र पत्थर लगा रहे थे, और बग्घी हवेली-द्वार के सम्मुख छतदार ओसारे में जाकर रुक गई।

“वे लोग पहुंच भी गये हैं!” आन्ना ने इसी समय यहाँ से ले जाये जा रहे घुड़सवारी के घोड़ों की ओर देखते हुए कहा। “सच यह घोड़ा बहुत अच्छा है न? यह नाटा घोड़ा मेरा सबसे प्यारा है। इसे इधर लाओ और चीनी की डली भी दे दो। काउंट कहां हैं?” आन्ना ने लपककर बाहर आनेवाले दो बावर्दी नौकरों से पूछा। “लो वह आ गया!” आन्ना ने वेस्लोव्स्की के साथ अपनी तरफ़ आते ब्रोन्स्की पर नज़र डालते हुए कहा।

“इन्हें आप किस कमरे में ठहरायेंगी?” ब्रोन्स्की ने आन्ना को सम्बोधित करते हुए फ़्रांसीसी में पूछा और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना डौली का एक बार फिर स्वागत किया और इस बार उसका हाथ चूमा। “मेरे ख़्याल में छज्जे वाले बड़े कमरे में।”

“ओह नहीं, वह बहुत दूर है! कोनेवाला ज़्यादा अच्छा रहेगा, हम अधिक मिलजुल सकेंगी। आओ चलें,” आन्ना ने नौकर द्वारा लायी गयी चीनी की डली अपने प्यारे घोड़े को खिलाते हुए डौली से कहा।

“Et vous oubliez votre devoir,\*” वह वेस्लोव्स्की से बोली, जो ब्रोन्स्की के साथ ही बाहर आया था।

---

\* आप अपना कर्त्तव्य भूल जाते हैं। ( फ़्रांसीसी )

“Pardon, j'en ai tout plein les poches,\*” उसने मुस्कराकर जाकेट की जेब में हाथ डालते हुए जवाब दिया।

“Mais vous venez trop tard,\*\*” आन्ना ने रुमाल से हाथ साफ़ करते हुए कहा, जिस पर घोड़े ने चीनी की डली खाते हुए थूक लगा दिया था। इसके बाद आन्ना ने डौली से पूछा —

“काफ़ी दिनों के लिये आयी हो न तुम? एक दिन के लिये? नहीं, यह नहीं हो सकता!”

“मैंने ऐसे ही वादा किया है और फिर बच्चे...” डौली ने बग़्घी से अपना थैला लेने और इस कारण भी भेंप अनुभव करते हुए कहा कि उसे अपने चेहरे के धूल से अटे होने की चेतना थी।

“नहीं मेरी प्यारी डौली, यह नहीं चलेगा... खैर, देखा जायेगा। आओ चलें, भीतर चलें।” और आन्ना उसे उसके कमरे में ले गयी।

यह मेहमानों के लिये वह शानदार कमरा नहीं था, जिसका ब्रोन्स्की ने प्रस्ताव किया था, बल्कि वह था, जिसके लिये आन्ना ने डौली से क्षमा-याचना की थी। क्षमा-याचना की अपेक्षा रखनेवाला यह कमरा इतने बढ़िया ढंग से सजा हुआ था कि डौली को कभी ऐसे कमरे में रहने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ था और वह उसे विदेश के श्रेष्ठतम होटलों की याद दिलाता था।

“मेरी प्यारी, कितनी अधिक खुश हूं मैं!” अपनी घुड़सवारी की पोशाक में ही कुछ देर को डौली के पास बैठते हुए आन्ना ने कहा। “तुम मुझे अपने लोगों के बारे में बताओ। स्तीवा से तो मेरी कुछ देर के लिये मुलाकात हुई थी। लेकिन वह बच्चों के बारे में कुछ बता ही नहीं सकता। मेरी लाड़ली तान्या कैसी है? सोचती हूं कि काफ़ी बड़ी हो गयी होगी वह तो?”

“हां, बहुत बड़ी,” डौली ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया और खुद ही इस बात से हैरान हो गयी कि वह अपने बच्चों के बारे में ऐसे रुखाई से जवाब दे रही है। “हम लेविन दम्पति के यहां बहुत मज़े से रह रहे हैं,” उसने इतना और जोड़ दिया।

---

\* क्षमा करें, मेरी तो उससे जेबें भरी हैं। ( फ़्रांसीसी )

\*\* लेकिन आप बहुत देर से सामने आते हैं। ( फ़्रांसीसी )

“अगर मुझे मालूम होता कि तुम मुझसे घृणा नहीं करती हो...” आन्ना बोली, “तो तुम सभी हमारे यहां आकर रह सकते थे। आखिर स्तीवा तो अलेक्सेई का पुराना और पक्का दोस्त है,” आन्ना ने इतना और कहा तथा अचानक लज्जारुण हो गयी।

“हां, लेकिन हम इतने अच्छे ढंग से...” डौली ने घबराहट महसूस करते हुए जवाब दिया।

“वैसे मैं तो खुशी के मारे ऊल-जलूल बातें कर रही हूं। हां, मगर तुम्हारे आने से मैं बेहद खुश हूं!” आन्ना ने फिर से डौली को चूमते हुए कहा। “तुमने अभी तक मुझे यह नहीं बताया कि तुम मेरे बारे में क्या और कैसे विचार रखती हो, और मैं यह जानना चाहती हूं। लेकिन मैं खुश हूं कि तुम मुझे उसी रूप में देख सकोगी, जैसी मैं हूं। मेरे लिये सबसे बड़ी बात तो यह है कि कोई ऐसा न समझे मानो मैं कुछ सिद्ध करना चाहती हूं। मैं कुछ भी सिद्ध करना नहीं चाहती, मैं तो केवल जीना चाहती हूं, अपने सिवा किसी का बुरा नहीं करना चाहती। इसका तो मुझे हक है न? खैर, यह लम्बी बात-चीत है और हम सभी चीजों की अच्छी तरह से चर्चा करेंगी। अब मैं जाकर कपड़े बदलती हूं और तुम्हारी मदद के लिये नौकरानी को भेज देती हूं।”

## ( १६ )

अकेली रह जाने पर डौली ने एक गृह-स्वामिनी की दृष्टि से अपने कमरे का जायजा लिया। हवेली के करीब आते और उसमें से गुजरते हुए तथा अब अपने कमरे में उसने जो कुछ देखा था, उसने उसके मन पर बड़ी खुशहाली, शान-शौकत और उस नये यूरोपीय ऐश्वर्य की छाप छोड़ी, जिसके बारे में उसने केवल अंग्रेजी उपन्यासों में पढ़ा था, किन्तु जिसे रूस और खास तौर पर देहात में कभी देखा नहीं था। दीवारों पर चिपकी नयी फ्रांसीसी अबरी से लेकर क्रालीन तक, जो सारे फ़र्श पर बिछा था, सब कुछ नया था। स्प्रिंगों वाले पलंग पर गद्दा बिछा था और छोटे-छोटे तकियों पर रेशमी गिलाफ़ चढ़े थे। संगमरमर का वाशबेसिन, ड्रेसिंग-टेबुल, कोच, मेजें, अंगीठी

पर कांसे की घड़ी, खिड़कियों और दरवाजों पर भारी परदे — सभी कुछ बहुत महंगा और नया था।

सेवा के लिये आनेवाली बनी-ठनी नौकरानी भी उसी तरह से महंगी और नयी थी, जैसे सारा कमरा। वह डौली की तुलना में ज्यादा फ़ैशनदार फ़ाक पहने थी और उसका केश-विन्यास भी बेहतर था। डौली को उसकी नम्रता, साफ़-सुथरापन और सेवा-तत्परता अच्छी लगी, मगर उसके साथ कुछ अटपटापन-सा भी महसूस हुआ। उसे उसके सामने पैवन्द लगे उस ब्लाउज़ के लिये भी शर्म आयी, जो उसने अपनी मुसीबत को भूल से अपने साथ ले लिया था। उसे उन्हीं पैवन्दों और रफू की हुई जगहों के लिये अब शर्म आ रही थी, जिनके कारण घर पर वह गर्व महसूस करती थी। घर पर उसे यह स्पष्ट था कि छः ब्लाउज़ों के लिये पैसठ कोपेक गज़वाले २४ गज़ नैनसुख कपड़े की ज़रूरत होती है और कढ़ाई-सिलाई के बिना कपड़े पर ही पन्द्रह रूबल खर्च हो जाते हैं और यह पन्द्रह रूबल बहुत महत्व रखते हैं। किन्तु नौकरानी के सामने शर्म तो नहीं, अटपटापन ज़रूर महसूस हो रहा था।

बहुत पुरानी परिचित आन्नुशका के आने पर डौली को बड़ी राहत मिली। बनी-ठनी नौकरानी की आन्ना को ज़रूरत थी और इसलिये आन्नुशका डौली के पास रह गयी।

आन्नुशका स्पष्टतः डौली के आने से बहुत खुश थी और लगातार बातें करती जा रही थी। डौली ने महसूस किया कि वह अपनी मालकिन की स्थिति और खास तौर पर आन्ना के प्रति काउंट की मुहब्बत और वफ़ादारी के बारे में अपनी राय बताने को बहुत उत्सुक है, किन्तु वह ज्योंही यह चर्चा शुरू करती, डौली बड़े यत्न से उसे रोक देती।

“मैं तो आन्ना अर्काद्वेन्ना के साथ ही बड़ी हुई हूं और मुझे उनसे अधिक कुछ भी प्यारा नहीं। हम कोई नहीं हैं उनके बारे में भले-बुरे का निर्णय करनेवाले। लेकिन लगता है कि काउंट उन्हें ऐसे प्यार करते हैं ...”

“यदि सम्भव हो, तो कृपया यह धुलने को दे दो,” डौली ने उसे टोका।

“जो आज्ञा। हमारे यहां छोटी-मोटी धुलाई के लिये दो औरतें

खास तौर पर काम करती हैं और बड़े कपड़े मशीन में धोये जाते हैं। काउंट तो खुद ही हर चीज़ का ध्यान करते हैं। ओह, कैसे अच्छे पति हैं ...”

आन्ना के आने पर डौली को खुशी हुई, क्योंकि उसके साथ ही आन्नुशका की ज़बान भी बन्द हो गयी।

आन्ना ने मलमल का बहुत ही सादा फ़ाक पहन लिया था। डौली ने इस सादे फ़ाक को बहुत ग़ौर से देखा। वह जानती थी कि ऐसी सादगी का क्या अर्थ है और उसको कितनी अधिक क़ीमत चुकाकर हासिल किया जाता है।

“पुरानी परिचिता है न,” आन्ना ने आन्नुशका के बारे में कहा।

आन्ना अब किसी तरह की भेंप महसूस नहीं कर रही थी। वह बिल्कुल शान्त थी और उसकी गतिविधि में किसी तरह का तनाव नहीं था। डौली ने देखा कि आन्ना अब पूरी तरह उस घबराहट से मुक्त हो गयी है, जो उसके आने पर उसने अनुभव की थी और उसने वह सतही तथा उदासीनता का अन्दाज़ अपना लिया है, जिसके फलस्वरूप उस आन्तरिक कक्षा का दरवाज़ा बन्द हो गया है, जिसमें उसकी भावनायें और अन्तरंग विचार सुरक्षित थे।

“तो तुम्हारी बिटिया कैसी है, आन्ना?” डौली ने पूछा।

“आनी?” (अपनी बेटी आन्ना को वह इसी नाम से बुलाती थी।) “बिल्कुल ठीक-ठाक है। तुम उसे देखना चाहती हो? चलो, मैं दिखाती हूँ। उसकी धायों-आयों को लेकर बहुत भंभटें रहीं,” आन्ना ने बताना शुरू किया। “हमारे यहां एक इतालवी धाय थी। अच्छी, मगर बेहद बेवकूफ़! हमने उसे इटली भेज देना चाहा, लेकिन बच्ची उसकी इतनी अभ्यस्त हो गयी थी कि हम अभी तक उसको यहां रखे हुए हैं।”

“लेकिन आपने मामले को कैसे सुलभाया?” डौली ने यह जानना चाहा कि बच्ची का कुलनाम क्या है। पर आन्ना के माथे पर अचानक बल पड़े देखकर उसने अपने प्रश्न का आशय बदल दिया। “तो कैसे मामले को सुलभाया? उसका दूध छुड़वा दिया?”

किन्तु आन्ना उसका भाव समझ गयी थी।

“तुम यह नहीं पूछना चाहती थीं? तुम उसके कुलनाम के बारे में

पूछना चाहती थीं? ठीक है न? यह चीज़ अलेक्सेई भी परेशान कर रही है। बच्ची का कोई कुलनाम नहीं है। मेरा मतलब है कि वह कारेनिना है,” आन्ना ने ऐसे आंखें सिकोड़कर कहा कि उसकी आपस में मिली हुई बरौनियां ही दिखाई दे रही थीं। “खैर,” अचानक उसका चेहरा खिल उठा, “हम इन सब बातों की बाद में चर्चा करेंगी। आओ, मैं उसे तुम्हें दिखाती हूँ। Elle est très gentille.\* वह तो घुटनियों भी चलती है।”

सारे घर के जिस ठाट-बाट ने डौली को आश्चर्यचकित किया था, बच्ची के कमरे में जाने पर उससे उसकी हैरानी और भी ज्यादा बढ़ गयी। यहां इंगलैंड से मंगवाई गयी छोटी-छोटी गाड़ियां थीं, बच्चे को चलना सिखलानेवाले साधन, घुटनियां चलने के लिये बिलियार्ड मेज़ की तरह ख़ास तौर पर बनवाया गया सोफ़ा, भूले और ख़ास तथा नयी क्रिस्म के स्नान टब थे। ये सभी चीज़ें अंग्रेज़ी, मज़बूत, बढ़िया ढंग की और स्पष्टतः बहुत महंगी थीं। कमरा बहुत बड़ा, ऊंची छतवाला और रोशन था।

जब ये दोनों कमरे में दाख़िल हुईं, तो सिर्फ़ शमीज़ पहने बच्ची मेज़ के करीब कुर्सी पर बैठी हुई शोरबा खा रही थी, जिससे उसने अपनी सारी छाती भिगो ली थी। बच्ची के कमरे की नौकरानी, एक रूसी लड़की, बच्ची को शोरबा खिला रही थी और स्पष्टतः उसके साथ-साथ खुद भी खा रही थी। न तो धाय और न तो आया ही वहां थी। वे दोनों बग़ल वाले कमरे में थीं और वहां से अजीब सी फ़्रांसीसी भाषा में, वे केवल इसी भाषा में बोल-बतिया सकती थीं, उनकी बातचीत सुनाई दे रही थी।

आन्ना की आवाज़ सुनकर एक सजी-धजी, लम्बे क़द, अप्रिय चेहरे और कपटी भाव वाली अंग्रेज़ आया जल्दी से अपने सुनहरे बालों को झटकती हुई कमरे में आयी और आते ही अपनी सफ़ाई देने लगी, यद्यपि आन्ना ने उसे किसी बात के लिये भी दोष नहीं दिया था। आन्ना के हर शब्द के जवाब में अंग्रेज़ आया ने जल्दी-जल्दी “Yes, my lady\*\*” कहा।

\* वह बड़ी प्यारी है। ( फ़्रांसीसी )

\*\* जो हुक्म मालकिन। ( अंग्रेज़ी )

इस चीज़ के बावजूद कि काली आंखों, काले बालों, लाल गालों और मज़बूत, कसी हुई त्वचा तथा लाल बदन वाली बच्ची ने कठोरता से उसके अजनबी चेहरे की ओर देखा, फिर भी वह डौली को बहुत अच्छी लगी। उसके ऐसे अच्छे स्वास्थ्य से उसे ईर्ष्या भी हुई। यह बच्ची जैसे घुटनियां चलती थी, वह भी उसे बहुत अच्छा लगा। डौली का एक भी बच्चा तो ऐसे घुटनियां नहीं चला था। फ़ाक को पीछे की ओर टांगकर जब इस बच्ची को कालीन पर बिठा दिया गया, तो वह अद्भुत रूप से प्यारी प्रतीत हुई। एक शावक की तरह अपनी काली चमकीली आंखों से बड़ों को देखती और स्पष्टतः इस बात से खुश होती हुई कि उसे मुग्ध भाव से देखा जा रहा है, उसने मुस्कराते और टांगों को अगल-बगल फैलाये हुए फुर्ती से बांहों का सहारा लिया, अपने पृष्ठभाग को आगे किया और फिर हाथों के बल आगे बढ़ चली।

किन्तु बच्ची के कमरे का सामान्य वातावरण और विशेषतः अंग्रेज़ आया तो डौली को बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। डौली यह मानने को तैयार थी कि आन्ना को, जो लोगों के बारे में इतना अच्छा ज्ञान रखती है, अपनी बिटिया के लिये ऐसी भद्दी और मन पर बुरा प्रभाव डालने-वाली यह अंग्रेज़ आया इसलिये रखनी पड़ी कि ऐसे अस्वाभाविक परिवार में, जैसा कि आन्ना का था, कोई अन्य अच्छी आया काम करने को राज़ी नहीं होगी। इसके अलावा, कुछ ही शब्दों से डौली यह भी समझ गयी कि आन्ना, धाय, आया और बच्ची के बीच विशेष हेल-मेल नहीं है और मां का बच्ची के कमरे में आना एक असाधारण-सी बात थी। आन्ना ने बच्ची को उसका एक खिलौना देना चाहा, मगर वह उसे मिला नहीं।

सबसे ज़्यादा हैरानी की बात तो यह थी कि बिटिया के कितने दांत निकले हैं, आन्ना इस सवाल का भी सही जवाब न दे पायी। अन्तिम दो दांतों के बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं था।

“कभी-कभी मेरे दिल पर इस बात से बहुत भारी गुज़रती है कि मानो मेरी यहां कोई आवश्यकता ही नहीं है,” आन्ना ने बच्ची के कमरे से बाहर निकलते और दरवाज़े के करीब रखे हुए खिलौनों से बच निकलने के लिये अपनी पोशाक के दामन को सम्भालते हुए कहा। “पहले बच्चे के मामले में ऐसा नहीं था।”

“ इस बारे में मेरा इसके उलट ख्याल था , ” डौली ने सहमी-सी आवाज़ में कहा ।

“ अरे नहीं ! तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं उससे , सेर्योभा से मिली थी , ” आन्ना ने आंखें सिकोड़कर मानो कहीं दूर देखते हुए कहा । “ खैर , इसकी हम बाद में चर्चा करेंगी । तुम यकीन नहीं करोगी कि मैं उस भूखे जैसी हूं , जिसके सामने अचानक तरह-तरह की लज़ीज़ चीज़ों से भरी हुई तश्तरी रख दी जाती है और उसकी समझ में यह नहीं आता कि वह किस चीज़ से भोजन शुरू करे । लज़ीज़ चीज़ों से भरी हुई तश्तरी तुम हो और वे बातें हैं , जो मैं अन्य किसी के साथ नहीं कर सकती थी । मेरी समझ में नहीं आता कि कौनसी बात पहले शुरू करूं । Mais je ne vous ferai grâce de rien.\* मुझे सब कुछ बताना है । हां , तुमसे उन लोगों की चर्चा तो करनी चाहिये , जिनसे तुम हमारे यहां मिलोगी , ” आन्ना ने कहा । “ महिलाओं से शुरू करती हूं । प्रिंसेस वर्बारा । तुम उसे जानती हो और उसके बारे में तुम्हारी और स्तीवा की राय भी मुझे मालूम है । स्तीवा का कहना है कि उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य मौसी कातेरीना पाब्लोव्ना की तुलना में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना है । यह सही है , किन्तु वह बड़ी उदार है और मैं उसकी बहुत कृतज्ञ हूं । पीटर्सबर्ग में ऐसा समय भी आया था , जब मुझे unchaperon\*\* की बड़ी सख्त जरूरत थी । उस वक्त इसी ने मेरा साथ दिया । वह सचमुच ही दयालु है । उसने मेरी स्थिति को आसान बना दिया । मुझे लग रहा है कि वहां , पीटर्सबर्ग में तुम मेरी स्थिति की सारी कठिनाई को नहीं समझ पा रही हो , ” उसने इतना और जोड़ दिया । “ यहां मैं बिल्कुल शान्त और सुखी हूं । पर हम इसकी बाद में चर्चा करेंगी । अभी तो बाक़ी लोगों के बारे में बताती हूं । प्रिंसेस के बाद स्विजाज्स्की है — वह कुलीनों का मुखिया और बहुत भला आदमी है , पर उसे अलेक्सेई से कुछ काम है । तुम तो समझती हो कि अब , जब हम गांव में रहने लगे हैं , तो अपनी सम्पत्ति के आधार पर अलेक्सेई बहुत प्रभावशाली व्यक्ति हो सकता है । इसके बाद तुश्केविच

---

\* लेकिन मैं तुम पर रहम नहीं करूंगी । ( फ़्रांसीसी )

\*\* संगिनी । ( फ़्रांसीसी )

है—तुम उससे मिल चुकी हो, वह बेत्सी के यहां होता था। अब उसे वहां से चलता कर दिया गया है और वह हमारे पास आ गया है। अलेक्सेई के कथनानुसार वह उन लोगों में से है, जिन्हें अगर वैसा ही माना जाये, जैसा वे अपने को दिखाना चाहते हैं, तो बहुत प्यारे होते हैं, *et puis, il est comme il faut,\** जैसा कि प्रिंसेस वर्बारा कहती है ... इसके बाद वेस्लोव्स्की है ... उसे तुम जानती हो। बड़ा ही प्यारा लड़का है,” आन्ना ने कहा और शरारत भरी मुस्कान से उसके होंठों पर बल-सा पड़ गया। “लेविन के साथ उसका वह क्या अजीब-सा क्रिस्सा हो गया था? वेस्लोव्स्की ने अलेक्सेई को बताया था, मगर हमें विश्वास नहीं होता। *Il est très gentil et naïf,\*\**” आन्ना ने उसी तरह की मुस्कान से कहा। “पुरुषों को मनबहलाव और अलेक्सेई को अपने इर्द-गिर्द लोग चाहिये। इसलिये मैं इन सब को यहां बनाये रखना चाहती हूं। यह जरूरी है कि हमारे यहां हंसी-खुशी और रंग-रौनक का वातावरण बना रहे, ताकि अलेक्सेई को किसी नवीनता की इच्छा न हो। इसके बाद तुम हमारे कारिन्दे से मिलोगी। वह जर्मन है, बहुत अच्छा और अपना काम जाननेवाला आदमी है। अलेक्सेई उसे बहुत मानता है। इसके बाद डाक्टर है, जवान आदमी, पूरी तरह निहिलिस्ट हो, ऐसी बात तो नहीं, मगर छुरी से खाना खाता है ... डाक्टर बहुत अच्छा है। इसके बाद वास्तुकार है ... *Une petite cour.\*\*\**”

## (२०)

“प्रिंसेस, लीजिये डौली आ गयी, आप उससे मिलने को इतनी अधिक इच्छुक थीं,” आन्ना ने डौली के साथ पत्थर के बने हुए बड़े छज्जे में जाकर कहा, जहां प्रिंसेस वर्बारा छाया में बैठी हुई कशीदाकारी के फ्रेम पर झुकी हुई काउंट ब्रोन्स्की की आरामकुर्सी के लिये एक गिलाफ़ काढ़ रही थी। “डौली कहती है कि वह शाम के भोजन के

---

\* इसके अलावा, वह भला आदमी है। ( फ़्रांसीसी )

\*\* वह बहुत प्यारा और सरल हृदय व्यक्ति है। ( फ़्रांसीसी )

\*\*\* छोटा-सा दरबार है। ( फ़्रांसीसी )

पहले कुछ भी नहीं खाना चाहती, लेकिन आप नाश्ता लाने का आदेश दे दें और मैं जाकर अलेक्सेई को ढूंढती हूं और उन सभी को यहां ले आती हूं।”

प्रिंसेस वर्बारा ने स्नेहपूर्वक और कुछ बड़प्पन-सा दिखाते हुए डौली का स्वागत किया और तत्काल यह स्पष्ट करने लगी कि वह आन्ना के यहां आकर क्यों रहने लगी है। उसने बताया कि वह हमेशा ही अपनी बहन कातेरीना पाव्लोव्ना की तुलना में, जिसने आन्ना को पाला-पोसा था, आन्ना को अधिक प्यार करती रही है और अब, जब सभी ने आन्ना से मुंह मोड़ लिया है, वह इस सबसे कठिन अस्थायी समय में उसकी मदद करना अपना कर्त्तव्य समझती है।

“आन्ना का पति जब उसे तलाक़ दे देगा, तो मैं फिर से अपना एकाकी जीवन बिताने लगूंगी, लेकिन अभी तो मैं कुछ काम आ सकती हूं और मेरे लिये यह चाहे कितना ही मुश्किल क्यों न हो, मैं अपना कर्त्तव्य पूरा करूंगी, दूसरे लोगों जैसी नहीं हो सकती। कितनी अच्छी हो तुम, कितना अच्छा किया तुमने कि आ गयीं! बहुत ही अच्छे दम्पति की तरह ये दोनों रहते हैं। हम लोग नहीं, भगवान ही इनके अच्छे-बुरे का निर्णय करेंगे। फिर तुम बिरियुज़ोव्स्की और अवेन्येवा को याद करो... निकान्द्रोव, वसील्येव तथा मामोनोवा, लीज़ा नेप्तूनोवा को याद करो। आखिर किसी ने भी उनके बारे में कुछ नहीं कहा? अन्त में यही हुआ कि सभी ने अपने यहां उनका स्वागत-सत्कार किया। और फिर, *c'est un intérieur si joli, si comme il faut. Tout-à-fait à l'anglaise. On se réunit le matin au breakfast et puis on se sépare.*\* शाम के खाने तक हर कोई जो चाहता है, वह करता है। सात बजे शाम का खाना होता है। स्तीवा ने बहुत अच्छा किया कि तुम्हें भेज दिया। उसे इनके साथ मेल-जोल रखना चाहिये। वैसे तो वह अपनी मां और भाई के ज़रिये सब कुछ कर सकता है। इसके अलावा वे भलाई का भी बहुत-सा काम करते हैं। उसने तुम से अपने

---

\* इतना प्यारा और ढंग का वातावरण है। बिल्कुल अंग्रेज़ी ढंग का। सुबह के नाश्ते के लिये सब जमा होते हैं और फिर बिखर जाते हैं। ( फ़्रांसीसी )

अस्पताल की चर्चा नहीं की ? Ce sera admirable,\* सब कुछ पेरिस से लाया गया है। ”

आन्ना के आने से इन दोनों की बातचीत में बाधा पड़ गयी। उसने मर्दों को बिलियार्ड के कमरे में जा पकड़ा था और अब उनको साथ लिये हुए छज्जे में लौट आई थी। शाम के खाने में अभी बहुत वक्त बाकी था, मौसम सुहावना था और इसलिये शेष बच रहे दो घण्टे बिताने के लिये तरह-तरह के सुभाव प्रस्तुत किये गये। ब्रोन्स्की के इस वोज्द्वीजेन्स्कोये गांव में समय बिताने के अनेक ढंग थे, मगर वे सभी पोक्रोव्स्कोये से भिन्न थे।

“Une partie de lawn tennis,\*\*” अपनी मधुर मुस्कान बिखराते हुए वेस्लोव्स्की ने सुभाव दिया। “आन्ना अर्कादयेव्ना, हम दोनों फिर से जोड़ीदार होंगे। ”

“नहीं, बहुत गर्मी है। यह ज्यादा अच्छा रहेगा कि बाग का चक्कर लगाया जाये और फिर नाव की सैर हो, डौली को तट दिखाये जायें,” ब्रोन्स्की ने सुभाव दिया।

“मैं तो हर चीज़ के लिये राज़ी हूं,” स्वियाज्स्की ने कहा।

“मेरे ख्याल में तो डौली को कुछ देर तक घूमना ही सबसे ज्यादा अच्छा लगेगा। ठीक है न ? और उसके बाद हम नाव में सैर करेंगे,” आन्ना ने कहा।

चुनांचे ऐसा ही तय पाया गया। वेस्लोव्स्की और तुश्केविच यह विश्वास दिलाकर स्नान-घाट की ओर चल दिये कि वहां नाव तैयार करवाकर उनकी राह देखेंगे।

आन्ना और स्वियाज्स्की तथा डौली और ब्रोन्स्की – जोड़े बनाकर संकरे उद्यान-पथ पर चल पड़े। डौली एकदम जिस नये वातावरण में आ गयी थी, उसमें कुछ भेंप और परेशानी अनुभव कर रही थी। सैद्धान्तिक रूप से वह आन्ना की करनी को न केवल उचित मानती थी, बल्कि उसका समर्थन भी करती थी। नैतिक दृष्टि से सर्वथा दोषहीन और सच्चरित्रा नारियों के साथ जैसे अक्सर होता है, जो नैतिक जीवन

---

\* बड़ा ही प्रशंसनीय होगा वह। ( फ़्रांसीसी )

\*\* लॉन टेनिस की एक बाज़ी हो जाये। ( फ़्रांसीसी )

की एकरूपता से ऊब जाती हैं, डौली भी अपराधपूर्ण प्यार को दूर से न केवल क्षमा करती थी, बल्कि उसे आन्ना से ईर्ष्या भी होती थी। इसके अलावा, वह आन्ना को दिल से चाहती थी। किन्तु वास्तव में आन्ना को ऐसे लोगों के बीच देखकर, जो उसके हेतु सर्वथा पराये थे और जिनके अच्छे तौर-तरीक़े डौली के लिये बिल्कुल नयी चीज़ थे, उसे कुछ अटपटा-सा लग रहा था। प्रिंसेस वर्बारा तो उसे खास तौर पर अच्छी नहीं लग रही थी, जिसने उसे यहां मिलनेवाली सभी आराम-सुविधाओं के बदले में उन्हें सब कुछ क्षमा कर दिया था।

सामान्यतया, सिद्धान्त के रूप में डौली आन्ना के ऐसा करने का समर्थन करती थी, किन्तु जिस व्यक्ति के लिये ऐसा किया गया था, उसको देखना उसे अप्रिय लग रहा था। वैसे भी ब्रोन्स्की उसे कभी अच्छा नहीं लगा था। वह उसे बहुत घमण्डी मानती थी और धन के सिवा उसे उसमें कुछ भी तो ऐसा नज़र नहीं आता था, जिस पर वह घमण्ड कर सकता। किन्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध वह यहां, अपने घर में उसे पहले से अधिक प्रभावित कर रहा था और डौली उसके साथ बेतकल्लुफी नहीं महसूस कर सकती थी। उसके साथ उसे वैसी ही अनुभूति हो रही थी, जो ब्लाउज़ के मामले में नौकरानी को लेकर अनुभव हुई थी। जैसे नौकरानी के सामने उसे पैवन्द के कारण लज्जा तो नहीं, अटपटापन अनुभव हुआ था, वैसे ही ब्रोन्स्की के साथ उसे अपने पर लगातार शर्म तो नहीं आ रही थी, पर अटपटापन महसूस हो रहा था।

डौली भेंप रही थी और बातचीत का विषय ढूंढ़ रही थी। यह मानते हुए भी कि घमण्ड के कारण ब्रोन्स्की को उसके घर और बाग़ की तारीफ़ अच्छी नहीं लगेगी, किन्तु बातचीत का कोई अन्य विषय न मिलने पर उसने यह कह ही दिया कि उसका घर उसे बहुत पसन्द आया है।

“हां, यह बहुत सुन्दर इमारत है और पुरानी, अच्छी शैली में बनी हुई,” ब्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

“प्रवेश-द्वार के सामने बना हुआ आंगन मुझे बहुत अच्छा लगा है। यह ऐसे ही था?”

“ओह नहीं!” ब्रोन्स्की ने कहा और उसका चेहरा खिल

उठा। “काश, आपने इस वसन्त में यह आंगन देखा होता!”

शुरू में बड़ी सावधानी से, मगर बाद में अधिकाधिक रंग में आते हुए ब्रोन्स्की घर और बाग को सुन्दर बनानेवाले सुधारों की विभिन्न तफ़्सीलों की ओर डौली का ध्यान दिलाने लगा। साफ़ दिखाई दे रहा था कि अपनी हवेली और बाग को बेहतर और सुन्दर बनाने के लिये उसने बड़ी मेहनत की है, वह एक नये व्यक्ति के सामने इस बारे में डींग मारने की आवश्यकता अनुभव कर रहा है और डौली की प्रशंसा से उसे हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

“अगर आप अस्पताल देखना चाहती हैं और थक नहीं गयीं, तो वह पास में ही है। आइये चलें,” ब्रोन्स्की ने इस बात के लिये आश्वस्त होने के विचार से डौली को ध्यान से देखा कि कहीं उसे ऊब तो नहीं अनुभव हो रही।

“तुम चलोगी, आन्ना?” ब्रोन्स्की ने उससे पूछा।

“हम चलेंगे न?” आन्ना ने स्विजाज्स्की से पूछा। “*Mais il ne faut pas laisser le pauvre वेस्लोव्स्की et तुश्केविच se morfondre là dans le bateau.\** किसी को भेजकर उन्हें सूचित कर देना चाहिये। हां, यह स्मारक है, जो वह यहां छोड़ जायेगा,” उसी चालाकी भरी और सब कुछ जाननेवाली उस मुस्कान के साथ उसने डौली से कहा, जिस मुस्कान को होंठों पर लाकर उसने पहले अस्पताल की चर्चा की थी।

“ओह, बहुत बड़ा काम है यह!” स्विजाज्स्की ने कहा। किन्तु इसलिये कि वह ब्रोन्स्की की हां में हां मिलानेवाला प्रतीत न हो, उसने तत्काल हल्की-सी आलोचनात्मक टिप्पणी भी कर दी। “फिर भी एक बात की मुझे हैरानी होती है, काउंट,” उसने कहा, “आम लोगों के स्वास्थ्य के लिये इतना कुछ करते हुए आप स्कूलों के मामले में बड़े उदासीन हैं।”

“*C’est devenu tellement commun les écoles.\*\**” ब्रोन्स्की ने जवाब दिया। “वैसे असली कारण यह नहीं है, मैं इस रौ में बह गया

---

\* किन्तु बेचारे वेस्लोव्स्की और तुश्केविच को नाव में प्रतीक्षा करवाते रहना उचित नहीं। ( फ़्रांसीसी )

\*\* स्कूल तो बहुत ही आम बात हो गये हैं। ( फ़्रांसीसी )

हूं। अस्पताल के लिये इस ओर आइये,” ब्रोन्स्की ने वीथी से बगल को जानेवाले एक संकरे मार्ग की तरफ़ इशारा करते हुए डौली से कहा।

महिलाओं ने अपनी छतरियां खोल लीं और बगलवाले संकरे मार्ग पर बढ़ चलीं। कुछ मोड़ मुड़ने और एक फाटक को लांघने के बाद डौली को अपने सामने एक ऊंचे स्थान पर लाल रंग की बड़ी, बढ़िया ढंग की और लगभग पूरी तरह निर्मित इमारत दिखाई दी। लोहे की छत, जिस पर अभी तक रोगन नहीं हुआ था, तेज़ धूप में आंखों को चकाचौंध करती हुई चमक रही थी। निर्मित इमारत के करीब ही दूसरी इमारत बन रही थी, जिसके इर्द-गिर्द मचान बनी हुई थी, लबादे पहने हुए तख्तों पर खड़े राज ईंटों की चिनाई कर रहे थे, लकड़ी के छोटे-छोटे कठौतों में से चूने का लेप करते हुए उन्हें करनियों से समतल कर रहे थे।

“कितनी तेज़ी से आपके यहां काम हो रहा है!” स्विद्याज्स्की ने कहा। “पिछली बार मैं जब यहां आया था, तो छत नहीं डाली गयी थी।”

“पतझर तक सब कुछ तैयार हो जायेगा। भीतर तो लगभग सभी काम पूरा हो चुका है,” आन्ना ने कहा।

“और यह नयी इमारत क्या है?”

“यह डाक्टर की रिहायश और डिस्पेंसरी के लिये है,” ब्रोन्स्की ने जवाब दिया और शार्ट कोट पहने वास्तुकार को अपनी ओर आते देखकर उसने महिलाओं से क्षमा-याचना की और उसकी तरफ़ बढ़ चला।

उस गढ़े से बचकर निकलते हुए, जहां से मज़दूर लोग गारा ले रहे थे, वह वास्तुकार के सामने जा खड़ा हुआ और ऊंची आवाज़ में उससे बातचीत करने लगा।

“अग्रभाग नीचा ही रहेगा,” ब्रोन्स्की ने आन्ना के प्रश्न का उत्तर दिया।

“मैंने कहा था न कि नींव को ऊंचा करना चाहिये,” आन्ना ने कहा।

“हां, जाहिर है कि ऐसा करना बेहतर होता,” वास्तुकार ने सहमत होते हुए कहा, “मगर अब तो कुछ नहीं हो सकता।”

“मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी है,” आन्ना ने स्विद्याज्स्की को

जवाब दिया, जो आन्ना की वास्तुकला-सम्बन्धी जानकारी से आश्चर्य-चकित हो गया था। “चाहिये तो यह था कि नयी इमारत अस्पताल की इमारत के साथ मेल खाती होती। किन्तु इसका बाद में ख्याल आया और इसे किसी योजना के बिना ही शुरू कर दिया गया।”

वास्तुकार के साथ बातचीत समाप्त करने के बाद ब्रोन्स्की महिलाओं के पास लौट आया और उन्हें अस्पताल के भीतर ले चला।

बेशक बाहर अभी कारनिसें बनायी जा रही थीं और नीचे वाली मंजिल पर रंग-रोगन हो रहा था, फिर भी ऊपर वाला भाग लगभग पूरी तरह तैयार हो चुका था। लोहे का चौड़ा जीना चढ़कर इन्होंने लैंडिंग पार की और पहले बड़े कमरे में दाखिल हुए। दीवारों पर संगमरमर के ढंग से प्लस्टर किया गया था, पूरे शीशों वाली बड़ी-बड़ी खिड़कियां लग चुकी थीं और सिर्फ तख्तों का फर्श अभी पूरा नहीं हुआ था। एक वर्गाकार तख्ते पर रन्दा फेरनेवाले बढइयों ने काम रोक दिया ताकि उन डोरियों को खोलकर, जिनसे उन्होंने अपने बाल बांध रखे थे, आगन्तुक महानुभावों का अभिवादन कर सकें।

“यह रोगियों को दर्ज करने का कमरा है,” ब्रोन्स्की ने कहा। “यहां ताकों वाले स्टैंड, मेज़ और अलमारी के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा।”

“इधर आइये, यहां से जायेंगे। खिड़की के निकट नहीं जाइये,” आन्ना ने कहा और छूकर देखा कि रोगन सूख गया या नहीं। “अलेक्सेई, रोगन तो सूख भी गया,” उसने इतना और जोड़ दिया।

रोगियों को दर्ज करने के कमरे से वे दालान में गये। यहां ब्रोन्स्की ने इन्हें वायु-संचार की नयी व्यवस्था दिखाई। इसके बाद उसने संगमरमर के स्नानागार और असाधारण स्प्रिंगो वाले पलंग, रोगियों के कमरे, स्टोर, चादर-गिलाफ़ रखने का कमरा, नये ढंग की अंगीठियां और ट्रालियां दिखायीं, जो शोर किये बिना दालान में से चीजें ला और ले जा सकेंगी। बहुत-सी अन्य वस्तुएं भी देखने को मिलीं। स्विट्ज़रलैंड की तो नवीनतम चीजों के जानकार के रूप में इनका मूल्य आंकता रहा। डौली अब तक कभी न देखी गयी चीजों पर हैरानी जाहिर करती और सब कुछ समझने की इच्छा से उनके बारे में सविस्तार पूछ-ताछ करती रही, जिससे ब्रोन्स्की को स्पष्टतः बड़ी खुशी होती थी।

“मेरे ख्याल में तो रूस में ठीक ढंग से बना हुआ यही एकमात्र अस्पताल होगा,” स्विजाज्स्की ने कहा।

“अपके यहां प्रसूति-विभाग नहीं होगा क्या?” डौली ने पूछा।  
“गांव में इसकी इतनी अधिक जरूरत होती है। मैं अक्सर...”

अपनी शिष्टता के बावजूद ब्रोन्स्की ने डौली को टोक दिया।

“यह प्रसूति-भवन नहीं, अस्पताल है और छूत के रोगों को छोड़कर बाकी सभी तरह के रोगी इसमें इलाज करवा सकेंगे,” ब्रोन्स्की ने कहा। “और इसे देखिये...” इतना कहकर ब्रोन्स्की ने पहियों वाली वह कुर्सी डौली की ओर ठेल दी, जो कुछ ही समय पहले स्वस्थ होते हुए रोगी के लिये विदेश से मंगवायी गयी थी। “आप देखिये,” वह कुर्सी में बैठकर उसे चलाने लगा। “रोगी अभी चलने में असमर्थ है, कमजोर है या उसकी टांगें अस्वस्थ हैं, किन्तु उसे हवाखोरी की जरूरत है, वह इस कुर्सी में बैठकर बाहर जा सकता है...”

डौली सभी चीजों में दिलचस्पी ले रही थी, सब कुछ उसे बहुत अच्छा लग रहा था, किन्तु अपने इस स्वाभाविक और सरलतापूर्ण उत्साह के कारण स्वयं ब्रोन्स्की सबसे अधिक उसके मन को छू रहा था। “हां, यह बहुत अच्छा और प्यारा आदमी है,” कभी-कभी उसकी बात पर कान न देते, किन्तु उसे गौर से देखते और उसके चेहरे के भावों को समझने की कोशिश करते और अपने को आन्ना की जगह रखते हुए वह सोचती। अपनी इस सजीवता में उसे ब्रोन्स्की अब बहुत अच्छा लग रहा था और वह समझ गयी कि क्यों आन्ना को उससे प्यार हो गया था।

(२१)

“नहीं, मेरे ख्याल में तो प्रिंसेस थक गयी हैं और घोड़ों में इनकी कोई दिलचस्पी नहीं है,” ब्रोन्स्की ने आन्ना से कहा, जिसने यह सुझाव दिया था कि अश्वपालन फ़ार्म तक चला जाये, जहां स्विजाज्स्की नया घोड़ा देखना चाहता था। “आप दोनों जायें, मैं प्रिंसेस को घर पहुंचा देता हूं और हम बातचीत भी कर लेंगे,” उसने विचार प्रकट किया, “बशर्ते कि आपको यह पसन्द हो,” उसने डौली की राय जाननी चाही।

“घोड़ों के बारे में मैं कुछ भी नहीं समझती और आपसे बातचीत करके मुझे बड़ी खुशी होगी,” डौली ने कुछ हैरान होते हुए जवाब दिया।

ब्रोन्स्की के चेहरे से डौली यह भांप गयी थी कि वह उससे कुछ चाहता है। उसका अनुमान सही था। जैसे ही फाटक लांघकर ये दोनों फिर से बाग में पहुंचे, वैसे ही ब्रोन्स्की ने उस तरफ नज़र दौड़ाई, जिधर आन्ना गयी थी और यह यकीन हो जाने पर कि वह न तो उनकी बातें सुन सकती है और न ही उन्हें देख सकती है, उसने कहना शुरू किया —

“आपने यह अनुमान लगा लिया होगा कि मैं आपसे कुछ बातचीत करना चाहता हूं?” ब्रोन्स्की ने हंसती हुई आंखों से डौली की ओर देखकर कहा। “मैं भूल नहीं कर रहा हूं कि आप आन्ना की सहेली हैं।” ब्रोन्स्की ने अपना टोप उतारा, जेब से रुमाल निकाला और उससे गंजे होते हुए सिर को पोंछा।

डौली ने कोई उत्तर नहीं दिया और केवल सहमे-सहमे उसकी ओर देखा। ब्रोन्स्की के साथ एकाकी रह जाने पर सहसा उसे भय अनुभव हुआ — हंसती आंखें और चेहरे का कठोर भाव उसके मन में दहशत पैदा कर रहे थे।

ब्रोन्स्की उसके साथ क्या बात करेगा, इस बारे में तरह-तरह के ख्याल उसके दिमाग में आ रहे थे। “शायद वह कहेगा कि मैं बच्चों को लेकर उनके यहां गर्मियां बिताने आ जाऊं और मुझे इन्कार करना होगा। शायद यह कहे कि मैं मास्को में आन्ना के लिये मिलने-जुलने वालों का हलका बना दूं... यह भी हो सकता है कि वेस्लोव्स्की और आन्ना के प्रति उसके रवैये की चर्चा करे? सम्भव है कि कीटी की बात चलाये और कहे कि उसके सम्मुख वह अपने को अपराधी अनुभव करता है?” डौली केवल अप्रिय बातों की ही कल्पना कर रही थी और ब्रोन्स्की उसके साथ जो बात करना चाहता था, उसका अनुमान नहीं लगा सकी।

“आन्ना पर आपका इतना अधिक प्रभाव है, वह आपको इतना अधिक प्यार करती है,” ब्रोन्स्की ने कहा, “मेरी सहायता कीजिये।”

डौली प्रश्नसूचक और सहमी-सी दृष्टि से ब्रोन्स्की के ओजपूर्ण

चेहरे को देख रही थी, जो लिंडन वृक्षों की छाया के बीच से छनने वाली धूप में कभी पूरी तरह और कभी आंशिक रूप से चमक उठता था। वह प्रतीक्षा कर रही थी कि ब्रोन्स्की आगे क्या कहेगा, मगर वह बजरी में अपनी छड़ी को खोंसता हुआ चुपचाप उसकी बगल में चलता जा रहा था।

“अगर आप हमारे यहां आई हैं, तो आन्ना की पुरानी सहेलियों में से आप ही एकमात्र ऐसी हैं—मैं प्रिंसेस वर्बारा की गिनती नहीं करता हूं—जो मेरी समझ के अनुसार इसलिये यहां नहीं आई हैं कि हमारी स्थिति को सामान्य समझती हैं, बल्कि इसलिये आयी हैं कि इस स्थिति की सारी यातना को समझते हुए भी उसे प्यार करती हैं और उसकी मदद करना चाहती हैं। मैंने ठीक समझा है न?” ब्रोन्स्की ने डौली की ओर मुड़कर देखते हुए पूछा।

“हां, ठीक समझा है,” डौली ने अपनी छतरी बन्द करते हुए जवाब दिया, किन्तु...

“नहीं,” उसने डौली को टोक दिया और यह भूलते हुए कि डौली को अटपटी स्थिति में डाल देगा, अनजाने ही रुक गया और डौली को भी रुकना पड़ा। “आन्ना की स्थिति की सारी कठिनाई मुझसे ज्यादा और अधिक तीव्रता से अन्य कोई अनुभव नहीं करता। यदि आप मुझे दिल रखनेवाला व्यक्ति मानने का सम्मान प्रदान करें, तो यह बात आपकी समझ में आ जायेगी। मैं ही इस स्थिति का कारण हूं और इसलिये इसे अनुभव करता हूं।”

“मैं इस चीज़ को समझती हूं,” डौली ने कहा और जिस हार्दिकता तथा दृढ़ता से ब्रोन्स्की ने ये शब्द कहे थे, वह बरबस मुग्ध भाव से उसकी ओर देखे बिना न रह सकी। “किन्तु मुझे डर है कि चूंकि आप अपने को इस स्थिति के लिये जिम्मेदार समझते हैं, इसे बढ़ा-चढ़ाकर महसूस करते हैं,” डौली ने कहा। “सोसाइटी में आन्ना की स्थिति कठिन है, यह मैं समझती हूं।”

“सोसाइटी में तो नरक जैसी स्थिति है!” माथे पर बल डालकर उसने उदासी और जल्दी से कहा। “पीटर्सबर्ग में दो हफ्तों के दौरान आन्ना ने जो नैतिक यातनायें सहੀं, उनसे बदतर यातनाओं की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती... और मैं आपसे इस पर विश्वास करने का अनुरोध करता हूं।”

“लेकिन यहां, जब तक आप और आन्ना ... मेरा मतलब आप सोसाइटी की आवश्यकता अनुभव नहीं करते ...”

“सोसाइटी!” ब्रोन्स्की ने तिरस्कारपूर्वक कहा। “क्या जरूरत हो सकती है मुझे सोसाइटी की ...”

“तब तक—और ऐसा हमेशा भी हो सकता है—आप खुश और सुख-चैन से हैं। मैं देख सकती हूं कि आन्ना सुखी है, बिल्कुल सुखी है और वह मुझसे यह कह भी चुकी है,” डौली ने मुस्कराकर कहा और यह कहते हुए अनजाने ही उसके मन में यह सन्देह पैदा हुआ कि वास्तव में ही आन्ना सुखी है या नहीं।

किन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि ब्रोन्स्की को इस बारे में कोई सन्देह नहीं था।

“हां, हां,” ब्रोन्स्की ने कहा, “मैं जानता हूं कि अपनी यातनाओं के बाद वह फिर से जी उठी है, वह सुखी है। वह वर्तमान में सुखी है। किन्तु मुझे? .. मुझे उसका डर है, जो हमारे सामने आगे आनेवाला है ... क्षमा चाहता हूं, आप चलना चाहती हैं?”

“नहीं, मेरे लिये सब बराबर है।”

“तो आइये, यहां बैठ जायें।”

डौली उद्यान-पथ के कोने में रखी हुई बेंच पर बैठ गयी। ब्रोन्स्की उसके सामने खड़ा हो गया।

“मैं देखता हूं कि वह सुखी है,” ब्रोन्स्की ने यह बात दोहरायी और आन्ना वास्तव में सुखी है या नहीं, इस सन्देह ने डौली को पहले से भी अधिक अभिभूत कर दिया। “किन्तु क्या स्थिति को ऐसे ही रहने दिया जा सकता है? हमने अच्छा किया या बुरा किया, यह अलग बात है, लेकिन दांव चला जा चुका है,” ब्रोन्स्की ने रूसी के बजाय फ्रांसीसी भाषा का उपयोग आरम्भ करते हुए कहा, “और अब जीवन भर के लिये हम एक रिश्ते में बंध चुके हैं। हमारे लिये सबसे पावन प्रेम-सूत्रों में हम बंधे हुए हैं। हमारी एक बच्ची है, हमारे और बच्चे भी हो सकते हैं। लेकिन कानून और हमारी सारी परिस्थितियां ऐसी हैं कि हजारों उलझनें सामने आ सकती हैं, जिन्हें सारी यातनाओं और आजमाइशों के बाद, जिनका उसे सामना करना पड़ा, वह पूरे मन से चैन पाती हुई अब नहीं देखती और देखना नहीं

चाहती। और यह समझ में भी आता है। किन्तु मैं तो इनकी ओर से आंखें नहीं मूंद सकता। कानूनी तौर पर मेरी बेटी मेरी बेटी नहीं, बल्कि कारेनिन की बेटी है। मैं ऐसा धोखा नहीं चाहता!” ब्रोन्स्की ने जोरदार नकारात्मक संकेत से कहा और उदासी भरी प्रश्नसूचक दृष्टि से डौली की ओर देखा।

डौली ने जवाब में कुछ भी न कहकर केवल उसकी ओर देखा। ब्रोन्स्की कहता गया।

“कल मेरे यहां बेटे का जन्म हो सकता है, मेरे बेटे का, और वह भी कानूनी तौर पर कारेनिन होगा। वह न तो मेरे नाम और न सम्पत्ति का ही वारिस होगा। हमारा पारिवारिक जीवन चाहे कितना भी सुखी क्यों न हो और हमारे कितने भी बच्चे क्यों न हों, मेरे और उनके बीच कोई सम्बन्ध नहीं होगा। वे कारेनिन माने जायेंगे। ज़रा सोचिये तो कितनी बोझिल और कितनी भयानक है यह स्थिति! मैं आन्ना से इसकी चर्चा करने की कोशिश करके देख चुका हूं। वह इससे झल्ला उठती है। वह यह नहीं समझती और मैं उससे सब कुछ कह नहीं सकता। अब एक और पहलू को लीजिये। आन्ना के प्यार से मैं सौभाग्यशाली हूं, मगर मुझे कोई काम-काज भी तो करना चाहिये। मैंने अपने लिये यह काम ढूंढ़ लिया, मुझे इस पर गर्व है और राज-दरबार और फ़ौज के अपने भूतपूर्व साथियों के काम-काज की तुलना में इसे कहीं बेहतर मानता हूं। निश्चय ही इस काम को मैं उनके काम से कभी बदलना नहीं चाहूंगा। मैं यहीं रहता हुआ अपना काम करता हूं, बहुत खुश हूं, सन्तुष्ट हूं और खुशी के लिये हमें इससे अधिक कुछ नहीं चाहिये। इस तरह का काम मुझे पसन्द है। Cela n'est pas un pis-aller.\* बात इसके विपरीत है...”

डौली से यह छिपा न रहा कि अपनी बात स्पष्ट करते हुए इस स्थल पर ब्रोन्स्की कुछ गड़बड़ा गया है और उसके इस विषय-परिवर्तन को वह अच्छी तरह से नहीं समझ पा रही थी। फिर भी वह यह अनुभव कर रही थी कि अगर उसने अपनी उन दिली बातों की चर्चा शुरू कर दी है, जो वह आन्ना से नहीं कह पाता था, तो अब वह सब

---

\* सो भी इसलिये नहीं कि कोई दूसरा, बेहतर काम नहीं है। (फ़्रांसीसी)

कुछ कहता जा रहा है और गांव में अपने काम-काज का प्रश्न भी उतना ही उसकी आन्तरिक भावनाओं के अन्तर्गत आता है, जितना आन्ना के साथ उसके सम्बन्धों का प्रश्न।

“तो मैं अपनी बात जारी रखता हूं,” ब्रोन्स्की ने सम्भलते हुए कहा। “सबसे बड़ी बात तो यह है कि काम करते हुए आदमी को इस बात का विश्वास होना चाहिये कि उसका काम उसके साथ ही समाप्त नहीं हो जायेगा, कि उसके वारिस होंगे—मगर मेरे मामले में तो ऐसा नहीं है। आप ऐसे आदमी की स्थिति की कल्पना करें, जिसे पहले से ही यह मालूम हो कि उसके और उस नारी के बच्चे, जिसे वह प्यार करता है, उसके न होकर किसी ऐसे दूसरे व्यक्ति के बच्चे माने जायेंगे, जो उनसे नफ़रत करता है और उनसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहता। यह तो बड़ी भयानक बात है न!”

सम्भवतः अत्यधिक उद्वेलित होने के कारण ब्रोन्स्की खामोश हो गया।

“हां, यह तो स्पष्ट है, मैं इस बात को समझती हूं। किन्तु आन्ना क्या कर सकती है?” डौली ने पूछा।

“आपका यह प्रश्न मुझे मेरी बातचीत के उद्देश्य की ओर लाता है,” यत्नपूर्वक अपने को शान्त करते हुए ब्रोन्स्की ने कहा। “आन्ना कर सकती है, यह उस पर निर्भर है... ज़ार से बच्चे को गोद लेने का अनुरोध करने के लिये भी तलाक़ ज़रूरी है। और यह आन्ना के बस की बात है। आन्ना का पति तलाक़ के लिये राज़ी था—तब तो आपके पति ने इसकी सारी व्यवस्था कर ही दी थी। मैं जानता हूं कि वह अब भी इन्कार नहीं करेगा। सिर्फ़ उसे ख़त लिखने की बात है। तब तो उसने साफ़ ही यह जवाब दिया था कि अगर आन्ना ऐसी इच्छा ज़ाहिर करेगी, तो वह इन्कार नहीं करेगा। निश्चय ही यह तो ऐसी बगुलाभगती जैसी कठोरता है,” ब्रोन्स्की ने दुखी होते हुए कहा, “जो इस तरह के हृदयहीन लोग ही प्रदर्शित कर सकते हैं। उसे मालूम है कि उसके प्रत्येक स्मरण से ही उसे कितनी यातना होती है और आन्ना को अच्छी तरह जानते-समझते हुए भी वह उससे पत्र लिखने की मांग करता है। मैं ख़ूब समझता हूं कि आन्ना के लिये यह बड़ी यातना होगी। मगर कारण इतने महत्वपूर्ण हैं कि *passer pardessus*

toutes ces finesses de sentiment. Il y va du bonheur et de l'existence d'Anne et de ses enfants.\* मैं अपनी बात नहीं

करूंगा, यद्यपि मेरे मन पर भी भारी गुज़र रही है, बहुत भारी गुज़र रही है," ब्रोन्स्की ने मानो किसी को इसलिये धमकाते हुए कहा कि उसके मन पर भी बहुत भारी गुज़र रही है। "तो प्रिंसेस, मैं बड़ी बेहयाई से आपके दामन का सहारा ले रहा हूँ। आन्ना को उसे पत्र लिखने और तलाक़ मांगने को राज़ी करने के लिये मेरी मदद कीजिये।"

"हां, करूंगी," डौली ने कारेनिन के साथ अपनी अन्तिम भेंट का सजीव स्मरण करते और कुछ सोचते हुए कहा। "हां, करूंगी," आन्ना को ध्यान में लाते हुए उसने दृढ़तापूर्वक उक्त शब्दों को दोहराया।

"आन्ना पर अपने प्रभाव का उपयोग कीजिये, किसी भी तरह उससे पत्र लिखवा दीजिये। मैं उसके साथ इसकी चर्चा नहीं करना चाहता, ऐसा करने में लगभग असमर्थ हूँ।"

"ठीक है, मैं उससे बात करूंगी। लेकिन वह खुद इस बारे में क्यों नहीं सोचती?" डौली ने प्रश्न किया और अचानक, न जाने क्यों, उसे आन्ना की आंखें सिकोड़ने की नयी, अजीब आदत की याद हो आयी। और उसे याद आया कि आन्ना तभी आंखें सिकोड़ती थी, जब उसके जीवन के बहुत ही अन्तरंग पक्ष से सम्बन्धित कोई मामला सामने होता था। "वह तो मानो अपने जीवन के बारे में आंखें सिकोड़ती है, ताकि सब कुछ न देखे," डौली ने सोचा। "ज़रूर बात करूंगी, खुद अपने और उसके लिये उससे बात करूंगी," डौली ने ब्रोन्स्की के आभार-प्रदर्शन के उत्तर में कहा।

वे दोनों घर की ओर चल दिये।

(२२)

डौली को पहले से ही घर में पाकर आन्ना ने बहुत ग़ौर से उसकी आंखों में देखा मानो ब्रोन्स्की के साथ हुई उसकी

---

\* भावनाओं की इस सारी नज़ाकत को लांघना होगा। सवाल आन्ना और उसके बच्चों के सुख और भाग्य का है। ( फ़्रांसीसी )

बातचीत के बारे में पूछ रही हो, मगर शब्दों में इसे व्यक्त नहीं किया।

“लगता है कि शाम के खाने का वक्त हो गया,” आन्ना ने कहा। “हम तो अभी ढंग से मिल ही नहीं पायीं। मैं रात पर भरोसा किये बैठी हूँ। अब कपड़े बदलने के लिये जाना चाहिये। मेरे ख्याल में तुम भी ऐसा करोगी। हमने निर्माण-स्थल पर अपनी पोशाकें गन्दी कर ली हैं।”

डौली अपने कमरे में चली गयी और वहां उसे बरबस हंसी आ गयी। उसके पास बदलने को कुछ था ही नहीं, क्योंकि वह अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहने हुई थी। फिर भी खाने की मेज़ पर बैठने के लिये अपनी कुछ तैयारी का दिखावा करने के लिये उसने नौकरानी से कहा कि वह उसकी पोशाक को साफ़ कर दे, उसने कफ़ और फ़ीते बदल लिये और सिर को लेस से सजा लिया।

“मैं तो बस, यही कुछ कर सकती थी,” डौली ने मुस्कराकर आन्ना से कहा, जो तीसरा, इस बार भी बहुत ही सादा फ़ाक पहनकर बाहर निकली थी।

“हां, हम यहां बहुत ही औपचारिकता दिखाते हैं,” आन्ना ने अपनी सजधज के लिये मानो क्षमा मांगते हुए कहा। “अलेक्सेई तुम्हारे आने से इतना ज़्यादा खुश है, जितना बहुत कम ही किसी चीज़ से होता है। वह निश्चय ही तुम्हें प्यार करता है,” उसने इतना और जोड़ दिया। “तुम थक तो नहीं गयीं?”

भोजन के पहले बातचीत करने का समय नहीं था। दीवानखाने में जाने पर उन्होंने देखा कि प्रिंसेस वर्बारा और काले कोट पहने हुए मर्द लोग वहां पहले से ही उपस्थित हैं। वास्तुकार फ़ाक-कोट पहने था। ब्रोन्स्की ने डाक्टर और कारिन्दे से डौली का परिचय करवाया। वास्तुकार से तो अस्पताल में ही उसने परिचय करवा दिया था।

गोल चेहरे और कलफ़ लगी सफ़ेद टाई की लौ देते हुए मोटे बटलर ने यह सूचना दी कि मेज़ लगा दी गयी है और महिलायें उठकर खड़ी हो गयीं। ब्रोन्स्की ने स्विजाज्स्की से अनुरोध किया कि वह आन्ना का हाथ थाम ले और खुद उसने डौली को सहारा दिया। वेस्लोव्स्की ने तुश्केविच से पहले प्रिंसेस वर्बारा का हाथ थाम लिया और इसलिये तुश्केविच, कारिन्दा और डाक्टर भोजन-कक्ष की ओर अकेले ही चल पड़े।

खाने की मेज़ , भोजन-कक्ष , बर्तन , नौकर , शराब और खाने-पीने की चीज़ें — सभी कुछ न केवल इस घर के नये ऐश्वर्यपूर्ण वातावरण के अनुरूप था , बल्कि और भी अधिक बढ़िया और नवीन था । डौली अपने लिये नये ऐश्वर्य के इस सारे सामान को बहुत ध्यान से देख रही थी और गृह-संचालिका के नाते अनजाने ही हर चीज़ की तफ़्सील को अपने मन पर अंकित कर रही थी — यद्यपि यहां देखी जानेवाली किसी भी चीज़ का अपने घर में कभी उपयोग कर पाने की उसे आशा नहीं थी , क्योंकि इस तरह का वैभव उसके जीवन ढंग की सीमा से कहीं ऊपर था — और उसके मन में यह प्रश्न आ रहा था कि किसने और कैसे यह सब कुछ किया । वेस्लोव्स्की , उसका अपना पति , यहां तक कि स्विजाज्स्की और बहुत से अन्य लोग भी , जिन्हें वह जानती थी , इस बारे में कभी नहीं सोचते थे और बात का पक्का यक़ीन रखते थे कि हर भला मेज़बान अपने मेहमानों को यह महसूस करवाना चाहता है कि उस घर में जो इतनी सुव्यवस्था है , उसके लिये उसे यानी मेज़बान को कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी और सब कुछ अपने आप ही हो गया है । किन्तु डौली तो यह जानती थी कि बच्चों के नाश्ते के लिये अपने आप तो दलिया भी तैयार नहीं होता और इसलिये इतनी जटिल और बढ़िया व्यवस्था करने के लिये ज़रूर किसी ने बहुत ध्यान दिया है । ब्रोन्स्की ने मेज़ को जैसे ग़ौर से देखा , सिर हिलाकर बटलर को इशारा किया , गर्म या ठंडा सूप चुनने के लिये जिस तरह डौली से अनुरोध किया , इन सब चीज़ों से वह समझ गयी कि सभी कुछ ब्रोन्स्की की देखभाल और चिन्ताओं का नतीजा है । स्पष्टतः आन्ना का इसमें इतना ही योग था , जितना वेस्लोव्स्की का । वह , स्विजाज्स्की , प्रिंसेस और वेस्लोव्स्की समान रूप से अतिथि थे और बड़े मज़े से उन सब चीज़ों का लुत्फ़ उठा रहे थे , जो उनके लिये तैयार की गयी थीं ।

आन्ना तो केवल बातचीत के मामले में ही मेज़बान थी । यह बातचीत खाने की मेज़ के गिर्द बैठे थोड़े-से लोगों , सो भी कारिन्दे और वास्तुकार जैसे लोगों की उपस्थिति में मेज़बान के लिये बहुत कठिन थी । ये लोग एकदम दूसरी दुनिया से सम्बन्ध रखनेवाले लोग थे , इस अनभ्यस्त ऐश्वर्यपूर्ण वातावरण में अपनी घबराहट पर क़ाबू पाने के लिये यत्नशील थे तथा सामान्य बातचीत में देर तक भाग नहीं ले

सकते थे। ऐसी कठिन बातचीत को आन्ना सामान्य चतुराई, स्वाभाविकता, यहां तक कि बड़े मजे से, जैसे डौली को लगा, जारी रख रही थी।

इस विषय पर बातचीत चल पड़ी कि कैसे तुश्केविच और वेस्लो-व्स्की—ये दोनों ही नौका-विहार के लिये गये और तुश्केविच पीटर्सबर्ग के नाव-क्लब की अन्तिम नौका-दौड़ों के बारे में बताने लगा। किन्तु आन्ना ने उचित अवसर पाकर वास्तुकार को सम्बोधित किया, ताकि उसका मौन भंग कर सके।

“निकोलाई इवानोविच को इस बात की बड़ी हैरानी हुई,” आन्ना ने स्विजाज्स्की के बारे में कहा, “कि उनके पिछली बार यहां आने के बाद के समय में यहां कितना अधिक नवनिर्माण हो गया है। किन्तु मैं तो निर्माण-स्थल पर हर दिन जाती हूं और हर दिन ही हैरान होती हूं कि कितनी तेजी से काम हो रहा है।”

“काउंट साहब के साथ काम करना बहुत आसान है,” वास्तुकार ने मुस्कराकर उत्तर दिया (वह अपनी गरिमा के प्रति सचेत, आदरपूर्ण और शान्त व्यक्ति था)। “गुबेर्निया के अधिकारियों के साथ काम करनेवाली बात नहीं है। वहां तो ढेरों कागज काले किये जाते हैं, मगर यहां मैं काउंट साहब से अपनी बात कह देता हूं, हम दो-चार शब्दों में उस पर विचार-विनिमय कर लेते हैं।”

“अमरीकी ढंग,” स्विजाज्स्की ने मुस्कराते हुए कहा।

“जी हां, वहां युक्तियुक्त ढंग से निर्माण होता है।”

यहां से संयुक्त राज्य अमरीका में सत्ता के दुरुपयोग की बात चल पड़ी, किन्तु आन्ना ने उसे फ़ौरन दूसरी दिशा में मोड़ दिया, ताकि कारिन्दे की खामोशी टूट सके।

“तुमने कभी फ़सल काटनेवाली मशीनें देखी हैं?” आन्ना ने डौली से पूछा। “हम उन्हें ही देखने गये थे, जब लौटते हुए तुमसे भेंट हुई। मैंने भी पहली बार ही देखी हैं।”

“तो वे कैसे काम करती हैं?” डौली ने पूछा।

“बिल्कुल कैचियों की तरह। एक तरफ़ा और बहुत-सी छोटी-छोटी कैचियां। इस तरह से।”

आन्ना अंगूठियों से सुशोभित उंगलियों वाले अपने सुन्दर और गोरे

हाथों में एक छुरी और कांटा लेकर कटाई-मशीन की कार्य-पद्धति का प्रदर्शन करने लगी। वह स्पष्टतः यह अनुभव कर रही थी कि उसकी व्याख्या से किसी के भी कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा, किन्तु यह जानते हुए कि उसका बात करने का अन्दाज़ प्यारा है और उसके हाथ सुन्दर हैं, उसने अपनी व्याख्या जारी रखी।

“कैंची के बजाय कलमतराश चाकू कहना ज़्यादा ठीक होगा,” वेस्लोव्स्की ने आन्ना को एकटक देखते हुए शोखी से कहा।

आन्ना तनिक मुस्करा दी, किन्तु उसे कोई उत्तर नहीं दिया।

“कार्ल फ़्योदोरोविच, वे कैंचियों जैसी ही हैं न?” आन्ना ने कारिन्दे से पूछा।

“O ja,” जर्मन ने जवाब दिया। “Es ist ein ganz einfaches Ding,\*” और मशीन की बनावट समझाने लगा।

“अफ़सोस की बात है कि यह पूले नहीं बांधती। मैंने वियेना की प्रदर्शनी में ऐसी मशीन देखी थी, जो लोहे के तार से पूले बांधती थी,” स्विजाज्स्की ने कहा। “ऐसी मशीनें अधिक लाभदायक रहतीं।”

“Es kommt drauf an... Der Preis vom Draht muss ausgerechnet werden.\*\*” और मौन भंग हो जाने पर जर्मन ने अब ब्रोन्स्की को सम्बोधित किया – “Das lässt sich ausrechnen, Erlaucht.\*\*\*” जर्मन ने जेब में हाथ डालना चाहा, जहां वह पेंसिल और नोटबुक रखता था, जिसमें सारा हिसाब जोड़ता था। किन्तु यह ध्यान आने पर कि वह खाने की मेज़ पर बैठा है और ब्रोन्स्की की नज़र में ऐसा न करने का भाव भांप कर उसने अपना इरादा बदल लिया। “Zu complicirt, macht zu viel Klopot,\*\*\*\*” उसने अन्त में कहा।

“Wünscht man Dochots, so hat man auch Klopots,\*\*\*\*\*” वेस्लोव्स्की ने जर्मन कारिन्दे का मज़ाक़-सा उड़ाते हुए कहा।

\* जी हां, यह बिल्कुल सीधी-सादी चीज़ है। (जर्मन)

\*\* बात यह है कि ... तार की कीमत घटानी चाहिये। (जर्मन)

\*\*\* इसका हिसाब जोड़ा जा सकता है, हुज़ूर। (जर्मन)

\*\*\*\* बहुत पेचीदा है, बड़ी भंभट होगी। (जर्मन)

\*\*\*\*\* जो आमदनी चाहता है, वह भंभट भी करता है। (जर्मन)

“J’adore l’allemand,\*” उसने पहले जैसी मुस्कान के साथ आन्ना को सम्बोधित किया।

“Cessez,\*\* ” आन्ना ने मज़ाक़िया कड़ाई से कहा।

“हमारा ख्याल था कि आपसे मैदान में ही भेंट हो जायेगी, वसीली सेम्योनोविच,” आन्ना ने डाक्टर से कहा, जो रोगी-सा व्यक्ति था। “आप वहां थे?”

“मैं वहां था, मगर हवा में गायब हो गया,” डाक्टर ने मज़ाक़ करते हुए उदासी भरे अन्दाज़ में जवाब दिया।

“तो कहना चाहिये कि आपकी अच्छी कसरत हो गयी।”

“बहुत अच्छी!”

“और बुढ़िया का स्वास्थ्य कैसा है? आशा करती हूं कि उसे टाइफ़स नहीं है?”

“टाइफ़स हो या न हो, बचनेवाला केस नहीं है।”

“बड़े अफ़सोस की बात है!” आन्ना ने कहा और इस तरह अपने यहां काम करनेवाले लोगों की ओर ध्यान देने के बाद उसने मित्रों में दिलचस्पी लेना शुरू किया।

“फिर भी आपकी व्याख्या के अनुसार मशीन बनाना कठिन होगा,” स्विजाज्स्की ने मज़ाक़ करते हुए कहा।

“भला वह क्यों?” आन्ना ने मुस्कराकर पूछा। उसकी मुस्कान यह कहती प्रतीत हो रही थी कि उसके द्वारा की गयी मशीन-निर्माण की व्याख्या में कुछ ऐसा आकर्षक तत्व था, जिसकी ओर स्विजाज्स्की का ध्यान भी जाये बिना न रह सका था। जवान लोगों जैसी इस चुहलबाज़ी से डौली को अप्रिय आश्चर्य हुआ।

“मगर दूसरी ओर, वास्तुकला के बारे में आन्ना अर्कादयेव्ना की जानकारी बहुत कमाल की है,” तुश्केविच ने कहा।

“सो तो है ही, कल मैंने आन्ना अर्कादयेव्ना को डाट और पादक जैसे शब्दों का उपयोग करते सुना था,” वेस्लोव्स्की ने कहा। “मैं ठीक कह रहा हूं न?”

“अगर किसी को इतना अधिक देखना और सुनना पड़े, तो इसमें

---

\* जर्मन भाषा का भक्त हूं। ( फ़्रांसीसी )

\*\* बस कीजिये। ( फ़्रांसीसी )

हैरानी की कौन-सी बात है,” आन्ना ने जवाब दिया। “आप तो यह भी नहीं जानते होंगे कि मकान किस चीज़ से बनाया जाता है?”

डौली ने देखा कि आन्ना चुलबुलेपन के उस अन्दाज़ से खुश नहीं थी, जो उसके और वेस्लोव्स्की के बीच चल रहा था, मगर खुद अनजाने ही उसको अपना रही थी।

इस मामले में ब्रोन्स्की का रवैया लेविन से बिल्कुल भिन्न था। वह वेस्लोव्स्की की बकवास को स्पष्टतः कोई महत्त्व नहीं देता था और उसे रोकने के बजाय प्रोत्साहित करता था।

“तो वेस्लोव्स्की यह बताइये कि पत्थरों को किस चीज़ से जोड़ा जाता है?”

“ज़ाहिर है, सीमेन्ट से।”

“बहुत खूब! और सीमेन्ट क्या होता है?”

“वह, वह एक तरह का लेप... नहीं गारा होता है,” सभी लोगों के ठहाके के बीच वेस्लोव्स्की ने उत्तर दिया।

डाक्टर, वास्तुकार और कारिन्दे को छोड़कर, जो उदासी भरी चुप्पी साधे थे, खाने की मेज़ पर बैठे लोगों के बीच लगातार बातचीत चलती जा रही थी। कभी वह अबाध चलती रहती, कभी उलझ जाती और कभी किसी को ऐसे चुभ जाती कि वह तिलमिला उठता। डौली को वह एक बार ऐसे अखरी और वह इतनी उत्तेजित हो उठी कि चेहरा लाल हो गया और उसने बाद में ही यह याद करने की कोशिश की कि कोई फ़ालतू और अप्रिय बात तो नहीं कह दी। स्विजाज्स्की ने लेविन की चर्चा शुरू कर दी, उसके इन अजीब विचारों का उल्लेख किया कि रूसी खेतीबारी को मशीनों से केवल हानि ही पहुंचती है।

“मुझे इन महानुभाव लेविन से परिचित होने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ,” ब्रोन्स्की ने मुस्कराकर कहा, “किन्तु उन्होंने सम्भवतः वे मशीनें नहीं देखी होंगी, जिनकी भर्त्सना करते हैं। और अगर देखी तथा आजमायी हैं, तो अच्छी तरह से नहीं और सो भी विदेशी नहीं, कोई रूसी। तो इस बारे में उनके दृष्टिकोण का सवाल ही क्या हो सकता है?”

“कहना चाहिये कि तुर्कों वाला दृष्टिकोण है,” वेस्लोव्स्की ने आन्ना को सम्बोधित करते हुए मुस्कराकर कहा।

“मैं लेविन के दृष्टिकोण का पक्ष-पोषण नहीं कर सकती,” डौली ने भड़क कर कहा, “किन्तु इतना कह सकती हूँ कि वह बहुत पढ़ा-लिखा आदमी है और अगर यहां होता, तो आपको ढंग से जवाब देता। मैं ऐसा करने में असमर्थ हूँ।”

“मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ और हम बड़े घनिष्ठ मित्र हैं,” स्वियाज्स्की ने खुशमिजाजी से मुस्कराकर कहा। “*Mais pardon, il est un petit peu toqué;*\* मिसाल के लिये वह जोर देकर यह कहता है कि ग्राम-परिषदों और न्यायाधीशों की कोई जरूरत नहीं है और किसी भी चीज़ में हिस्सा नहीं लेना चाहता।”

“यह हम रूसी लोगों की उदासीनता है,” ब्रोन्स्की ने ठण्डी सुराही से पतली डंडीवाले गिलास में पानी डालते हुए कहा, “हमारे अधिकार हमसे जिन कर्तव्यों की पूर्ति की अपेक्षा करते हैं, हम उन्हें अनुभव नहीं करते और इसलिये इन कर्तव्यों से इन्कार कर देते हैं।”

“अपने कर्तव्यों की पूर्ति के बारे में मैं तो उससे अधिक सजग व्यक्ति को नहीं जानती,” ब्रोन्स्की के अपनी श्रेष्ठता जताने के इस अन्दाज़ से चिढ़कर डौली ने कहा।

“मैं तो इसके उलट,” ब्रोन्स्की ने न जाने क्यों इस चर्चा से भड़कते हुए अपनी बात जारी रखी, “मैं तो इसके उलट, जैसा कि आप मुझे देख रहे हैं, न्यायाधीश चुना जाने के सम्मान के लिये, जो मुझे निकोलाई इवानोविच” (उसने स्वियाज्स्की की ओर संकेत किया) “की बदौलत प्राप्त हुआ, बहुत आभारी हूँ। मैं यह मानता हूँ कि मेरे लिये ज़ेम्सत्वो-परिषद की बैठक में जाना, वहां किसी किसान के घोड़े-सम्बन्धी मामले पर विचार करना उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना वह सभी कुछ, जो मैं कर सकता हूँ। अगर मुझे ज़ेम्सत्वो-परिषद का सदस्य चुन लिया गया, तो मैं इसे और भी बड़े सम्मान की बात मानूंगा। ज़मींदार होने के नाते मुझे जो लाभ प्राप्त हैं, मैं उनका केवल ऐसे ही मूल्य चुका सकता हूँ। दुर्भाग्य से वह महत्त्व नहीं समझा जाता, जो बड़े ज़मींदारों को राज्य में प्राप्त होना चाहिये।”

अपने घर में खाने की मेज़ पर बैठा हुआ ब्रोन्स्की अपने दृष्टिकोण

---

\* लेकिन, माफ़ कीजिये, वह ज़रा अजीब-सा आदमी है। (फ़्रांसीसी)

से सही होने के बारे में जिस शान्त भाव से चर्चा कर रहा था डौली को वह सुनना अजीब-सा लगा। उसे याद हो आया कि ब्रोन्स्की के प्रतिकूल दृष्टिकोण रखनेवाले लेविन ने भी अपनी मेज़ पर बैठे हुए इसी दृढ़ता से अपना मत व्यक्त किया था। किन्तु चूंकि लेविन उसे अच्छा लगता था, इसलिये वह उसी के पक्ष में थी।

“तो काउंट, हम अगले अधिवेशन में आपके भाग लेने का विश्वास कर सकते हैं न?” स्विजाज्स्की ने कहा। “किन्तु थोड़ा पहले जाना चाहिये, ताकि आठ तारीख तक हम वहां पहुंच जायें। कैसा रहे अगर आप मेरे यहां आकर मुझे सम्मानित करें?”

“मैं कुछ हद तक तुम्हारे बहनोई से सहमत हूं,” आन्ना ने कहा। “किन्तु उसकी भांति नहीं,” उसने मुस्कराकर इतना और जोड़ दिया। “मुझे लगता है कि पिछले समय में हमारे यहां ये सार्वजनिक कर्तव्य कुछ बहुत ही अधिक हो गये हैं। ठीक उसी तरह, जैसे पहले इतने अधिक कर्मचारी थे कि हर चीज़ के लिये कर्मचारी जरूरी था। अब यही बात सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के बारे में कही जा सकती है। अलेक्सेई को यहां आये छः महीने हुए हैं और लगता है कि इसी अर्से में वह पांच-छः सार्वजनिक संस्थाओं में शामिल हो गया है—ट्रस्टियों के बोर्ड का सदस्य है, न्यायाधीश है, जेम्सत्वो-परिषद का सदस्य है, जूरी का सदस्य है, अश्व-समिति का सदस्य है। *Du train que cela va\** उसका सारा वक्त इन्हीं में चला जाता है। मुझे डर है कि इतने अधिक काम होने पर वे केवल औपचारिकता बन जाते हैं। निकोलाई इवानोविच, आप कितनी संस्थाओं के सदस्य हैं?” आन्ना ने स्विजाज्स्की से पूछा। “लगता है कि बीस से अधिक संस्थाओं के?”

आन्ना बात तो मज़ाकिया ढंग से कर रही थी, मगर उसके अन्दाज़ में खीझ की अनुभूति होती थी। आन्ना और ब्रोन्स्की को ग़ौर से देखने वाली डौली को यह भांपने में देर न लगी। उसने यह भी देखा कि इस बातचीत के शुरू होते ही ब्रोन्स्की के चेहरे पर गम्भीरता और हठ का भाव झलक उठा था। यह भांपने और यह देखने पर कि प्रिंसेस वर्वारा ने फ़ौरन बातचीत का विषय बदलने के लिये पीटर्सबर्ग के अपने

---

\* जीवन के ऐसे ढंग से। ( फ़्रांसीसी )

परिचितों की चर्चा आरम्भ कर दी है तथा यह याद करके कि ब्रोन्स्की ने अकारण ही बाग में अपने कार्य-कलापों का उल्लेख नहीं किया था, डौली समझ गयी कि इन सार्वजनिक गतिविधियों को लेकर आन्ना और ब्रोन्स्की के बीच गुप्त रूप से एक कलह चल रही है।

भोजन, शराब और तश्तरियां-प्याले — यह सभी कुछ बहुत अच्छा, किन्तु ऐसा था, जैसा डौली ने दावतों और बॉलों के समय देखा था और जिनकी वह अभ्यस्त नहीं रही थी। यहां भी वही रंग-ढंग और तनाव था। इसलिये साधारण दिन और छोटी मण्डली में इन सब चीजों ने उसके मन पर अप्रिय प्रभाव डाला।

भोजन के बाद सभी लोग छज्जे में बैठे रहे। इसके बाद लॉन टेनिस खेलने लगे। खिलाड़ी दो दलों में बंट गये और बहुत ही अच्छी तरह समतल तथा बराबर किये गये क्राकेटग्राउंड में धातु मढ़े खम्भों के बीच फैले जाल के दोनों ओर खड़े हो गये। डौली ने खेलने की कोशिश की, मगर देर तक खेल को समझ न पायी और जब समझी, तो इतना थक गयी थी कि प्रिंसेस वर्वारा के पास बैठकर केवल खिलाड़ियों को देखती रही। डौली के साथी तुश्केविच ने भी खेलना बन्द कर दिया, मगर बाक़ी सबने देर तक खेल जारी रखा। स्विग्याज्स्की और ब्रोन्स्की दोनों ही बहुत अच्छी तरह और संजीदगी से खेलते थे। वे अपनी ओर फेंके गये गेंद को बहुत ध्यान से देखते, उतावली या काहिली किये बिना फुर्ती से उसकी तरफ़ भागते, उसके ज़मीन पर लगकर उछलने का इन्तज़ार करते और निशाना बनाकर बड़े अच्छे ढंग से उसे राकेट मारकर जाल के दूसरी ओर फेंकते। दूसरों के मुक़ाबले में वेस्लोव्स्की खेल में कच्चा था। वह बहुत उत्तेजित हो उठता था, मगर अपनी खुशमिज़ाजी से दूसरे खिलाड़ियों को प्रेरित करता था। वह लगातार हंसता और खुशी से चिल्लाता जा रहा था। अन्य पुरुषों की भांति उसने भी महिलाओं की अनुमति लेकर अपना कोट उतार दिया था और क़मीज़ की सफ़ेद आस्तीनों में से भांकता उसका सुन्दर तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर, पसीने से तर तमतमाया हुआ चेहरा और वेगपूर्ण अंग-संचालन मानस-पट पर अंकित हो जाते थे।

इस रात को डौली जब बिस्तर पर गयी, तो आंखें मूंदते ही क्राकेटग्राउंड में इधर-उधर दौड़ता वेस्लोव्स्की उसके सामने घूमने लगा।

खेल के समय डौली को खुशी महसूस नहीं हुई। उसे खेल के दौरान जारी रहनेवाली आन्ना और वेस्लोव्स्की की चोंचलेबाजी तथा सामान्य रूप से उन बड़ों की अस्वाभाविकता अच्छी नहीं लगी, जो बच्चों के बिना बच्चों का खेल खेल रहे थे। पर इसलिये कि दूसरों के रंग में भंग न पड़े और किसी तरह समय बीत जाये, वह कुछ देर आराम करने के बाद फिर से खेल में शामिल हो गयी और यह ठोंग करती रही कि उसे मजा आ रहा है। इस पूरे दिन ही डौली को ऐसा लगता रहा कि वह अपने से बेहतर अभिनेताओं के साथ रंगमंच पर अभिनय कर रही है और उसका बुरा अभिनय सब कुछ चौपट किये दे रहा है।

डौली इस इरादे से आई थी कि अगर उसे अच्छा लगेगा, तो वह यहां दो दिन रहेगी। किन्तु इसी शाम को, खेल के समय ही उसने यह तय कर लिया कि अगले दिन यहां से चली जायेगी। मां के नाते वे यातनापूर्ण चिन्तायें, जो यहां आते समय उसे रास्ते में इतनी अधिक अखर रही थीं, अब, उनके बिना एक दिन बिताने पर, दूसरे ही रूप में उसके सामने आ रही थीं और उसे अपनी ओर खींच रही थीं।

शाम की चाय और रात के नौका-विहार के बाद डौली ने जब अपने कमरे में लौटकर अपनी पोशाक उतारी और थोड़े-से बालों को रात के लिये संवारने बैठी, तो उसे बड़ी राहत महसूस हुई।

डौली को यह विचार भी अरुचिकर लगा कि आन्ना अभी उसके पास आयेगी। वह अपने विचारों के साथ अकेली ही रहना चाहती थी।

(२३)

डौली बिस्तर में जाना चाह रही थी कि नाइट गाउन पहने हुए आन्ना उसके कमरे में दाखिल हुई।

दिन के दौरान आन्ना ने कई बार अपने दिली मामलों की चर्चा शुरू की और हर बार ही कुछ शब्द कहकर चुप हो गयी। “बाद में, एकान्त में सारी बातचीत करेंगी। मुझे तुम्हें बहुत कुछ बताना है,” आन्ना कहती।

अब वे दोनों एकान्त में थीं और आन्ना नहीं जानती थी कि डौली से क्या कहे। वह खिड़की के पास बैठी हुई डौली को देख और उन

सभी बातों को याद कर रही थी, जो उसे हार्दिक मामलों का अक्षय भण्डार प्रतीत होती थीं, और कुछ भी याद नहीं कर पा रही थी। अब उसे ऐसा लग रहा था कि सब कुछ पहले ही कहा जा चुका है।

“यह बताओ, कीटी का क्या हाल-चाल है?” गहरी सांस छोड़ते और अपराधी की भांति डौली की ओर देखते हुए आन्ना ने पूछा।

“मुझे सच सच बताना, डौली, वह मुझसे नाराज़ तो नहीं है?”

“नाराज़? नहीं,” डौली ने मुस्कराकर कहा।

मुझसे घृणा करती है, मेरे प्रति तिरस्कार की भावना रखती है?”

“अरे नहीं! लेकिन तुम जानती ही हो कि ऐसी बातें क्षमा नहीं की जातीं।”

“हां, हां,” मुंह फेरकर खुली खिड़की से बाहर भांकते हुए आन्ना ने कहा। “लेकिन मेरा कोई दोष नहीं था। दोषी हो ही कौन सकता है? दोषी होने का मतलब ही क्या है? क्या इसके सिवा कुछ और हो भी सकता था? तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या यह हो सकता था कि तुम स्तीवा की बीवी न होतीं?”

“मैं, मैं नहीं जानती। लेकिन तुम मुझे यह बताओ...”

“हां, हां, लेकिन हमने कीटी के बारे में तो अभी बातचीत समाप्त नहीं की। वह सुखी है न? सुनती हूं कि वह बहुत ही अच्छा आदमी है।”

“बहुत अच्छा आदमी कहना बहुत कम है। मैं उससे बेहतर आदमी ही नहीं जानती।”

“मैं यह जानकर खुश हूं! बेहद खुश हूं! बहुत अच्छा आदमी कहना बहुत कम है,” उसने डौली का यह वाक्य दोहराया।

डौली मुस्करायी।

“लेकिन तुम मुझे अपने बारे में बताओ। तुमसे लम्बी बातचीत करनी है मुझे। मेरी... भी बातचीत हुई थी।” डौली नहीं समझ पा रही थी कि ब्रोन्स्की का किस तरह उल्लेख करे। काउंट या अलेक्सेई किरील्लोविच कहकर ब्रोन्स्की का उल्लेख करना उसे अटपटा लग रहा था।

“अलेक्सेई के साथ,” आन्ना ने कहा, “मुझे मालूम है कि तुम दोनों की बातचीत हुई थी। किन्तु मैं तुमसे यह साफ़-साफ़ जानना चाहती हूं कि मेरे बारे में, मेरे जीवन के बारे में तुम क्या सोचती हो?”

“ऐसे अचानक ही मैं इसका जवाब कैसे दे सकती हूँ? सच कहती हूँ, मैं नहीं जानती।”

“नहीं, तुम फिर भी मुझे यह बताओ... तुम मेरी ज़िन्दगी देख रही हो। लेकिन यह मत भूलना कि तुम गर्मियों में हमें देख रही हो, जब तुम आ गयी हो और हम अकेले नहीं हैं... पर हम तो वसन्त के आरम्भ में यहां आये थे, बिल्कुल अकेले ही रहते थे और अकेले ही रहेंगे तथा मैं इससे अधिक कुछ चाहती भी नहीं हूँ। मगर तुम यह कल्पना करो कि मैं उसके बिना अकेली यहां रहती हूँ, अकेली, और ऐसा होगा... सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मैं यह देख रही हूँ कि ऐसा अक्सर होगा, कि आधे वक्त वह घर से बाहर रहेगा,” आन्ना ने उठकर डौली के निकट बैठते हुए कहा।

“ऐसा तो होगा ही,” आन्ना ने डौली को, जो आपत्ति करना चाहती थी, बीच में ही रोक दिया, “सो तो होगा ही और मैं उसे ज़बर्दस्ती नहीं रोकूंगी। मैं रोकती भी नहीं हूँ। जल्द ही घुड़दौड़ें होने-वाली हैं, उसके घोड़े उनमें हिस्सा ले रहे हैं, वह वहां जायेगा। मैं बहुत खुश हूँ। किन्तु तुम मेरे बारे में सोचो, मेरी स्थिति की कल्पना करो... इसकी चर्चा ही क्या की जाये!” आन्ना मुस्करा दी। “तो उसने क्या कहा तुमसे?”

“उसने वही कुछ कहा, जो मैं खुद भी तुमसे कहना चाहती हूँ और इसलिये मैं आसानी से उसकी ओर से वकालत कर सकती हूँ। यही कि क्या ऐसी सम्भावना नहीं है, क्या ऐसा नहीं हो सकता...” डौली कुछ देर को झिझकी, “कि तुम अपनी स्थिति को सुधार लो, उसे बेहतर बना लो... इस बारे में मेरी राय तो तुम जानती ही हो... फिर भी, यदि सम्भव हो, तो तुम्हें शादी कर लेनी चाहिये...”

“मतलब यह कि तलाक़ ले लूँ?” आन्ना ने कहा। “तुम्हें यह मालूम है कि पीटर्सबर्ग में मुझसे मिलने के लिये केवल एक औरत, सिर्फ़ बेत्सी त्वेरस्काया ही आयी? तुम उसे जानती हो न? Au fond c'est la femme la plus dépravée qui existe.\* बहुत ही घिनौने ढंग से पति की आंखों में धूल भोंकते हुए उसने तुश्केविच के साथ

---

\* थोड़े में यही कि वह बहुत बदचलन औरत है। (फ़्रांसीसी)

अनुचित सम्बन्ध बना रखे थे। उसने भी मुझसे यह कहा कि जब तक मैं अपनी स्थिति ठीक नहीं कर लेती, वह मुझसे कोई सरोकार नहीं रखना चाहती। ऐसा मत समझ लेना कि मैं उसके साथ तुम्हारी तुलना कर रही हूँ... तुम्हें, मेरी प्यारी, मैं बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ। किन्तु मुझे बरबस यह बात याद हो आयी... तो उसने क्या कहा तुमसे?" आन्ना ने अपनी बात दोहरायी।

"उसने कहा कि वह तुम्हारे और अपने लिये दुखी है। शायद तुम कहोगी कि यह उसका स्वार्थ है, किन्तु कितना न्यायोचित और श्रेष्ठ स्वार्थ है! सबसे पहले तो वह यह चाहता है कि अपनी बेटी का कानूनी पिता और तुम्हारा कानूनी पति बने, तुम पर अपना अधिकार स्थापित कर पाये।"

"कौन-सी बीवी, कौन-सी दासी इस हद तक दासी होगी, जिस हद तक अपनी वर्तमान स्थिति में मैं उसकी दासी हूँ?" आन्ना ने उदास होते हुए उसे टोका।

"मगर सबसे अधिक तो वह यह चाहता है... वह यह चाहता है कि तुम्हें यातना न सहनी पड़े।"

"यह असम्भव है! और क्या चाहता है वह?"

"उसकी सबसे अधिक न्यायोचित इच्छा तो यह है कि तुम दोनों के बच्चों का अपना कुलनाम हो।"

"कैसे बच्चे?" डौली की ओर देखे बिना और आंखें सिकोड़ते हुए आन्ना ने कहा।

"आनी और भावी बच्चों का..."

"इस बारे में वह निश्चित हो सकता है, मेरे और बच्चे नहीं होंगे।"

"यह तुम कैसे कह सकती हो कि नहीं होंगे?"

"नहीं होंगे, क्योंकि मैं ऐसा नहीं चाहती हूँ।"

और अपनी सारी उत्तेजना के बावजूद डौली के चेहरे पर जिज्ञासा, हैरानी और भय का भोला-सा भाव देखकर आन्ना मुस्करा दी।

"मेरी बीमारी के बाद डाक्टर ने मुझसे कहा था "

.....

"यह कैसे हो सकता है!" आंखें फाड़-फाड़कर देखते हुए डौली ने

कहा। डौली के लिये यह एक ऐसी खोज थी, जिसके परिणाम और निष्कर्ष इतने महत्त्वपूर्ण होते हैं कि फ़ौरन ही सब कुछ समझ पाना असम्भव प्रतीत होता है, कि इसके बारे में बहुत कुछ, बहुत अधिक सोचना-समझना पड़ेगा।

इस खोज ने, जिसने डौली को अचानक उन परिवारों को समझने में मदद दी थी, जिनमें एक या दो बच्चे थे और जो पहले उसकी समझ में नहीं आते थे, इस खोज ने उसके मन में ऐसे ख्याल, ऐसे विचार और विरोधी भाव पैदा किये कि वह कुछ भी न कह पायी और आंखें फाड़-फाड़कर केवल हैरानी से आन्ना को देखती रह गयी। यह वही चीज़ थी, जिसकी वह आज यहां आते हुए रास्ते में मधुर कल्पना करती रही थी, और अब यह जानकर कि ऐसा सम्भव है, दहल उठी थी। वह अनुभव कर रही थी कि यह बहुत ही जटिल प्रश्न का बहुत ही सीधा-सादा हल है।

“N'est ce pas immoral?\*” कुछ देर चुप रहने के बाद उसने इतना ही कहा।

“वह क्यों? तुम ज़रा विचार करो—मेरे सामने दो ही रास्ते हैं—या तो गर्भवती यानी बीमार रहूं या फिर अपने पति—पति ही तो है वह—की मित्र और संगिनी बनी रहूं,” आन्ना ने जान-बूझकर सतही और हल्के-फुल्के अन्दाज़ में कहा।

“सो तो है, सो तो है,” डौली ने उन्हीं तर्कों को सुनते हुए कहा, जो वह स्वयं अपने सामने प्रस्तुत किया करती थी और जो अब पहले की तरह उसके दिल को नहीं छूते थे।

“तुम्हारे मन में, दूसरों के मन में,” आन्ना ने मानो डौली के विचारों को भांपते हुए कहा, “इस सम्बन्ध में अभी भी कोई सन्देह हो सकता है, लेकिन मेरे लिये... तुम इस बात को समझो, मैं बीवी नहीं हूं। वह जब तक प्यार करता है, तब तक प्यार करता है। किस चीज़ से मैं उसका प्यार बनाये रख सकती हूं? इससे?”

आन्ना ने अपने गोरे हाथ पेट के सामने फैला दिये।

जैसा कि मानसिक हलचल के क्षणों में होता है, डौली के दिमाग

---

\* क्या यह अनैतिक नहीं है? ( फ़्रांसीसी )

में असाधारण तेज़ी से विचारों और स्मृतियों की भीड़-सी लग गयी। “मैंने स्तीवा को अपनी ओर खींचने की कोशिश नहीं की,” वह सोच रही थी, “वह मुझे छोड़कर दूसरी औरतों के पास चला गया। लेकिन वह पहली औरत भी, जिसकी खातिर उसने मेरे साथ बेवफ़ाई की, हमेशा बनी-ठनी और खुशमिज़ाज बनी रहने पर भी उसे अपने वश में न रख सकी। उसे छोड़कर उसने किसी दूसरी को पकड़ लिया। क्या आन्ना काउंट ब्रोन्स्की को इस तरह अपनी ओर आकर्षित किये रह सकती है, वश में रख सकती है? अगर वह ‘इसी’ के फेर में होगा, तो उसे और अधिक सुन्दर पोशाकें और अधिक खुशमिज़ाज औरतें मिल जायेंगी। इसकी नंगी बांहें चाहे कितनी ही गोरी, कितनी ही सुन्दर क्यों न हों, इसका गदराया हुआ बदन चाहे कितना ही खूबसूरत क्यों न हो, काले बालों के नीचे उसका तमतमाया हुआ चेहरा चाहे कितनी ही प्यारा क्यों न हो, वह उसी तरह इनसे बेहतर ढूढ़ लेगा, जैसे मेरा घृणित, दयनीय और प्यारा पति ढूढ़ता तथा पा लेता है।”

डौली ने कोई उत्तर नहीं दिया और केवल निश्वास छोड़ा। असहमति प्रकट करनेवाले इस निश्वास की ओर आन्ना ने ध्यान दिया और अपनी बात जारी रखी। उसके पास अभी इतनी जोरदार दलीलें बाक़ी थीं कि उनका जवाब देना बिल्कुल असम्भव था।

“तुम कहती हो कि यह अच्छा नहीं है। किन्तु तुम्हें इस पर सोच-विचार करना चाहिये,” आन्ना कहती गयी। “तुम मेरी स्थिति को भूल जाती हो। मैं बच्चों को जन्म देने की सोच ही कैसे सकती हूँ? मैं तकलीफ़ों-कष्टों की बात नहीं कर रही हूँ, मैं उनसे नहीं घबराती हूँ। ज़रा सोचो तो, मेरे बच्चे कैसे होंगे? बदकिस्मत पराये पैतृक और कुलनाम वाले बच्चे। जन्म लेने के कारण ही उन्हें अपनी मां, बाप और अपने अस्तित्व पर शर्म आयेगी।”

“इसीलिये तो तलाक़ लेने की ज़रूरत है।”

किन्तु आन्ना ने डौली की बात नहीं सुनी। वह उन सभी दलीलों को पेश कर देना चाहती थी, जिनसे उसने अनेक बार अपने को यक़ीन दिलाया था।

“आखिर किसलिये मुझे सूझ-बूझ मिली है, अगर मैं इसके लिये उसका उपयोग नहीं करती कि बदकिस्मत बच्चों को दुनिया में न लाऊँ?”

आन्ना ने डौली की तरफ़ देखा, किन्तु उत्तर न पाकर अपनी बात कहती गयी —

“ऐसे बदकिस्मत बच्चों के सामने मैं अपने को हमेशा अपराधी अनुभव करती रहती,” उसने कहा। “अगर वे इस दुनिया में नहीं हैं तो कम से कम बदकिस्मत नहीं हैं और अगर वे इस दुनिया में आकर दुखी होते, तो इसके लिये केवल मैं ही दोषी हूँ।”

ये वही तर्क थे, जो डौली स्वयं अपने सामने प्रस्तुत किया करती थी, किन्तु अब वह उन्हें सुन रही थी और समझ नहीं पा रही थी।

“जिनका अस्तित्व ही नहीं है, उनके सम्मुख कोई दोषी कैसे हो सकता है?” वह सोच रही थी। अचानक यह विचार उसके दिमाग़ में कौंध गया — अगर उसका प्यारा बेटा ग्रीशा इस दुनिया में कभी न आया होता, तो क्या यह उसके लिये किसी भी हालत में बेहतर हो सकता था? उसे यह ख्याल इतना बेतुका और अजीब लगा कि उसने अपना सिर हिलाया, ताकि पागलपन के इन विचारों के जमघट से अपने दिमाग़ को मुक्त कर सके।

“नहीं, मैं नहीं जानती, यह अच्छा नहीं है,” चेहरे पर अरुचि का भाव लाकर उसने केवल इतना ही कहा।

“मगर तुम यह न भूलो कि तुम क्या हो और मैं क्या हूँ... और इसके अलावा,” आन्ना ने अपने तर्कों की विपुलता और डौली की दलीलों की कमी के बावजूद मानो ऐसा स्वीकार करते हुए कि यह अच्छा नहीं है, इतना और जोड़ दिया, “तुम यह मुख्य बात नहीं भूलो कि मैं अब तुम्हारी जैसी स्थिति में नहीं हूँ। तुम्हारे सामने यह सवाल है कि तुम और बच्चों को जन्म देना चाहती हो या नहीं और मेरे सामने यह प्रश्न है — मेरे बच्चे हों या न हों। और यह बहुत बड़ा अन्तर है। तुम यह समझो कि अपनी परिस्थिति में मैं ऐसा चाह नहीं सकती।”

डौली ने कोई आपत्ति नहीं की। सहसा उसने यह अनुभव किया कि वह आन्ना से बहुत दूर हो गयी है, कि उनके बीच ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर वे कभी सहमत नहीं हो सकेंगी और उनके लिये उनकी चर्चा न करना ही बेहतर होगा।

“ इसीलिये तो और भी ज़रूरी है कि तुम अपनी स्थिति को, यदि ऐसा करना सम्भव है, ठीक कर लो, ” डौली ने कहा।

“ हां, अगर सम्भव हो, ” आन्ना ने अचानक बिल्कुल दूसरी, धीमी और उदास आवाज़ में कहा।

“ क्या तलाक़ सम्भव नहीं? मुझे बताया गया है कि तुम्हारा पति इसके लिये राज़ी है। ”

“ डौली! मैं इस बात की चर्चा नहीं करना चाहती। ”

“ तो नहीं करेंगी, ” आन्ना के चेहरे पर व्यथा-वेदना का भाव देखकर डौली ने झटपट उत्तर दिया। “ मैं केवल यह देख रही हूँ कि तुम बहुत ही अवसादपूर्ण ढंग से चीज़ों को देखती हो। ”

“ मैं? ज़रा भी नहीं। मैं बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट हूँ। तुमने देखा कि *je fais des passions.\** वेस्लोव्स्की ... ”

“ हां, लेकिन अगर सच कहूँ, तो मुझे वेस्लोव्स्की का रंग-ढंग अच्छा नहीं लगा, ” डौली ने बातचीत का विषय बदलने की इच्छा से कहा।

“ अरे, ऐसा कुछ नहीं है। यह तो अलेक्सेई से ज़रा छेड़छाड़ ही होती है, और कुछ नहीं। वह तो छोकरा है और पूरी तरह मेरी मुट्ठी में बन्द है। समझती हो न, मैं जैसे चाहती हूँ, वैसे ही उसे अपने इशारों पर नचाती हूँ। वह तो वैसा ही है, जैसा तुम्हारा ग्रीशा ... सुनो डौली! ” आन्ना ने अचानक बात बदल दी। “ तुम कहती हो कि मैं चीज़ों को अवसादपूर्ण ढंग से देखती हूँ। तुम समझ नहीं सकतीं। बहुत ही भयानक है यह सब कुछ। मैं तो यही कोशिश करती हूँ कि उनकी ओर से आंखें मूंद लूँ। ”

“ किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि आंखें मूंदना नहीं, बल्कि उन्हें देखना चाहिये। जो कुछ सम्भव है, वह करना चाहिये। ”

“ किन्तु क्या सम्भव है? कुछ भी नहीं। तुम कहती हो कि मुझे अलेक्सेई से शादी करनी चाहिये और यह कि मैं इसके बारे में नहीं

---

\* मुझ पर लट्टू होते हैं। ( फ़्रांसीसी )

सोचती हूं। मैं इसके बारे में नहीं सोचती हूं!” उसने इन शब्दों को दोहराया और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी। वह उठी, सीधी हुई, उसने लम्बी सांस ली और केवल कभी-कभी रुकते हुए अपनी हल्की-फुल्की चाल से कमरे में आगे-पीछे आने-जाने लगी। “मैं नहीं सोचती हूं? कोई दिन, कोई एक घण्टा भी तो ऐसा नहीं जाता, जब मैं न सोचती और अपने को इसके लिये न कोसती होऊं कि सोचती हूं... क्योंकि इस बारे में आनेवाले विचार पागल कर सकते हैं। पागल कर सकते हैं,” उसने दोहराया। “जब मैं इस बारे में सोचती हूं, तो मार्फ़िये के बिना सो नहीं पाती हूं। लेकिन ठीक है। हम शान्ति से बातचीत करेंगी। मुझे कहा जाता है कि मैं तलाक़ लूं। पहली बात यह है कि वह मुझे तलाक़ देगा नहीं। वह अब काउंटेस लीडिया इवानोव्ना के प्रभाव में है।”

डौली कुर्सी पर सीधी बैठी थी और मुख पर सहानुभूतिपूर्ण वेदना का भाव लिये हुए इधर-उधर आती-जाती आन्ना को सिर घुमा-घुमाकर देख रही थी।

“कोशिश करनी चाहिये,” डौली ने धीमी आवाज़ में कहा।

“मान लो, कोशिश करनी चाहिये। इसका मतलब क्या है?” स्पष्टतः वह ऐसा विचार व्यक्त कर रही थी, जिस पर हज़ारों बार सोच चुकी थी और जो उसे रट-सा गया था। “इसका मतलब यह है कि उससे घृणा करने, फिर भी अपने को उसके सामने अपराधी, तथा उसकी उदारता को मान्यता देनेवाली मैं अपने को ज़लील करके उसे ख़त लिखूं। मान लो, मैं कोशिश करके ऐसा कर देती हूं। या तो मुझे अपमानजनक उत्तर मिलेगा या सहमति। चलो, मुझे सहमति मिल गयी...” आन्ना इस समय कमरे के सिरे पर थी और वहां रुककर खिड़की के पर्दे को कुछ ठीक कर रही थी। “मुझे उसकी सहमति मिल जाती है, मगर बे... बेटा? वे उसे मुझे नहीं देंगे। वह तो तिरस्कार की भावना से मुझे देखता हुआ उस बाप के यहां बड़ा होता रहेगा, जिसे मैं छोड़ आई हूं। तुम इस बात को समझो कि मैं दो प्राणियों को—सेर्योभा और अलेक्सेई को, मुझे लगता है कि दोनों को बराबर और अपने से अधिक प्यार करती हूं।”

आन्ना कमरे के बीचोंबीच आ गयी और हाथों से वक्ष को दबाये

हुए डौली के सामने खड़ी हो गयी। सफ़ेद ड्रेसिंग गाउन में उसकी आकृति विशेषतः बहुत बड़ी और चौड़ी प्रतीत हो रही थी। उसने सिर झुकाया और भौंहें चढ़ाकर नम तथा चमकती आंखों से पैवन्द लगा गाउन पहने और रात की टोपी ओढ़े उत्तेजना के कारण कांपती, टुइयां-सी, दुबली-पतली और दयनीय डौली की ओर देखा।

“केवल इन दो प्राणियों को ही मैं प्यार करती हूं और वे एक दूसरे के लिये बाधा हैं। मैं दोनों को एक साथ नहीं पा सकती और मुझे केवल यही चाहिये। अगर ऐसा नहीं हो सकता, तो मेरे लिये किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। बिल्कुल, बिल्कुल कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। जैसे-तैसे मामला ख़त्म हो जायेगा और इसीलिये मैं इसकी चर्चा नहीं कर सकती, मुझे ऐसा करना अच्छा नहीं लगता। सो तुम मुझे भला-बुरा नहीं कहो, किसी भी चीज़ के लिये मेरी भर्त्सना नहीं करो। तुम एकदम बेदाग़ हो और इसलिये उन सब चीज़ों को नहीं समझ सकतीं जो मुझे यातना देती हैं।”

आन्ना डौली के निकट आ बैठी और अपराधी जैसे भाव के साथ उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए उसने उसका हाथ थाम लिया।

“तुम क्या सोचती हो? मेरे बारे में तुम क्या सोचती हो? तुम मुझसे घृणा नहीं करो। मैं घृणा के योग्य नहीं हूं। मैं बदकिस्मत हूं। अगर कोई बदकिस्मत है, तो वह मैं हूं,” आन्ना ने कहा और मुंह फेरकर रो पड़ी।

अकेली रह जाने पर डौली ने प्रार्थना की और बिस्तर पर जा लेटी। आन्ना जब उससे बात कर रही थी, तो उसे उस पर सच्चे दिल से दया आ रही थी, किन्तु अब वह अपने को उसके बारे में सोचने के लिये विवश कर पाने में असमर्थ थी। घर और बच्चों की याद एक विशेष, उसके लिये नया सौन्दर्य, एक नयी चमक लिये हुए उसकी स्मृति में उभर उठी। अपनी यह दुनिया अब उसे इतनी सुन्दर और प्यारी लगी कि वह किसी हालत में एक भी दिन उससे दूर रहकर बिताने को तैयार नहीं थी और उसने तय किया कि अगले दिन ज़रूर ही यहां से चल देगी।

इसी बीच आन्ना अपने कमरे में लौट आई, उसने छोटा-सा गिलास लेकर उसमें दवाई की कुछ बूंदें डालीं, जिसमें अधिकतर मार्फ़िया

था, उसे पिया, कुछ समय तक बुत बनी बैठी रही और अपने को शान्त तथा खुश अनुभव करती हुई सोने के कमरे में चली गयी।

शयन-कक्ष में प्रवेश करने पर ब्रोन्स्की ने आन्ना को बहुत ध्यान से देखा। वह जानता था कि डौली के कमरे में इतनी देर तक बैठी रह कर वह उसके साथ बातचीत करती रही है और अब वह आन्ना के चेहरे पर उस बातचीत की छाप ढूँढ़ रहा था। किन्तु आन्ना के उत्तेजित-संयत और कुछ छिपाते हुए चेहरे पर उसे उस सुन्दरता के सिवा कुछ भी नहीं मिला, जो अभ्यस्त हो जाने पर भी उसे अपनी ओर खींचती थी, और उसे दिखाई दी इस सुन्दरता की चेतना और यह इच्छा कि वह उस पर अपना रंग दिखाये। ब्रोन्स्की ने आन्ना से यह पूछना नहीं चाहा कि उनके बीच क्या बातचीत हुई। उसे आशा थी कि वह स्वयं ही कुछ कहेगी। किन्तु आन्ना ने केवल इतना ही कहा —

“मैं खुश हूँ कि डौली तुम्हें अच्छी लगी। ठीक है न?”

“मैं उसे बहुत समय से जानता हूँ। वह बहुत दयालु है, लगता है, *mais excessivement terre-à-terre*.\* फिर भी मुझे उसके आने से बहुत खुशी हुई।”

ब्रोन्स्की ने आन्ना का हाथ अपने हाथ में लेकर प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी आंखों में भांका।

आन्ना ने इस दृष्टि का दूसरा ही अर्थ समझा और उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

अगली सुबह को मेज़बानों के बहुत रोकने पर भी डौली चलने को तैयार हो गयी। लेविन के कोचवान ने, जो पुराना-सा कोट और डाक गाड़ी के डाकिये जैसा टोप पहने था, उदास-सी सूरत बनाये हुए बेमेल घोड़ों से जुती तथा मरम्मत की हुई बग़्घी को छतवाले और बालू-बिछे ओसारे के सामने दृढ़तापूर्वक लाकर खड़ा कर दिया।

प्रिंसेस वर्बारा और मर्दों से विदा लेना डौली के लिये अरुचिकर था। एक दिन में ही डौली और मेज़बान भी यह समझ गये थे कि वे एक-दूसरे से मेल नहीं खाते और उनका आपस में न घुलना-मिलना ही बेहतर होगा। केवल आन्ना ही उदास थी। वह जानती थी कि

---

\* किन्तु लगता है बड़ी नीरस है। ( फ़्रांसीसी )

डौली के जाने के बाद कोई भी उसके मन में वे भावनायें नहीं जागृत कर सकेगा, जो इस भेंट के समय उसकी आत्मा में सिहर उठी थीं। इन भावनाओं के बेचैन हो जाने से उसे मानसिक कष्ट हुआ, फिर भी वह जानती थी कि यह उसकी आत्मा का सबसे अच्छा भाग है और उसकी आत्मा का यह भाग बहुत तेज़ी से उस ज़िन्दगी के नीचे दबता जा रहा है, जो वह बिता रही है।

मैदान में पहुंचने पर डौली को राहत महसूस हुई और उसने कोचवान तथा मुंशी से पूछना चाहा कि ब्रोन्स्की के यहां उन्हें कैसा लगा। कोचवान फ़िलिप इसी वक्त खुद बोल उठा —

“मालदार होंगे, तो होंगे, मगर घोड़ों के लिये जई की तो केवल तीन नापें ही दीं। क्या होती हैं तीन नापें? हल्का-सा नाश्ता ही हो सकता है उनसे घोड़ों का। सराय वाले आजकल जई के पैतालीस कोपेक लेते हैं। हमारे यहां तो आनेवालों के घोड़ों के लिये उतना ही चारा दिया जाता है, जितना ज़रूरी होता है।”

“साहब कंजूस आदमी है,” मुंशी ने पुष्टि की।

“तुम्हें उनके घोड़े तो पसन्द आये?” डौली ने पूछा।

“घोड़े — उनके क्या कहने! और खाना भी बढ़िया था। मगर वैसे मुझे कुछ सूना-सूना-सा लगा। मालूम नहीं, आपको वहां कैसा लगा?” डौली की ओर अपना सुन्दर और दयालु मुंह फेरकर उसने प्रश्न किया।

“मुझे भी ऐसा ही लगा। तो हम शाम तक पहुंच जायेंगे न?”

“पहुंचना चाहिये।”

घर लौटने पर सभी को सकुशल और बहुत मधुर पाकर डौली बड़े उत्साह से अपनी यात्रा की चर्चा करने और यह बताने लगी कि कैसे उसका इतना अच्छा आदर-सत्कार किया गया, वहां कैसा ऐश्वर्य-वैभव है, ब्रोन्स्की परिवार की ज़िन्दगी और रुचि कितनी अच्छी है, वे कैसे मन बहलाते हैं और उसने किसी को भी उन लोगों के खिलाफ़ एक शब्द नहीं कहने दिया।

“यह समझने के लिये कि आन्ना और ब्रोन्स्की कितने प्यारे और मनमोहक हैं, उन्हें अच्छी तरह जानना चाहिये। अब मैं ब्रोन्स्की को अधिक अच्छी तरह जान पायी हूं,” डौली असन्तोष और अटपटेपन

के उस अस्पष्ट भाव को भूलकर, जो उसने वहां अनुभव किया था, बिल्कुल सच्चे मन से अपनी बात कह रही थी।

(२५)

ब्रोन्स्की और आन्ना ने इन्हीं परिस्थितियों में और तलाक के लिये कोई उपाय किये बिना गांव में ही सारी गर्मी और पतझर का कुछ हिस्सा भी बिता दिया। उनके बीच यह तय हुआ था कि कहीं नहीं जायेंगे, किन्तु जितना अधिक वे अकेले रहते जाते थे, विशेषतः पतझर में और अतिथियों के बिना, उतना ही अधिक यह अनुभव करते थे कि इस तरह की जिन्दगी को वे बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे और उन्हें उसे बदलना होगा।

वैसे तो यह प्रतीत हो सकता था कि उनका जीवन ऐसा था, जिससे बेहतर की कल्पना नहीं की जा सकती थी—सभी तरह के सुख-साधन थे, स्वास्थ्य था, घर में बच्चा था और दोनों अपने-अपने ढंग से व्यस्त रहते थे। मेहमानों के बिना भी पहले की भांति ही आन्ना अपने बनाव-शृंगार में लगी रहती और खूब पढ़ती—उपन्यास तथा ऐसी गम्भीर पुस्तकें, जिनका इन दिनों फ़ैशन था। वह उन सब पुस्तकों को मंगवाती, जिनकी उसके पास आनेवाली विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में प्रशंसा होती और उन्हें वैसे ही ध्यान से पढ़ती, जो केवल एकान्त में सम्भव होता है। इसके अलावा वह ब्रोन्स्की की दिलचस्पी के सभी विषयों का पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं की सहायता से अध्ययन करती और ब्रोन्स्की अक्सर उससे कृषि, वास्तुकला, यहां तक कि कभी-कभी तो अश्व-पालन और खेल-कूद तक से सम्बन्धित प्रश्न भी पूछता। वह आन्ना की जानकारी तथा स्मरणशक्ति से आश्चर्यचकित रह जाता और शुरू में तो विश्वास न करते हुए उसकी बातों की पुष्टि चाहता। आन्ना पुस्तकों में उसके प्रश्नों के उत्तर दिखा देती।

अस्पताल को साज़-सामान से लैस करने के काम में भी आन्ना दिलचस्पी लेती। वह केवल मदद ही न करती, बल्कि बहुत कुछ स्वयं ही व्यवस्थित करती और सोचकर योजनायें भी बनाती। किन्तु फिर भी ब्रोन्स्की उसे किस हद तक प्यार करता था और किस हद तक वह

उस सब की पूर्ति कर सकती थी, जो ब्रोन्स्की को त्यागना पड़ा था -  
 यही उसकी मुख्य चिन्ता थी। आन्ना के जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन  
 जानेवाली इस इच्छा का कि वह न केवल उसको अच्छी लगे, बल्कि  
 उसके काम में भी हाथ बंटा सके, ब्रोन्स्की ऊंचा मूल्यांकन करता था,  
 किन्तु साथ ही उन प्रेम-पाशों से परेशान भी होता था, जिनसे आन्ना  
 उसे जकड़ने का प्रयास कर रही थी। जितना अधिक समय बीतता  
 जाता था, उतना अधिक ही वह अपने को इन फंदों में कसा हुआ  
 अनुभव करता और उतना अधिक ही वह इन फंदों में से निकलना तो  
 नहीं, किन्तु यह आजमाकर जरूर देखना चाहता कि वे उसकी आजादी  
 में बाधा तो नहीं डालते। यदि स्वतंत्र होने की निरन्तर तीव्रतर होती  
 भावना और हर बार अधिवेशन या घुड़दौड़ों में भाग लेने के लिये  
 शहर जाने के समय घर में होनेवाले क्लेशों का उसे सामना न करना  
 पड़ता, तो ब्रोन्स्की अपने जीवन से काफ़ी प्रसन्न रहता। ब्रोन्स्की ने  
 धनी भूमिपति की जो भूमिका अपनायी थी, जिन्हें रूसी कुलीनों का  
 केन्द्र-बिन्दु होना चाहिये, वह उसे न केवल पसन्द आयी थी, बल्कि  
 अब कोई छः महीने यहां बिता लेने पर अधिकाधिक खुशी भी प्रदान  
 करती थी। उसका काम भी, जिसमें उसकी दिलचस्पी बढ़ती जाती  
 थी और जिसमें वह अधिकाधिक डूबता जाता था, खूब अच्छे ढंग से  
 चल रहा था। अस्पताल, कृषि-मशीनों और स्विट्ज़रलैंड से मंगवायी  
 गयी गउओं तथा अन्य चीज़ों पर खर्च की गयी बड़ी धनराशि के बावजूद  
 उसे विश्वास था कि वह अपनी सम्पत्ति को उड़ा नहीं रहा, बल्कि बढ़ा  
 रहा है। जहां आमदनी का, जंगलों, अनाज, ऊन बेचने या ज़मीनों  
 को लगान पर देने का सवाल होता, ब्रोन्स्की पत्थर की सी दृढ़ता  
 दिखाता और अपने मनपसन्द दाम लेता। बड़े पैमाने की खेती के मामले  
 में अपनी इस जागीर तथा दूसरी ज़मीनों पर भी वह बहुत ही सीधे-  
 सादे और ऐसी विधियों का उपयोग करता, जिनमें जोखिम न हो,  
 और छोटी-छोटी बातों में भी बड़ी मितव्ययता तथा नपे-तुले हिसाब-  
 किताब से काम लेता। जर्मन कारिन्दे की सारी चालाकी और चुस्ती  
 के बावजूद, जो उसे सभी तरह की चीज़ें खरीदने को प्रेरित करता  
 और शुरू में आवश्यकता से कहीं अधिक बड़े प्रतीत होनेवाले व्ययों  
 का अनुमान लगाता, किन्तु जिनकी जांच-पड़ताल करने पर पता चलता

कि उन्हीं चीजों को सस्ते दामों पर खरीदा तथा उनसे तत्काल लाभ प्राप्त किया जा सकता है, तो भी ब्रोन्स्की उसके कहने पर न चलता। वह कारिन्दे की बात सुन लेता, उससे पूछ-ताछ करता और केवल तभी उसकी बात मानता, जब बाहर से मंगवायी या बनायी जानेवाली चीज़ नवीनतम, रूस में अनजानी और ऐसी होती कि लोगों को आश्चर्य-चकित कर सके। इतना ही नहीं, वह बड़े खर्च करने को तभी राज़ी होता, जब उसके पास फ़ालतू रक़म होती। ऐसा खर्च करते हुए हर चीज़ की छोटी से छोटी तफ़सील में जाता और इस बात का पूरा जोर लगाता कि उसकी रक़म का श्रेष्ठतम उपयोग हो। जिस ढंग से वह अपने काम-काज की व्यवस्था कर रहा था, उससे यह स्पष्ट था कि सम्पत्ति गंवाने के बजाय वह उसे बढ़ा रहा है।

अक्टूबर में काशिन गुबेर्निया में, जहां ब्रोन्स्की, स्वियाज्स्की, कोज़िशेव, ओब्लोन्स्की की जागीरें और लेविन की जागीर का कुछ हिस्सा था, कुलीनों के चुनाव होनेवाले थे।

अनेक परिस्थितियों और इन चुनावों में भाग लेनेवाले लोगों के कारण इन चुनावों ने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। इनकी बड़ी चर्चा हुई और इनके लिये तैयारी की गयी। मास्को, पीटर्सबर्ग और विदेशों के रूसी निवासी भी, जो पहले कभी चुनावों में उपस्थित नहीं रहे थे, इनमें भाग लेने आ रहे थे।

ब्रोन्स्की ने बहुत पहले ही स्वियाज्स्की को इन चुनावों में आने का वचन दे दिया था।

स्वियाज्स्की, जो ब्रोन्स्की की जागीर पर अक्सर आता रहता था, चुनाव के पहले उसे अपने साथ ले जाने के लिये यहां आया।

इस यात्रा के एक दिन पहले इसी मामले को लेकर ब्रोन्स्की और आन्ना के बीच लगभग झगड़ा हो गया था। गांव में पतझर का सबसे ज़्यादा ऊब और उदासी भरा वक़्त था और इसलिये ब्रोन्स्की ने आन्ना के विरोध का सामना करने के लिये अपने को तैयार करके कठोर और निर्मम अन्दाज़ में, जैसा कि उसने पहले कभी नहीं किया था, अपने जाने के बारे में घोषणा की। किन्तु उसे इस बात की बड़ी हैरानी हुई कि आन्ना यह समाचार सुनकर बहुत ही शान्त रही और उसने केवल इतना पूछा कि वह कब लौटेगा। आन्ना की इस शान्ति को समझ न

पाते हुए उसने गौर से उसे देखा। व्रोन्स्की की इस नज़र के जवाब में वह मुस्करा दी। अपने आप में सिमट जाने की आत्मा की इस क्षमता से वह परिचित था और जानता था कि ऐसा तभी होता है, जब वह उसे अपनी योजनायें बताये बिना मन ही मन कोई इरादा बना लेती है। वह इस चीज़ से डरता था, किन्तु वह भगड़े से बचने को इतना अधिक उत्सुक था कि उसने ऐसा दिखावा किया और कुछ हद तक सच्चे मन से, जैसा कि वह बहुत चाहता था, आत्मा की समझदारी पर विश्वास कर लिया।

“आशा करता हूं कि तुम ऊब अनुभव नहीं करोगी?”

“मैं भी ऐसी आशा करती हूं,” आत्मा ने कहा। “मेरे पास कल गोत्ये से किताबों की पेटी आ गयी है। नहीं, मैं उदास नहीं होऊंगी।”

“वह यह अन्दाज़ अपनाना चाहती है, सो और भी अच्छा है,” व्रोन्स्की ने सोचा, “वरना वही, हमेशा जैसा ही किस्सा होगा।”

और इस तरह बात को पूरी तरह खोले और स्पष्ट किये बिना वह चुनाव में हिस्सा लेने चल दिया। इनके सम्बन्धों के आरम्भ होने के बाद पहली बार ही वह मामले को पूरी तरह साफ़ किये बिना ऐसे चला गया था। इससे एक ओर तो उसे परेशानी हो रही थी और दूसरी ओर ऐसे लगता था कि यही बेहतर है। “शुरू में इस बार की तरह कुछ अस्पष्ट और दबा-घुटा रहेगा, मगर बाद में वह उसकी आदी हो जायेगी। जो भी हो, मैं मर्दों की अपनी आज़ादी के अलावा उसे और सब कुछ दे सकता हूं,” वह सोच रहा था।

(२६)

सितम्बर में लेविन मास्को आ गया, क्योंकि कीटी बच्चे को जन्म देनेवाली थी। वह किसी काम-काज के बिना मास्को में एक महीना बिता भी चुका था, जब उसका भाई कोज़िशेव, जिसकी काशिन गुबेर्निया में जागीर थी और जो वहां होनेवाले चुनावों में बड़ी दिलचस्पी ले रहा था, चुनावों में जाने को तैयार हुआ। उसने लेविन को भी,

जिसे सेलेज़नेव उयेज़्द \* में मतदान का अधिकार प्राप्त था , साथ चलने को कहा। इसके अलावा काशिन में लेविन को विदेश में रहनेवाली अपनी बहन का न्यास तथा रेहन की छुड़ौती की रक़म हासिल करने का बड़ा ज़रूरी काम भी करना था।

लेविन का अभी कुछ कच्चा-पक्का-सा इरादा था , किन्तु कीटी ने यह देखते हुए कि वह मास्को में ऊब रहा है , उसे जाने की सलाह दी , उसकी जानकारी के बिना उसके लिये कुलीनों की वर्दी भी बनवा दी , जिस पर अस्सी रूबल खर्च हुए। वर्दी पर खर्च किये गये यही अस्सी रूबल लेविन के वहां जाने का निर्णायक कारण बने। वह काशिन चला गया।

लेविन को काशिन में आये छठा दिन हो चुका था , वह हर दिन सभा में जाता और अपनी बहन का काम पूरा करने की कोशिश करता , जो किसी तरह भी सिरे नहीं चढ़ पा रहा था। सभी कुलीन-मुखिया चुनावों में व्यस्त थे और न्यास के मामूली-से काम को निपटाने में भी सफलता नहीं मिल रही थी। रक़म हासिल करने के दूसरे काम में भी ऐसी ही बाधाएँ आ रही थीं। बहुत कोशिश के बाद रक़म की अदायगी पर लगायी गयी रोक हटा दी गयी और उसकी अदायगी हो सकती थी , मगर सहायता करने को तत्पर नोटरी इसलिये चेक नहीं दे सकता था कि उस पर अध्यक्ष के हस्ताक्षर ज़रूरी थे और अध्यक्ष , जिसने किसी अन्य को अपनी जगह हस्ताक्षर करने का अधिकार नहीं दिया था , अधिवेशन में गया हुआ था। यह सारी दौड़-धूप , एक जगह से दूसरी जगह पर भागते फिरना , बहुत ही दयालु और भले लोगों के साथ बातचीत , जो प्रार्थी की इस अप्रिय परिस्थिति को समझते थे , किन्तु उसकी सहायता करने में असमर्थ थे , — यह सारा तनाव , जिसका कोई परिणाम नहीं निकलता था , लेविन के मन में ऐसा यातनापूर्ण भाव पैदा करता था , हताशा की ऐसी विवशतापूर्ण अनुभूति करवाता था , जो कोई आदमी स्वप्न में तब महसूस करता है , जब वह शारीरिक शक्ति का उपयोग करना चाहता है। अपने खुशमिज़ाज वकील के साथ बातचीत करते समय उसे बहुधा ऐसी अनुभूति होती। ऐसा प्रतीत

---

\* उयेज़्द — ज़ारशाही रूस में प्रशासकीय क्षेत्र। — सं०

होता कि यह वकील अपना पूरा जोर लगाता था, अपने मस्तिष्क की सारी शक्ति का उपयोग करता था कि लेविन को कठिनाइयों से मुक्ति दिला सके। “ऐसा करके देखिये,” अनेक बार उसने यह कहा, “फ़लां के पास, फ़लां के पास जाइये,” और वह इस बात की पूरी योजना तैयार कर देता कि उस बाधा को कैसे दूर किया जाये, जो हर चीज़ को गड़बड़ किये दे रही है। किन्तु उसी समय यह भी कह देता – “टाल-मटोल तो वे कर ही देंगे, फिर भी कोशिश कर देखिये।” और लेविन कोशिश करता, पैदल और सवारी से जाता। सभी बड़ी कृपालुता दिखाते, बड़े अच्छे ढंग से पेश आते, मगर पता चलता कि जिस बाधा को वह दूर करना चाहता था, वही अन्त में फिर सामने आ खड़ी हुई और उसी ने फिर रास्ता रोक दिया। सबसे ज़्यादा दुख की बात तो यह थी कि लेविन किसी तरह भी इतना नहीं समझ पा रहा था कि वह किसके विरुद्ध संघर्ष कर रहा है, इससे किस को लाभ हो रहा है कि उसका काम सिरे नहीं चढ़ पा रहा है। लगता था कि यह तो कोई भी नहीं जानता था, वकील को भी मालूम नहीं था। अगर लेविन उसी तरह से यह समझ सकता, जैसे वह समझता था कि रेलवे स्टेशन पर टिकट लेने के लिये लोग क्यों क़तार में खड़े होते हैं, तो उसे इतना दुख न होता, खीझ न आती। किन्तु कोई भी तो उसे यह नहीं बता सकता था कि वे बाधाएँ किसलिये हैं, जो उसके काम में अड़चन डालती हैं।

किन्तु अपनी शादी के बाद से लेविन बहुत बदल गया था – वह सब्र से काम लेता था और अगर यह नहीं समझ पाता था कि ऐसा सब क्यों है, तो अपने आप से कहता कि सब कुछ जाने-समझे बिना वह आलोचना नहीं कर सकता, कि शायद ऐसा ही होना चाहिये और आपे से बाहर न होने की कोशिश करता।

अब चुनावों में उपस्थित रहते हुए, उनमें हिस्सा लेते हुए भी वह भर्त्सना और वाद-विवाद करने के बजाय यथाशक्ति उस चीज़ को समझने का प्रयास करता, जिसमें सम्मानित, ईमानदार और भले लोग इतनी गम्भीरता तथा दिलचस्पी से भाग ले रहे थे। शादी के बाद से लेविन उन चीज़ों में भी, जो पहले विचारहीन रवैये के कारण उसे इतनी तुच्छ लगती थीं, अनेक नये और गम्भीर पक्ष देखने लगा था और

चुनावों में भी कोई गम्भीर महत्त्व मानने तथा खोजने लगा था।

कोज़िन्शेव ने उसे उस उथल-पुथल का सार और महत्त्व स्पष्ट किया, जो वे चुनावों द्वारा प्राप्त करने की आशा कर रहे थे। गुबेर्निया का कुलीन-मुखिया, क़ानून के अनुसार जिसके हाथ में इतने महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य थे — न्यास के मामले ( वही, जिनके कारण अब लेविन को मुसीबत उठानी पड़ रही थी ), कुलीनों की बड़ी धनराशि, लड़कियों और लड़कों के हाई स्कूल, सैनिक स्कूल, नयी प्रणाली के अनुसार जन-शिक्षा और अन्ततः ज़ेम्सत्वो-परिषद के सभी कार्य — इस गुबेर्निया की ऐसी महत्त्वपूर्ण जगह पर स्नेत्कोव जैसा मुखिया काम कर रहा था। वह पुराने कुलीन ढर्रे का आदमी था, बड़ी दौलत उड़ा चुका था, अपने ढंग से नेक और ईमानदार व्यक्ति था, मगर नये वक्त के तक्राजों को बिल्कुल नहीं समझता था। वह हमेशा और हर चीज़ में कुलीनों का पक्ष लेता, जन-शिक्षा के प्रचार का प्रत्यक्ष विरोध करता और ज़ेम्सत्वो-परिषद को, जिसे इतनी अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करनी चाहिये थी, श्रेणीगत स्वरूप देने का यत्न करता। उसकी जगह एक बिल्कुल ताज़ा, आधुनिक ढंग के ऐसे कामकाजी व्यक्ति को चुनने की ज़रूरत थी, जो वक्त की मांगों को समझे और मामले का ऐसे संचालन करे कि आम तौर पर कुलीनों के नाते नहीं, बल्कि ज़ेम्सत्वो-परिषदों के तत्त्व के रूप में कुलीनों को प्राप्त अधिकारों से स्वशासन के उन सभी लाभों को हासिल करे, जो उनसे हासिल करना सम्भव हो। धनी काशिन गुबेर्निया में, जो हमेशा दूसरों से अग्रणी रहा है, ऐसी शक्तियों का जमाव हो गया था कि अगर यहां मामले को ठीक मोड़ दे दिया गया, तो वह दूसरे गुबेर्नियाओं, सारे रूस के लिये एक मिसाल बन सकता था। इसलिये सारी स्थिति ही बहुत महत्त्वपूर्ण हो गयी थी। ऐसा विचार था कि स्नेत्कोव की जगह या तो स्विद्याज़्स्की को मुखिया बनाया जाये, या इससे भी बेहतर यह रहेगा कि भूतपूर्व प्रोफ़ेसर, बहुत ही समझदार और कोज़िन्शेव के बहुत ही घनिष्ठ मित्र नेवेदोव्स्की को चुना जाये।

गवर्नर ने सभा का उद्घाटन किया और कुलीनों को सम्बोधित करते हुए अपने भाषण में यह कहा कि वे मुंह देखी न करके योग्यतानुसार तथा मातृभूमि के हितार्थ निष्पक्ष रूप से पदाधिकारियों का चुनाव करें

और उसने आशा प्रकट की कि काशिन के उदात्त कुलीन भूतपूर्व चुनावों की भांति अब भी अपने कर्तव्य को पावन मानते हुए पूरा करेंगे और उस उच्च विश्वास को उचित सिद्ध कर देंगे, जो सम्राट ने उनके प्रति प्रकट किया है।

भाषण समाप्त करके गवर्नर हॉल से बाहर चला गया। शोर मचाते, सजीव और कुछ तो उल्लासित कुलीन उसके पीछे-पीछे चल दिये और जब वह अपना फ़र-कोट पहनता हुआ गुबेर्निया के कुलीन-मुखिया के साथ मैत्रीपूर्ण ढंग से बातचीत कर रहा था, तो वे उसे घेर कर खड़े रहे। लेविन, जो हर चीज़ की गहराई में जाना और किसी भी बात से अपरिचित नहीं रहना चाहता था, कुलीनों की इसी भीड़ में खड़ा था और उसने गवर्नर को मुखिया से यह कहते सुना — “कृपया मारीया इवानोव्ना से कह दीजिये कि मेरी पत्नी को यह जानकर बहुत अफ़सोस हुआ कि उन्हें अनाथालय को देखने जाना पड़ रहा है।” गवर्नर के जाने के फ़ौरन बाद कुलीनों ने प्रफुल्ल मन से अपने फ़र-कोट पहने और सभी गिरजे को चल दिये।

गिरजाघर में लेविन ने अन्य सभी कुलीनों के साथ हाथ उठाकर पादरी के पीछे-पीछे शब्दों को दोहराते हुए वह सब कुछ पूरा करने की, जिसकी गवर्नर ने आशा प्रकट की थी, ज़ोरदार क़सम खाई। गिरजे की प्रार्थना लेविन को हमेशा बहुत प्रभावित करती थी और जब उसने “सलीब को चूमता हूँ” शब्द कहे तथा इन्हीं शब्दों को दोहरानेवाले जवान तथा बूढ़े लोगों पर नज़र डाली, तो उसका हृदय भाव-विह्वल हो उठा।

दूसरे और तीसरे दिन कुलीनों की धनराशि और लड़कियों के हाई स्कूल की चर्चा होती रही और जैसा कि कोज़्निशेव ने कहा ये कोई महत्त्वपूर्ण चीज़ें नहीं हैं। अपने कामों के लिये दौड़-धूप करनेवाले लेविन ने इनकी ओर ध्यान नहीं दिया। चौथे दिन गुबेर्निया की रक़मों के हिसाब-किताब की जांच हुई। इसी को लेकर नई पार्टी का पुरानी पार्टी से पहली बार टकराव हुआ। जांच-कमेटी ने रिपोर्ट पेश की कि हिसाब-किताब बिल्कुल ठीक है। गुबेर्निया का मुखिया उठकर खड़ा हुआ, उस पर भरोसा करने के लिये उसने कुलीनों को धन्यवाद दिया और आंखों में पानी भर लाया। कुलीनों ने ख़ूब ज़ोर से तालियां बजाकर

उसका अभिवादन किया और उससे हाथ मिलाया। किन्तु इसी समय कोज़िनशेव की पार्टी के एक कुलीन ने कहा कि उसके कानों में भनक पड़ी है कि कमेटी ने हिसाब-किताब की जांच-पड़ताल नहीं की, क्योंकि वह इसे गुबेर्निया के मुखिया का अपमान मानती है। जांच-कमेटी के एक सदस्य ने असावधानीवश इस बात की पुष्टि कर दी। तब एक नाटे, एकदम जवान लगनेवाले कुलीन ने, जिसकी ज़बान बड़ी ज़हरीली थी, कहा कि गुबेर्निया के मुखिया को सम्भवतः हिसाब-किताब पेश करके ज़्यादा खुशी होगी और कमेटी के सदस्य ज़रूरत से ज़्यादा नम्रता दिखाकर मुखिया को इस नैतिक प्रसन्नता से वंचित रख रहे हैं। तब कमेटी के सदस्यों ने अपनी रिपोर्ट वापिस ले ली और कोज़िनशेव बड़े तर्कपूर्ण ढंग से यह सिद्ध करने लगा कि उन्हें या तो यह स्वीकार अथवा अस्वीकार करना चाहिये कि हिसाब-किताब की जांच हुई है या नहीं हुई और उसने इस उलझन की बहुत विस्तारपूर्वक चर्चा की। विरोधी पार्टी के एक बड़े बातूनी व्यक्ति ने कोज़िनशेव की आपत्ति की, उसके बाद स्विजाज्स्की और फिर ज़हर-बुभी ज़बान वाला कुलीन बोला। यह बहस बहुत देर तक चलती रही और कोई नतीजा नहीं निकला। लेविन को हैरानी हुई कि वे इस मामले पर इतनी देर तक बहस करते रहे, और खासकर इसलिये कि जब उसने कोज़िनशेव से पूछा कि क्या पैसे का गोल-माल हुआ है, तो उसने जवाब दिया –

“अरे नहीं। वह ईमानदार आदमी है। किन्तु कुलीनों के मामलों को पुराने पितृतन्त्रात्मक ढंग से चलाने की इस नीति पर चोट करना ज़रूरी था।”

पांचवें दिन उयेज़्दों के मुखिया चुने गये। कुछ उयेज़्दों में यह दिन काफ़ी तूफ़ानी रहा। सेलेज़्नेव उयेज़्द में स्विजाज्स्की को मतदान के बिना एकमत से चुन लिया गया और इसी खुशी में उस दिन उसके यहां दावत हुई।

(२७)

छठे दिन गुबेर्निया के चुनाव होनेवाले थे। छोटे-बड़े सभी हॉल तरह-तरह की वर्दियां पहने कुलीनों से भरे हुए थे। बहुत से तो केवल इसी

दिन के लिये आये थे। एक अर्से से जिनकी भेंट नहीं हुई थी, क्रीमिया, पीटर्सबर्ग और विदेशों से आये हुए परिचित लोग हॉलों में एक-दूसरे से मिल रहे थे। गुबेर्निया के मुखिया की मेज़ के आस-पास, जिसके ऊपर सम्राट का चित्र टंगा था, वाद-विवाद हो रहा था।

छोटे और बड़े हॉलों में उपस्थित कुलीन दलों में बंटे हुए थे और उनकी शत्रुता तथा अविश्वासपूर्ण नज़रों, पराये लोगों के निकट आने पर उनके चुप्पी साध लेने और इस चीज़ से कि कुछ तो खुसुर-फुसुर करते हुए दालान के सिरे पर चले जाते थे, यह स्पष्ट था कि हर पक्ष दूसरे से कुछ छिपा रहा है। बाहरी तौर पर कुलीन दो हिस्सों—पुरानी और नई पीढ़ी वालों—में साफ़ बंटे दिखाई दे रहे थे। पुरानी पीढ़ी वाले तो अधिकतर बन्द गले की पुरानी वर्दियां और टोप पहने थे तथा तलवारें लगाये हुए थे या फिर नौसेना, घुड़सेना अथवा पैदल सेना की वे विशेष वर्दियां पहने थे, जो वे सैनिक सेवा के समय कभी पहनते रहे होंगे। पुरानी पीढ़ी के कुलीनों की वर्दियां पुराने ढंग से सिली हुई थीं, कंधों पर फुलाव थे, ये स्पष्टतः छोटी थीं, कमर पर ऊंची और तंग थीं मानो उन्हें पहननेवाले बड़े हो गये हों। जवान कुलीन सफ़ेद वास्कटों सहित खुले बटनों वाली ऐसी वर्दियां पहने थे, जो कमर पर लम्बी और कंधों पर चौड़ी थीं या फिर न्याय-मन्त्रालय की काले कालरों वाली वर्दियां, जिन पर लारेल के पत्ते कढ़े हुए थे। जवान कुलीन ही दरबारी वर्दियां पहने थे, जो भीड़ में कभी-कभी दिखायी देती थीं।

किन्तु बूढ़े और जवान कुलीनों का यह विभाजन पार्टियों के अनुरूप नहीं था। जैसा कि लेविन ने देखा, कुछ जवान कुलीन पुरानी पार्टी के हिमायती थे और इसके विपरीत, कुछ बहुत ही बूढ़े कुलीन स्विजा-ज्स्की के साथ कानाफूसी कर रहे थे और स्पष्टतः नई पीढ़ी के जोरदार समर्थक थे।

लेविन अपने लोगों के साथ छोटे हॉल में खड़ा था, जहां वे कुछ खा-पी और धूम्रपान कर रहे थे, तथा बहुत ध्यान से उनकी बातें सुनता हुआ उन्हें समझने के लिये व्यर्थ ही अपने दिमाग पर पूरा जोर डाल रहा था। कोज़िशेव उनका केन्द्र-बिन्दु था और दूसरे लोग उसे घेरे हुए थे। वह अब स्विजाज्स्की और उन्हीं की पार्टी के समर्थक, एक अन्य उयेज़्द के मुखिया ख़्ल्यूस्तोव की बातें सुन रहा था। ख़्ल्यूस्तोव

इस बात के लिये राजी नहीं हो रहा था कि वह अपने उयेज़्द के प्रतिनिधियों के साथ स्नेत्कोव से चुनाव के लिये खड़ा होने का अनुरोध करने जाये, मगर स्वियाज्स्की उसे ऐसा करने को मना रहा था तथा कोज़्निशेव इस योजना का अनुमोदन कर रहा था। लेविन यह नहीं समझ पा रहा था कि विरोधी पार्टी के ये लोग उस मुखिया से चुनाव लड़ने का क्यों अनुरोध करना चाहते थे, जिसे वे पराजित करने के इच्छुक थे।

दरबारी वर्दी पहने, कुछ खाने और जाम चढ़ाने के बाद कढ़े किनारों वाले सुगन्धित, महीन रूमाल से मुंह पोंछते हुए ओब्लोन्स्की इन लोगों के पास आया और अपने दोनों गलमुच्छों को संवारते हुए बोला —

“तो अपना मोर्चा साध रहे हैं, सेर्गेई इवानोविच।”

और बातचीत सुनने के बाद उसने स्वियाज्स्की के विचार की पुष्टि की —

“एक ही उयेज़्द काफी है और स्वियाज्स्की तो स्पष्टतः विरोधी है,” उसने ये शब्द कहे, जो लेविन के सिवा बाक़ी सबकी समझ में आ गये।

“अरे कोस्त्या, तुम्हें भी इसमें मज़ा आने लगा?” उसने लेविन को सम्बोधित किया और उसकी बांह थाम ली। लेविन को मज़ा लेकर खुशी होती, मगर वह समझ नहीं पा रहा था कि क्रिस्सा क्या है और बातचीत करनेवालों से कुछ क़दम दूर हटने पर उसने ओब्लोन्स्की से कहा कि गुबेर्निया के मुखिया से चुनाव लड़ने का अनुरोध करने में क्या तुक है, यह बात उसके पल्ले नहीं पड़ रही है।

“*O sancta simplicitas!* \*” ओब्लोन्स्की ने उत्तर दिया और संक्षेप में तथा अच्छी तरह लेविन को सारी बात समझा दी।

पिछले चुनावों की तरह यदि सभी उयेज़्दों की ओर से गुबेर्निया के मुखिया से चुनाव लड़ने का अनुरोध किया जाता, तो उसे मतदान के बिना सर्वसम्मति से चुन लिया जाता। वे ऐसा नहीं चाहते थे। अब आठ उयेज़्द ऐसी प्रार्थना करने को तैयार हैं और अगर दो उयेज़्द

---

\* अरे, तुम तो बिल्कुल भोले हो! (लैटिन)

ऐसा करने से इन्कार कर देंगे, तो स्नेत्कोव चुनाव के लिये खड़ा होने का इरादा छोड़ सकता है। तब पुरानी पार्टी अपने लोगों में से किसी अन्य को चुन सकती है, क्योंकि उनके सारे पूर्वानुमान गड़बड़ हो जायेंगे। किन्तु यदि स्विजाज्स्की का एक ही उयेज़्द ऐसी प्रार्थना नहीं करेगा, तो स्नेत्कोव चुनाव के लिये खड़ा हो जायेगा। उसके पक्ष में जान-बूझकर कुछ वोट भी दे दिये जायेंगे, ताकि पुरानी पार्टी चक्कर में पड़ जाये और जब हमारा प्रतिनिधि खड़ा होगा, तो वे अपने कुछ वोट उसे दे देंगे।

लेविन समझ तो गया, मगर पूरी तरह नहीं। वह कुछ सवाल और पूछना चाहता था कि अचानक सभी बोलने लगे, शोर मचाने लगे और बड़े हॉल की तरफ़ चल पड़े।

“क्या मामला है? किसे?” “अधिकारपत्र? किसको? क्या?” “खण्डन कर दिया?” “अधिकारपत्र नहीं है।” “फ़्लेरोव को अनुमति नहीं दी जा रही।” “अगर उस पर मुक़दमा चल रहा है, तो क्या हुआ?” “ऐसे तो वे किसी को भी अनुमति नहीं देंगे। यह नीचता है।” “क्रानून!” लेविन को सभी ओर से ऐसी आवाज़ें सुनाई दीं और जल्दी-जल्दी कहीं बढ़े जाते और डरते हुए कि कहीं कोई बात छूट न जाये सब लोगों के साथ वह बड़े हॉल की तरफ़ चल दिया तथा कुलीनों की भीड़ से घिरा हुआ गुबेर्निया के मुखिया की मेज़ के करीब जा पहुंचा, जहां गुबेर्निया का मुखिया, स्विजाज्स्की और दूसरे दल-नेता बड़ी गर्मागर्म बहस कर रहे थे।

(२८)

लेविन काफी दूर खड़ा था। खरखराती आवाज़ के साथ जोर से सांस लेता हुआ उसके पास खड़ा एक कुलीन और अपने जूते के मोटे तले से ध्वनि पैदा करता हुआ दूसरा कुलीन उसके अच्छी तरह बात सुनने में बाधा डाल रहे थे। उसे दूर से मुखिया की धीमी आवाज़, फिर विषैले कुलीन की चीखती-सी आवाज़ और इसके बाद स्विजाज्स्की का स्वर ही सुनाई दिया। जहां तक उसकी समझ में आया, ये लोग क्रानून की धारा और “जिस पर मुक़दमा चल रहा है,” इन शब्दों के अर्थ को लेकर बहस कर रहे थे।

मेज़ की ओर बढ़ते हुए कोज़िनशेव को रास्ता देने के लिये लोगों की भीड़ एक तरफ़ को हट गयी। कोज़िनशेव ने विषैले कुलीन की बात ख़त्म होने तक प्रतीक्षा की और फिर यह कहा कि क़ानून की सम्बन्धित धारा के शब्दों पर विचार करना अधिक सही तरीक़ा होगा और उसने सेक्रेटरी से इस धारा को ढूँढ़ने को कहा। धारा में कहा गया था कि मतभेद होने पर मतदान करवाना चाहिये।

कोज़िनशेव ने धारा को पढ़ा और उसका अर्थ स्पष्ट करना आरम्भ किया। किन्तु एक लम्बे, मोटे, झुके हुए कंधों तथा रंगी हुई मूँछों वाले ज़मींदार ने, जो तंग-सी वर्दी पहने था और जिसका कालर उसकी गर्दन में धंस रहा था, कोज़िनशेव को बीच में ही टोक दिया। वह मेज़ के करीब गया, उसने उस पर ज़ोर से अंगूठी मारकर उसे ठक-ठकाया और चिल्लाकर कहा —

“मतदान हो! वोट लिये जायें! बात करना बेकार है! मतदान हो!”

अब तो कई लोग एक साथ बोलने लगे और अंगूठी वाला लम्बा-तड़ंगा कुलीन अधिकाधिक गुस्से में आता हुआ अधिकाधिक ज़ोर से चिल्लाने लगा। मगर वह क्या कह रहा था, यह समझ पाना सम्भव नहीं था।

यह ज़मींदार भी वही कह रहा था, जो कोज़िनशेव ने सुझाया था। किन्तु स्पष्टतः उसे कोज़िनशेव और उसकी पार्टी से सख्त नफ़रत थी। घृणा का यह भाव उसकी अपनी सारी पार्टी को प्रभावित कर रहा था और दूसरे पक्ष की ओर से ऐसा ही, यद्यपि कुछ अधिक शिष्ट ढंग से विरोध प्रकट किया जा रहा था। चीख-चिल्लाहट ने कुछ देर को सब कुछ ऐसे गड़बड़ कर दिया कि गुबेर्निया के मुखिया को शान्ति और व्यवस्था के लिये अनुरोध करना पड़ा।

“मतदान, मतदान हो! जो कुलीन है वह यह समझता है। हम खून बहाते हैं... सम्राट को हम पर विश्वास है... कृपया वोट लीजिये! कैसी घटिया बात है!...” सभी ओर से क्रोध और बौखलाहट की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। आंखों में और चेहरों पर आवाज़ों से भी ज़्यादा झल्लाहट और गुस्सा था। वे तो अदम्य घृणा को व्यक्त कर रहे थे। लेविन बिल्कुल नहीं समझ पा रहा था कि यह सब क्रिस्सा

क्या है। जिस अजीब ढंग से इस बात को तय किया जा रहा था कि फ़्लेरोव के मामले पर मतदान हो या न हो, उस पर हैरानी हो रही थी। जैसा कि कोज़िन्शेव ने बाद में स्पष्ट किया, वह इस बात को भूल जाता था कि सार्वजनिक कल्याण के लिये गुबेर्निया के मुखिया की गद्दी उलटना ज़रूरी था, ऐसा करने के लिये अधिक वोट पाना ज़रूरी था, अधिक वोट पाने के लिये फ़्लेरोव को मतदान का अधिकार दिलाना ज़रूरी था और उसके ऐसा करने के अधिकार को मान्यता दिलवाने के लिये यह स्पष्ट करना ज़रूरी था कि क़ानून की धारा का क्या अर्थ लगाया जाये।

“एक वोट सारे मामले को तय कर सकता है और यदि व्यक्ति सार्वजनिक ध्येय की पूर्ति के लिये कुछ करना चाहता है, तो उसे गम्भीर और अडिग होना चाहिये,” कोज़िन्शेव ने निष्कर्ष निकाला।

किन्तु लेविन यह भूल गया था और इन भले लोगों को, जिनका वह आदर करता था, ऐसी अप्रिय और उत्तेजित मनःस्थिति में देखकर उसे दुख हो रहा था। मन के इस बोझ से मुक्ति पाने के लिये वह इस वाद-विवाद के अन्त का इन्तज़ार किये बिना ही हॉल में चला गया, जहां कैंटीन के आस-पास बैरों के सिवा और कोई नहीं था। बर्तनों को साफ़ करने, प्लेटों और जामों को ढंग से रखने के काम में जुटे हुए बैरों, उनके शान्त और सजीव चेहरों को देखकर उसे अप्रत्याशित ही ऐसी राहत महसूस हुई मानो वह घुटन वाले कमरे से खुले में, ताज़ा हवा में बाहर आ गया हो। वह खुशी से बैरों को देखता हुआ इधर-उधर आने-जाने लगा। उसे यह देखना बहुत अच्छा लगा कि सफ़ेद गलमुच्छों वाला एक बुज़ुर्ग बैरा जवान बैरों को, जो उसकी खिल्ली उड़ा रहे थे, तिरस्कार से देखता हुआ, उन्हें यह सिखा रहा था कि नेप्किनों को कैसे तह किया जाये। लेविन ने बूढ़े बैरे से बातचीत शुरू करनी चाही ही थी कि कुलीनों के न्यास-संगठन के वृद्ध सेक्रेटरी ने, जिसकी यह विशेषता थी कि वह गुबेर्निया के सभी कुलीनों को उनके नामों और पितृनामों से जानता था, उसका ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा —

“कृपया सुनिये, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच, आपके भाई साहब आपको याद फ़रमा रहे हैं। मतदान करना है।”

लेविन हॉल में दाखिल हुआ, उसे सफ़ेद गोला दे दिया गया और अपने भाई के पीछे-पीछे वह उस मेज़ की तरफ़ गया, जिसके करीब स्विट्याज्स्की खड़ा था। उसके चेहरे पर अर्थपूर्ण और व्यंग्यपूर्ण भाव था तथा वह अपनी दाढ़ी को मुट्ठी में लेकर सूँघता था। कोज़्निशेव ने बक्स में हाथ डालकर अपना गोला कहीं रख दिया और लेविन को जगह देकर वहीं रुक गया। लेविन आगे बढ़ा, किन्तु पूरी तरह से यह भूलकर कि क्या क्रिस्सा है तथा बुरी तरह घबराहट महसूस करते हुए उसने कोज़्निशेव से पूछा कि “कहां रखूं इसे?” उसने बहुत धीमे-से यह प्रश्न किया था और चूंकि आस-पास लोग बातें कर रहे थे, इसलिये उसे यह आशा थी कि कोई उसकी बात नहीं सुनेगा। किन्तु बातें करने-वाले चुप हो गये और उसका यह बेहूदा सवाल सुनायी दे गया। कोज़्निशेव के माथे पर बल पड़ गये।

“यह हर किसी की अपनी आस्था का मामला है,” उसने कड़ाई से जवाब दिया।

कुछ लोग मुस्करा दिये। लेविन के चेहरे पर शर्म की लाली दौड़ गयी, उसने गाढ़े के नीचे झटपट हाथ घुसेड़ा और चूंकि गोला दायें हाथ में था, इसलिये उसे दायाँ ओर ही रख दिया। गोला रखने के बाद उसे याद आया कि बायाँ हाथ भी गाढ़े के नीचे घुसेड़ना चाहिये था और उसने ऐसा कर दिया, मगर देर से किया और इसलिये और भी ज़्यादा घबराहट महसूस करते हुए सबसे पीछे वाली क़तारों में जा खड़ा हुआ।

“एक सौ छब्बीस पक्ष में। अठानवे विपक्ष में!” कुछ तुतलाती आवाज़ में बोलनेवाले सेक्रेटरी ने घोषणा की। इसके बाद लोगों का ठहाका गूँज उठा—वोटों के बक्स में से दो अख़रोट और एक बटन भी निकले थे। फ़्लेरोव को वोट देने की अनुमति मिल गयी थी और नयी पार्टी ने मैदान जीत लिया था।

किन्तु पुरानी पार्टी अपने को पराजित नहीं मानती थी। लेविन ने लोगों को स्नेत्कोव से यह अनुरोध करते सुना कि वह चुनाव के लिये अपना नाम पेश करे और देखा कि कुलीनों की भीड़ ने मुखिया को घेर लिया है और वह उनसे कुछ कह रहा है। लेविन निकट आया। कुलीनों के अनुरोध के उत्तर में स्नेत्कोव उस पर भरोसा करने और

अपने प्रति प्यार दिखाने के लिये, जिसके योग्य खुद को वह नहीं समझता था, धन्यवाद दे रहा था। उसके अनुसार उसकी सेवा तो केवल इतनी थी कि वह कुलीनों के प्रति निष्ठावान रहा था और उसने अपने जीवन के बारह वर्ष उनकी सेवा में अर्पित कर दिये थे। उसने अनेक बार ये शब्द दोहराये – “निष्ठा और सचाई से जितनी हो सकी सेवा की, आपके स्नेह का ऊंचा मूल्यांकन करता हूं और आभार मानता हूं”। अचानक आंसुओं के कारण गला रुंध जाने पर वह चुप हुआ और हॉल से बाहर चला गया। अपने प्रति किये गये अन्याय की चेतना या कुलीनों के प्रति प्यार या स्थिति के तनाव के कारण, जिसमें वह अपने को शत्रुओं से घिरा हुआ अनुभव कर रहा था, उसकी आंखें भर आयी थीं, किन्तु उसकी मानसिक विह्वलता ने दूसरों पर भी प्रभाव डाला, अधिकांश कुलीनों के मन भर आये और लेविन को भी स्नेहकोव के प्रति कोमल भावनाओं की अनुभूति हुई।

दरवाजे लांघते समय गुबेर्निया का मुखिया लेविन से टकरा गया।

“क्षमा कीजिये, कृपया क्षमा कीजिये,” एक अपरिचित की भांति मुखिया ने कहा, किन्तु उसे पहचान लेने पर भेंपता-सा मुस्करा दिया। लेविन को लगा कि वह कुछ कहना चाहता था, मगर मानसिक विह्वलता के कारण कह नहीं पाया। उसके चेहरे के भाव, तमगों, सुनहरी किनारी से सजे सफ़ेद पतलून समेत वर्दी से ढकी सारी आकृति तथा जिस तेज़ी से वह उसके निकट से गुज़रा, इन सब चीज़ों ने लेविन को ऐसे जानवर की याद दिला दी, जिसका शिकारी पीछा कर रहे हो और जो यह देख रहा हो कि उसकी हालत बड़ी खराब है। मुखिया के चेहरे के इस भाव ने विशेष रूप से लेविन के मन को छू लिया, क्योंकि सिर्फ़ एक ही दिन पहले वह न्यास के मामले को लेकर उसके घर गया था और एक दयालु तथा सद्गृहस्थ के रूप में उसने उसकी सारी गरिमा को देखा था। पुराने, पारिवारिक फ़र्नीचर से सजा हुआ बड़ा-सा घर; सजे-धजे नहीं, कुछ कुछ गन्दे, किन्तु आदर करनेवाले पुराने नौकर, जो स्पष्टतः ऐसे भूतपूर्व भू-दास थे, जिन्होंने अपने स्वामी का साथ नहीं छोड़ा था; लेस लगी टोपी पहने और तुर्की शाल ओढ़े मोटी तथा खुशमिज़ाज बीवी, जो अपनी नातिन को प्यार कर रही थी, छठे दर्जे में पढ़नेवाला किशोर बेटा, जो हाई स्कूल से घर आया

था और जिसने पिता का अभिवादन करते हुए उसका बड़ा-सा हाथ चूमा था ; गृह-स्वामी के प्रभावित करनेवाले स्नेहपूर्ण शब्द और संकेत — इन सब चीजों ने एक दिन पहले अनचाहे ही लेविन के मन में आदर और सहानुभूति का भाव पैदा किया था। यह बूढ़ा अब लेविन के मन को छू रहा था , उसे वह दयनीय प्रतीत हो रहा था और उसका मन हुआ कि उससे कुछ मधुर शब्द कहे।

“तो ऐसा समझना चाहिये कि आप ही फिर से हमारे मुखिया होंगे ,” लेविन ने कहा।

“शायद ही ,” भयभीत-सा होकर लेविन की ओर मुड़ते हुए उसने उत्तर दिया। “मैं थक चुका हूं , बूढ़ा हो गया हूं। मुझसे अधिक योग्य और जवान लोग हैं , उन्हें यह सेवा-कार्य सम्भालना चाहिये।”

और मुखिया बगल वाले कमरे में गायब हो गया।

सबसे महत्वपूर्ण क्षण आ गया। चुनावों का वक्त आ पहुंचा था। दोनों पार्टियों के नेतागण सफ़ेद और काले गोलों को उंगलियों पर गिनकर यह अनुमान लगा रहे थे कि उन्हें कितने वोट मिलेंगे।

फ़्लेरोव को लेकर हुई बहस से नई पार्टी को न केवल उसका एक वोट ही मिल गया था , बल्कि समय भी मिला था और वह उन तीन कुलीनों को भी बुलवा सकती थी , जो पुरानी पार्टी की तिकड़मबाज़ी के फलस्वरूप चुनाव में भाग लेने से वंचित हो गये थे। स्नेत्कोव के पिट्टुओं ने दो कुलीनों को , जिन्हें पीने की लत थी , बेहद पिलाकर नशे में धुत्त कर दिया था और तीसरे की वर्दी गायब कर दी थी।

यह मालूम होने पर नयी पार्टी वालों ने वाद-विवाद के समय अपने कुछ लोगों को किराये की बग़्गी में भेज दिया था , ताकि वे कुलीन के लिये वर्दी ले आयें और नशे में धुत्त दो में से एक को सभा में खींच लायें।

“एक को ले आया हूं , उस पर ख़ूब पानी डाला है ,” उस ज़मींदार ने स्विजाज्स्की को बताया , जो इस पियक्कड़ कुलीन को लेने गया था। “कुछ बुरा नहीं , काम चल जायेगा।”

“बहुत ज़्यादा तो नहीं पिये है , गिर तो नहीं पड़ेगा ?” दुखी मन से सिर हिलाते हुए स्विजाज्स्की ने पूछा।

“नहीं , अच्छी हालत में है। बस , यहां उसे कोई और न पिला

दें ... मैंने कैटीन वाले से कह दिया है कि उसे किसी हालत में कुछ भी पीने को न दिया जाये। ”

(२६)

संकरा-सा हॉल , जिसमें कुछ खाना-पीना और धूम्रपान हो रहा था , कुलीनों से भरा हुआ था। उत्तेजना बढ़ती जा रही थी और सभी के चेहरों पर परेशानी झलक रही थी। दल-नेता , जिन्हें मतदान के गोलों का सारा हिसाब-किताब और ब्योरा मालूम था , खास तौर पर बहुत उत्तेजित थे। ये मानो कुछ ही समय बाद होनेवाली लड़ाई के कमांडर थे। बाक़ी लोग , जो आम फ़ौजियों जैसे थे , बेशक लड़ाई के लिये तैयार हो रहे थे , फिर भी फ़िलहाल तो अपना मन बहलाने की फ़िक्र में थे। उनमें से कुछ खड़े या मेज़ के पास बैठे हुए खा-पी रहे थे और अन्य सिगरेटों के कश खींचते हुए लम्बे कमरे में इधर-उधर आ-जा रहे थे , उन दोस्तों-मित्रों से बातचीत कर रहे थे , जिनके साथ लम्बे अर्से से उनकी मुलाक़ात नहीं हुई थी।

लेविन का खाने को मन नहीं था , सिगरेट वह पीता नहीं था और अपने लोगों यानी कोज़िन्शेव , ओब्लोन्स्की , स्विद्याज़्स्की , आदि के पास इसलिये नहीं जाना चाहता था कि रिसाले की वर्दी पहने ब्रोन्स्की उनके पास खड़ा हुआ सजीव बातचीत में व्यस्त था। लेविन ने एक दिन पहले , चुनाव के समय भी उसे देखा था , मगर चूँकि उससे मिलना नहीं चाहता था , इसलिये बड़े यत्न से कन्नी काट गया था। वह खिड़की के करीब जाकर बैठ गया और अपने इर्द-गिर्द लोगों के दलों को देखने और उनकी बातें सुनने लगा। लेविन को इसलिये उदासी अनुभव हो रही थी कि , जैसा कि वह देख रहा था , बाक़ी सभी लोग बड़े रंग में थे , जिन्हीं विचारों में डूबे हुए या व्यस्त थे और केवल वही तथा नौसेना की वर्दी पहने , दांतों के बिना और होंठों से कुछ बड़बड़ाता हुआ बहुत ही बूढ़ा एक व्यक्ति , जो उसके करीब आ बैठा था , निकम्मे थे और इन्हें किसी चीज़ में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

“वह तो बड़ा ही बदमाश है ! मैंने उससे कहा भी था , मगर उसकी बला से। इसमें हैरानी की भी क्या बात है ! वह तीन सालों

में भी जमा नहीं कर पाया ,” भुके कंधों वाला एक नाटा ज़मींदार , जिसके तेल लगे चिकने बाल उसकी वर्दी के कढ़े हुए कालर पर पड़ रहे थे और जो स्पष्टतः चुनाव के लिये पहने गये घुटनों तक के नये बूटों की एड़ियां जोर से बजाता था , शब्दों पर बल देते हुए ऊंची आवाज़ में कहता जा रहा था। लेविन पर अप्रसन्नता की एक दृष्टि डालकर इस ज़मींदार ने तेज़ी से मुंह फेर लिया।

“कहा ही क्या जाये , यह गन्दा मामला है ,” नाटे ज़मींदार ने पतली-सी आवाज़ में उत्तर दिया।

इनके बाद एक मोटे-से जनरल को घेरे हुए ज़मींदारों की भीड़ तेज़ी से लेविन के निकट आई। ज़मींदार लोग स्पष्टतः बातचीत करने की ऐसी जगह ढूंढ़ रहे थे , जहां कोई उनकी बातचीत न सुन पाये।

“वह यह कहने की हिम्मत कैसे कर रहा है कि मैंने उसका पतलून चुरा लेने का आदेश दिया था। मेरे ख्याल में तो उसने उसे बेचकर सारे पैसे की शराब पी डाली है। मेरी जूती परवाह करती है उसकी और उसके प्रिंस होने की। उसे ऐसा कहने की जुर्रत नहीं करनी चाहिये , यह एकदम कमीनापन है !”

“हां , पर सुनिये तो ! वे धारा को आधार बना रहे हैं ,” दूसरे दल में कहा जा रहा था , “बीवी को तो कुलीन के रूप में दर्ज होना चाहिये था।”

“भाड़ में जाये धारा ! मैं दिल की बात कर रहा हूं। इसी के लिये तो हम श्रेष्ठ कुलीन लोग हैं। उन पर विश्वास करना चाहिये।”

“हुज़ूर , आइये चलें , *fine champagne.\**”

कुछ अन्य लोगों की भीड़ एक कुलीन के पीछे-पीछे चल रही थी , जो ऊंची आवाज़ में बोल रहा था – वह उन तीनों में से एक था , जिन्हें पिलाकर नशे में धुत्त कर दिया गया था।

“मैंने मारीया सेम्योनोव्ना को हमेशा यही सलाह दी है कि वह अपनी ज़मीन पट्टे पर दे दे , क्योंकि वह उसे कभी लाभ देनेवाली नहीं बना सकेगी ,” पकी मूंछों वाला ज़मींदार मधुर आवाज़ में कह रहा था , जो भूतपूर्व जनरल स्टाफ़ के कर्नल की वर्दी पहने था। यह वही

---

\* ब्रांडी। ( फ़्रांसीसी )

ज़मींदार था, जिसके साथ स्विजाज्स्की के यहां लेविन की भेंट हो चुकी थी। लेविन ने उसे फ़ौरन पहचान लिया। ज़मींदार ने भी लेविन को पहचाना और उन्होंने एक-दूसरे का अभिवादन किया।

“बहुत खुशी हुई। यह कैसे हो सकता है! बहुत अच्छी तरह से याद है। पिछले वर्ष मुखिया स्विजाज्स्की के यहां मुलाकात हुई थी।”

“तो आपकी खेतीबारी कैसी चल रही है?” लेविन ने पूछा।

“वैसे ही, घाटे में,” ज़मींदार ने लेविन के निकट रुकते हुए विनम्र मुस्कान किन्तु चैन और विश्वास के इस भाव के साथ, मानो ऐसा ही होना चाहिये, उत्तर दिया। “और आपका हमारे गुबेर्निया में कैसे आना हुआ?” उसने पूछा। “हमारे *coup d'état*\* में भाग लेने आये हैं क्या?” उसने दृढ़ता से, किन्तु फ़्रांसीसी शब्दों को बड़े भड़े ढंग से बोलते हुए पूछा। “सारा रूस ही यहां आ गया है — राजदरबारी लोग और लगभग मन्त्री तक।” उसने सफ़ेद पतलून और राजदरबार की वर्दी पहने तथा एक जनरल के साथ टहलते हुए ओब्लोन्स्की की प्रभावपूर्ण आकृति की ओर संकेत किया।

“मुझे यह मानना होगा कि मैं कुलीनों के इस चुनाव का महत्त्व अच्छी तरह नहीं समझता हूं,” लेविन ने कहा।

ज़मींदार ने लेविन की तरफ़ देखा।

“इसमें समझने की बात ही क्या है? कोई महत्त्व नहीं है इसका। दम तोड़ती संस्था है, जो केवल अपनी निश्चेष्टता के कारण चलती जा रही है। वर्दियों पर नज़र डालिये और वे भी यही बता रही हैं कि यह ग्राम-न्यायाधीशों और स्थायी सदस्यों, आदि की सभा, कुलीनों की नहीं।”

“तो आप इसमें क्यों आते हैं?” लेविन ने प्रश्न किया।

“सिर्फ़ आदत के कारण। फिर सम्पर्क भी तो बनाये रखने होते हैं। कुछ हद तक नैतिक कर्तव्य भी है। और अगर सच कहूं, तो अपना कुछ स्वार्थ भी है। मेरा दामाद सदस्य बनना चाहता है — वे लोग धनी नहीं हैं और मुझे उसकी मदद करनी चाहिये। ऐसे महानुभाव किसलिये आते हैं?” उसने उस विषय पर महानुभाव की ओर संकेत करते

---

\* राज्य का तख़्ता उलटना। ( फ़्रांसीसी )

हुए कहा, जो गुबेर्निया के मुखिया की मेज़ से बोला था।

“यह कुलीनों की नयी पीढ़ी है।”

“नयी पीढ़ी, तो नयी पीढ़ी है। लेकिन कुलीन तो नहीं। ये ज़मीनों वाले हैं, मगर हम ज़मींदार हैं। कुलीनों के रूप में ये स्वयं अपनी हत्या कर रहे हैं।”

“किन्तु आपका तो कहना है कि यह दम तोड़ती संस्था है।”

“दम तोड़ती, तो दम तोड़ती है, फिर भी उसके साथ आदरपूर्वक व्यवहार करना चाहिये। बेशक स्नेत्कोव को ही ले लीजिये... हम अच्छे हैं या नहीं, हजारों सालों में हमारा विकास हुआ है। मान लीजिये कि आपको अपने घर के सामने बगीचा लगाना है, उसकी ढंग से योजना बनानी है और वहां, आपकी उसी जगह पर, सौ साल पुराना एक पेड़ खड़ा है... वह चाहे बूढ़ा और गांठ-गंठीला हो चुका हो, फिर भी फूलों की क्यारियों के लिये तुम उस बूढ़े वृक्ष को तो नहीं काट दोगे, बल्कि क्यारियों की ऐसी व्यवस्था करोगे कि पेड़ का भी उपयोग हो जाये। एक साल में तो उसे इतना बड़ा करना सम्भव नहीं...” उसने सावधानी से कहा और इसी क्षण बातचीत का विषय बदल दिया। “आपकी खेतीबारी कैसी चल रही है?”

“कुछ अच्छी नहीं। पांच प्रतिशत से अधिक आय नहीं होती।”

“लेकिन आप अपने श्रम को क्यों नहीं गिनते। उसकी भी तो कुछ कीमत है न? मैं आपको अपनी बात बताता हूं। जब तक मैं खेतीबारी में नहीं फंसा था, सैनिक सेवा से तीन हजार पाता था। अब मैं सैनिक सेवा की तुलना में अधिक काम करता हूं और आपकी तरह ही पांच प्रतिशत पाता हूं। इसके लिये भी भगवान का कृतज्ञ हूं। अपना श्रम मुफ्त में देता हूं।”

“यदि सीधे-सीधे हानि होती है, तो आप ऐसा करते क्यों हैं?”

“बस, करता जा रहा हूं। और क्या किया जाये? आदत बन गयी है और मालूम है कि ऐसा ही करना चाहिये। इतना ही नहीं, यह भी कहूंगा,” खिड़की पर अपनी कोहनियां टिकाकर बातचीत में कुछ और डूबते हुए ज़मींदार ने अपनी बात जारी रखी, “बेटे की खेतीबारी में ज़रा ही दिलचस्पी नहीं है। शायद कोई विद्वान या वैज्ञानिक

बनेगा। सो कोई भी मेरे इस काम को जारी नहीं रखेगा। फिर भी करता चला जा रहा हूं। इस साल एक बाग़ लगा लिया।”

“हां, हां,” लेविन ने कहा, “बिल्कुल सही है आपकी बात। मैं हमेशा यह महसूस करता हूं कि मेरी खेतीबारी से मुझे मिलता-मिलाता कुछ नहीं, मगर फिर भी ऐसा करता जाता हूं... भूमि के प्रति एक ज़िम्मेदारी-सी अनुभव होती है।”

“लीजिये, मैं आपको एक और बात बताता हूं,” ज़मींदार ने चर्चा आगे बढ़ाई। “मेरा पड़ोसी एक व्यापारी था। मैंने उसे अपनी खेतीबारी दिखायी, बाग़ दिखाया। देखने के बाद बोला—‘आपके यहां और तो सब ठीक है, मगर बाग़ का मामला गड़बड़ है।’ सच यह है कि बाग़ बड़ी अच्छी हालत में है। ‘आपकी जगह मैं होता, तो मैं इस लाइम वृक्ष को काट डालता। किन्तु उस समय ऐसा करता, जब उस पर ताज़ा छाल आई होती। यहां लाइम के हजारों वृक्ष हैं और हर वृक्ष से बहुत सारी छाल हासिल की जा सकती है। आजकल छाल की अच्छी कीमत मिल रही है और साथ ही बहुत-सी इमारती लकड़ी भी हो जायेगी।”

“और इस तरह हासिल होनेवाली रक़म से वह ढोर-डंगर या कौड़ियों के मोल ज़मीन ख़रीद लेगा और किसानों को किराये पर दे देगा,” लेविन ने मुस्कराते हुए बात पूरी की और स्पष्ट था कि इस तरह के हिसाब-किताब की बात वह पहले भी बहुत बार सुन चुका है। “और वह मालामाल हो जायेगा। दूसरी ओर, हम और आप अगर उसी को बचाये रखें, जो हमारे पास है और उसे बच्चों के लिये छोड़ जायें, तो यह भी बड़ी बात होगी।”

“मैंने सुना है कि आपने शादी कर ली है?” ज़मींदार ने पूछा।

“हां,” लेविन ने गर्वपूर्ण प्रसन्नता के साथ उत्तर दिया। “हां, यह कुछ अजीब-सी बात है,” वह कहता गया, “हम भविष्य के बारे में सोचे-विचारे बिना जीते जा रहे हैं, मानो प्राचीन काल के ऐसे सन्यासी हों, जिन्हें किसी पावन अग्नि की रक्षा का दायित्व सौंपा गया हो।”

ज़मींदार ने अपनी सफ़ेद मूंछों के नीचे दांत निपोरे।

“हमारे बीच भी कुछ ऐसे हैं, जैसा कि हमारा दोस्त स्विजाज्स्की

या अब काउंट ब्रोन्स्की, जो यहां आ बसा है, ये लोग खेतीबारी के काम को औद्योगिक ढंग से चलाना चाहते हैं। किन्तु अभी तक तो पूंजी के नुकसान के सिवा उन्हें कोई फ़ायदा नहीं हुआ।”

“लेकिन हम व्यापारियों की तरह क्यों नहीं करते? छाल के लिये वृक्षों को क्यों नहीं काटते?” लेविन ने उस विचार की ओर लौटते हुए पूछा, जिसने उसे आश्चर्यचकित कर दिया था।

“जैसा कि आपने कहा, पावन अग्नि की रक्षा करते हैं। वह हम कुलीनों का काम नहीं है। और हमारा कुलीनों का काम यहां, चुनावों में नहीं, बल्कि अपने घर-घरानों में किया जाता है। फिर हमारी नैसर्गिक प्रवृत्ति भी है कि क्या किया जाये और क्या न किया जाये। किसानों का भी यही हाल है। कभी-कभी देखता हूं कि अच्छा किसान जितनी भी सम्भव होती है, ज़मीन ले लेता है। बुरी ज़मीन हो, फिर भी उसमें खेती करता जाता है। लाभ के बिना। हानि उठाते हुए।”

“बस, यही हमारा हाल है,” लेविन ने कहा। “बहुत, बहुत ही खुशी हुई आपसे मिलकर,” उसने स्विद्याज्स्की को अपनी ओर आते देखकर इतना और जोड़ दिया।

“आपके यहां मिलने के बाद पहली बार हमारी यहां मुलाकात हुई है,” ज़मींदार ने कहा, “सो खूब बातें हो गयीं।”

“नये रंग-ढंग को कोस लिया?” स्विद्याज्स्की ने मुस्कराते हुए पूछा।

“हां, सो भी किया।”

“दिल हल्का कर लिया।”

( ३० )

स्विद्याज्स्की ने लेविन का हाथ थामा और उसे साथ लेकर अपने लोगों की ओर चल दिया।

लेविन के लिये अब तो ब्रोन्स्की से कन्नौ काटना सम्भव नहीं था। वह ओब्लोन्स्की और कोज़िनशेव के पास खड़ा था और अपने निकट आते हुए लेविन की तरफ़ देख रहा था।

“बहुत खुशी हुई। लगता है कि प्रिंसेस श्चेर्बात्स्काया के यहां...

आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था ,” लेविन की ओर हाथ बढ़ाते हुए ब्रोन्स्की ने कहा ।

“हां , बहुत अच्छी तरह से याद है मुझे हमारी मुलाकात ,” लेविन ने उत्तर दिया , लाल सुर्ख होते हुए मुंह फेर लिया और भाई से बात करने लगा ।

ब्रोन्स्की तनिक मुस्कराया और लेविन के साथ बातचीत करने की स्पष्टतः कोई इच्छा न रखते हुए उसने स्वियाज्स्की से बातचीत जारी रखी । किन्तु लेविन अपने भाई से बात करते हुए लगातार मुड़-मुड़कर ब्रोन्स्की की ओर देखता और यह सोचता रहा कि अपनी अशिष्टता के बुरे प्रभाव को दूर करने के लिये उससे क्या बात करे ।

“अब किस बात की देर है ?” लेविन ने स्वियाज्स्की और ब्रोन्स्की की ओर देखते हुए पूछा ।

“स्नेत्कोव के जवाब की । वह या तो हां या न करे ,” स्वियाज्स्की ने उत्तर दिया ।

“तो वह राजी हुआ या नहीं ?”

“यही तो मुसीबत है , न राजी होता है , न इन्कार करता है ,” ब्रोन्स्की ने कहा ।

“अगर वह इन्कार कर देगा तो मुखिया के लिये कौन खड़ा होगा ?” लेविन ने ब्रोन्स्की की ओर देखते हुए सवाल किया ।

“जो कोई भी चाहेगा ,” स्वियाज्स्की ने उत्तर दिया ।

“आप खड़े होंगे ?” लेविन ने पूछा ।

“मैं तो हरगिज़ नहीं ,” स्वियाज्स्की ने परेशान होते और को-ज़िशेव के साथ निकट ही खड़े विषैले महानुभाव की ओर सहमी-सी नज़र से देखते हुए कहा ।

“तो कौन खड़ा होगा ? नेवेदोव्स्की ?” लेविन ने यह अनुभव करते हुए कि वह गड़बड़भाले में फंस गया है , पूछा ।

किन्तु यह तो और भी बुरा था । नेवेदोव्स्की और स्वियाज्स्की — ये दोनों उम्मीदवार थे ।

“मैं तो किसी भी हालत में नहीं ,” विषैले महानुभाव ने उत्तर दिया ।

यह खुद नेवेदोव्स्की था । स्वियाज्स्की ने लेविन से उसका परिचय करवाया ।

“तो तुम पर भी चुनाव का जादू चल गया?” ओब्लोन्स्की ने ब्रोन्स्की को आंख मारकर कहा। “यह घुड़दौड़ों की तरह है। शर्त भी लगायी जा सकती है।”

“हां, यह भी दिल-दिमाग पर हावी हो जाता है,” ब्रोन्स्की ने जवाब दिया। “एक बार कोई काम हाथ में ले लेने पर उसे पूरा करने को मन होता है। संघर्ष जो ठहरा!” ब्रोन्स्की ने नाक-भौंह सिकोड़ते और मजबूत जबड़ों को भींचते हुए कहा।

“कैसा प्रबन्धक है स्विजाज्स्की! हर बात को वह कैसे साफ़ तौर पर देखता है।”

“हां, यह तो है,” ब्रोन्स्की ने बेख्याली से जवाब दिया।

खामोशी छा गयी और इस बीच ब्रोन्स्की को चूंकि किसी चीज़ की तरफ़ तो देखना ही था, उसने लेविन पर नज़र डाली, उसके पैरों और वर्दी की तरफ़, फिर चेहरे की ओर देखा और उसकी उदास आंखों को अपनी दिशा में ताकते पाकर केवल कुछ कहने के लिये ही यह कहा —

“भला यह क्या बात है कि आप जो स्थायी रूप से गांव में रहते हैं, न्यायाधीश नहीं हैं? आप ग्राम-न्यायाधीश की वर्दी नहीं पहने हैं।”

“इसलिये कि मैं ग्राम-न्यायाधीशों की संस्था को एक बेहूदा चीज़ मानता हूं,” लेविन ने, जो अपनी पहली भेंट की अशिष्टता के बुरे प्रभाव को दूर करने के लिये ब्रोन्स्की के साथ बातचीत कर पाने का लगातार अवसर खोज रहा था, उदासी से उत्तर दिया।

“मैं तो ऐसा नहीं मानता, बल्कि इसके उलट...” ब्रोन्स्की ने शान्तिपूर्ण आश्चर्य के साथ कहा।

“यह तो जैसे कोई खेल या खिलौना है,” लेविन ने उसे बीच में ही टोक दिया। “हमें ग्राम-न्यायाधीशों की आवश्यकता नहीं है। आठ सालों तक मेरे पास एक भी मुक़दमा नहीं आया। जो एक आया, तो उसका ग़लत फ़ैसला हुआ। न्यायाधीश मेरे गांव से चालीस वेर्स्ता दूर है। जिस मामले पर दो रूबल खर्च होते हैं, उसके लिये वहां किसी को मुस्तार बना कर भेजने पर पन्द्रह रूबल का खर्च बर्दाश्त करना पड़ता है।”

लेविन ने किस्सा सुनाया कि कैसे एक किसान ने किसी चक्की

वाले का आटा चुरा लिया और जब चक्की वाले ने इसके बारे में उससे कहा, तो किसान ने उस पर भूठी बदनामी करने का मुक़दमा कर दिया। यह सारी बात अप्रसंग और बेतुकी थी और इसे सुनाते वक्त लेविन खुद भी यह महसूस कर रहा था।

“ओह, यह भी एक भक्की है,” ओब्लोन्स्की ने अपनी बहुत ही चिकनी मुस्कान के साथ कहा। “पर, आइये अब चलें, लगता है कि मतदान शुरू हो गया है...”

और ये लोग चल दिये।

“मेरी समझ में नहीं आता,” अपने भाई को अटपटी बात करते सुन चुके कोज़िशेव ने कहा, “मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे कोई इस हद तक राजनीतिक सूझ-बूझ से वंचित हो सकता है। हम रूसियों में इसकी एकदम कमी है। गुबेर्निया का मुखिया हमारा विरोधी है और तुम उसके साथ *ami cochon\** और उससे चुनाव के लिये खड़े होने का अनुरोध कर रहे हो। काउंट ब्रोन्स्की के मामले में भी... मैं उसे अपना दोस्त नहीं बनाऊंगा—उसने मुझे अपने साथ शाम का खाना खाने को निमन्त्रित किया है, मैं वहां नहीं जाऊंगा। फिर भी वह हमारे दल का है, उसे दुश्मन क्यों बनाया जाये? फिर तुमने नेवेदोव्स्की से पूछा कि वह चुनाव के लिये उम्मीदवार होगा या नहीं। ऐसी बातें नहीं की जातीं।”

“ओह, मैं यह सब कुछ नहीं समझता। ये सब मामूली बातें हैं,” लेविन ने उदासी से उत्तर दिया।

“तुम कहते हो कि ये सब मामूली बातें हैं, मगर जैसे ही ज़बान खोलते हो, सब गड़बड़ कर देते हो।”

लेविन चुप हो गया और वे एकसाथ बड़े हॉल में दाखिल हुए।

इस चीज़ के बावजूद कि गुबेर्निया के मुखिया को इस बात की गन्ध मिल गयी थी कि उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा जा रहा है और इस चीज़ के बावजूद भी कि सभी ने उससे चुनाव के लिये खड़े होने का अनुरोध नहीं किया था, उसने चुनाव लड़ने का निर्णय किया। हॉल में गहरी खामोशी छा गयी। सेक्रेटरी ने ऊंची आवाज़ में घोषणा

---

\* घुल-मिल रहे हो। ( फ़्रांसीसी )

की कि गार्डों की घुड़सेना के कप्तान मिखाईल स्तेपानोविच स्नेत्कोव गुबेर्निया के मुखिया के लिये खड़े होते हैं और अब मतदान होगा।

उयेज्दों के मुखिया छोटी-छोटी तश्तरियां लिये, जिनमें गोले रखे थे, अपनी मेजों से गुबेर्निया की मेज की ओर बढ़े। चुनाव शुरू हुआ।

“दायीं ओर रखना,” मुखिया के बाद जब भाई के साथ लेविन मेज के निकट पहुंचा, तो ओब्लोन्स्की ने फुसफुसाकर उससे कहा। किन्तु लेविन वह हिसाब-किताब भूल चुका था, जो उसे समझाया गया था और डर रहा था कि “दायीं ओर” कहकर ओब्लोन्स्की ने भूल तो नहीं की। आखिर स्नेत्कोव तो दुश्मन था। बक्स के करीब जाते वक्त वह दायें हाथ में गोला लिये था, किन्तु यह सोचकर कि उससे भूल हो रही है, उसने बक्स के ठीक सामने पहुंचकर गोले को बायें हाथ में ले लिया। बक्स के निकट खड़े इस मामले के बड़े अच्छे जानकार ने, जो कोहनी की एक हरकत से ही यह जान जाता था कि किसने अपना गोला कहां रखा है, अप्रसन्नता से माथे पर बल डाले। उसे अपनी सूक्ष्मदर्शिता का उपयोग करने की तनिक भी आवश्यकता नहीं पड़ी थी।

सभी खामोश हो गये और गोलों की गिनती सुनाई दी। कुछ देर बाद एक व्यक्ति ने उम्मीदवार के पक्ष में और उसके विरुद्ध डाले गये वोटों की संख्या की घोषणा की।

गुबेर्निया का मुखिया काफी बड़ी संख्या में अधिक वोटों के साथ जीत गया था। सभी शोर मचाते हुए तेजी से दरवाजे की तरफ लपके। स्नेत्कोव भीतर आया, कुलीनों ने उसे घेर लिया और बधाई दी।

“सो अब तो क्रिस्ता खत्म हो गया?” लेविन ने कोज़िनशेव से पूछा।

“अभी तो शुरू हो रहा है,” कोज़िनशेव की जगह स्वियाज्स्की ने मुस्कराकर उत्तर दिया। “मुखिया बनने का उम्मीदवार स्नेत्कोव से ज्यादा वोट हासिल कर सकता है।”

लेविन इसके बारे में फिर से बिल्कुल भूल गया था। उसे अभी याद आया कि इस मामले में कोई बारीकी थी, मगर वह बारीकी क्या थी, उसे यह याद करने में ऊब-सी अनुभव हुई। उदासी ने उसे आ घेरा और उसका मन हुआ कि इस भीड़ से बाहर चला जाये।

चूंकि लेविन की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा था और उसे लगा

कि उसकी किसी को ज़रूरत नहीं है, वह धीरे-से छोटे हॉल की तरफ़ बढ़ गया, जहाँ लोग खा-पी रहे थे। वहाँ फिर से बैरों को देखकर उसे बड़ी राहत मिली। बूढ़े बैरे ने उससे कुछ खाने का प्रस्ताव किया और वह राज़ी हो गया। कटलेट और लोबिया खाकर उसने बैरे के साथ उसके भूतपूर्व स्वामियों की चर्चा की और हॉल में लौटने की इच्छा न अनुभव करते हुए, जहाँ उसे ऊब महसूस हो रही थी, वह गैलरी की तरफ़ चला गया।

गैलरी सजी-धजी महिलाओं से भरी थी, जो रेलिंग पर झुकी हुई थीं और इस बात की पूरी कोशिश कर रही थीं कि नीचे जो कुछ कहा जा रहा है, उसका एक भी शब्द अनसुना न रह जाये। बने-ठने वकील, हाई स्कूल के चश्मेधारी अध्यापक और फ़ौजी अफ़सर महिलाओं के करीब खड़े या बैठे थे। सभी जगह चुनाव की चर्चा हो रही थी, यह कहा जा रहा था कि मुखिया कितना परेशान नज़र आ रहा है और बहस कितनी अच्छी रही। एक दल में लेविन ने अपने भाई की प्रशंसा सुनी। एक महिला किसी वकील से कह रही थी—

“मैं कितनी खुश हूँ कि कोज़िन्शेव को सुन पाई! उसे सुनने के लिये तो भूखा भी रहा जा सकता है। बहुत ही ख़ूब! कितने सुलभे हुए ढंग से बोलता है और सुनाई भी सब कुछ देता है! आपकी अदालत में कोई ऐसे नहीं बोलता। सिर्फ़ माइदेल, और वह भी ऐसे बढ़िया ढंग से नहीं बोल पाता।”

कहीं ख़ाली जगह देख लेविन रेलिंग पर झुक गया और नीचे देखने तथा बातें सुनने लगा।

सभी कुलीन अपने-अपने उयेज़्दों के मुताबिक़ उन्हें अलग करनेवाली तकड़ी की दीवारों के पीछे बैठे थे। हॉल के बीचोंबीच वहीं पहने एक व्यक्ति खड़ा था और पतली तथा ऊंची आवाज़ में घोषणा कर रहा था—

“घुड़सेना के कप्तान येव्गेनी इवानोविच अपूख़तिन का नाम कुलीनों के मुखिया के उम्मीदवार के रूप में पेश किया जाता है!”

गहरी ख़ामोशी छा गयी और किसी बूढ़े की धीमी-सी आवाज़ सुनाई दी—

“इन्कार कर दिया गया!”

“दरबारी सलाहकार प्योत्र पेत्रोविच बोल्ल का नाम पेश किया जाता है,” फिर से आवाज़ सुनाई दी।

“इन्कार कर दिया गया !” किसी की जवान और किकियाती-सी आवाज़ गूँज उठी।

फिर से किसी का नाम लिया गया और फिर से इन्कार हुआ। एक घण्टे तक यही सिलसिला चलता रहा। रेलिंग पर कोहनियां टिकाये हुए लेविन यह सब देखता और सुनता रहा। शुरू में उसे हैरानी हुई और उसने समझना चाहा कि इस सब का मतलब क्या है, मगर बाद में यह यक़ीन हो जाने पर कि वह यह समझ नहीं पायेगा, उसे ऊब महसूस होने लगी। कुछ देर बाद उस क्रोधपूर्ण उत्तेजना का स्मरण करते हुए, जो उसे सभी के चेहरों पर दिखायी दी थी, वह उदास हो गया और उसने जाने का निर्णय किया। वह नीचे की तरफ़ चल दिया। गैलरी की ड्योढ़ी में से गुज़रते हुए उसे सूजी आंखोंवाला एक उदास-सा स्कूली छात्र इधर-उधर आता-जाता दिखाई दिया। सीढ़ियों में उसे एक जोड़ा मिला—ऊंची एड़ियोंवाले जूते पहने तेज़ी से ऊपर भागी जाती महिला और फुर्तीली चाल वाला सहायक राज-अभियोक्ता।

“मैंने आपसे कहा था कि पहुंचने में देर नहीं होगी,” सहायक राज-अभियोक्ता ने उस समय ये शब्द कहे, जब महिला को रास्ता देने के लिये लेविन एक ओर को हटा।

लेविन अपना फ़र-कोट पहन कर बाहर जाने की सोच ही रहा था कि सेक्रेटरी ने उसे आ पकड़ा। “कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच, कृपया वोट देने के लिये भीतर चलिये।”

नेवेदोव्स्की के लिये, जिसने बहुत ही दृढ़ता से उम्मीदवार होने से इन्कार किया था, मतदान हो रहा था।

लेविन हॉल में जाने के दरवाज़े पर पहुंचा—वह भीतर से बन्द था। सेक्रेटरी ने दस्तक दी, दरवाज़ा खुला और दो ज़मींदार, जिनके चेहरे सुर्ख थे, तेज़ी से बाहर निकले।

“मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता,” तमतमाये हुए चेहरे वाले ज़मींदार ने कहा।

ज़मींदार के बाद गुबेर्निया के मुखिया ने अपना चेहरा दरवाज़े से बाहर निकाला। भय और थकान से यह चेहरा भयानक लग रहा था।

“मैंने तुमसे कहा था कि किसी को बाहर नहीं जाने देना !” उसने चीखकर दरबान से कहा।

“हुजूर, मैंने तो भीतर जाने दिया है!”

“हे भगवान!” और गुबेर्निया का मुखिया गहरी सांस लेकर सिर झुकाये तथा सफ़ेद पतलून में अपनी थकी हुई टांगों को घसीटते हुए हॉल के बीच से बड़ी मेज़ की तरफ़ चल दिया।

जैसा कि अनुमान था, नेवेदोव्स्की को अधिक वोट मिले और वह गुबेर्निया का मुखिया चुन लिया गया। बहुत-से लोग खुश थे, बहुत-से सन्तुष्ट थे, बहुतों को हार्दिक प्रसन्नता थी, बहुत-से खुशी से फूले नहीं समा रहे थे, बहुत-से दुखी और खिन्न थे। गुबेर्निया का मुखिया, हताश था और वह इसे छिपाने में असमर्थ था। नेवेदोव्स्की जब हॉल से बाहर जाने लगा, तो लोगों की भीड़ ने उसे घेर लिया और वह उसी तरह उल्लासपूर्वक उसके पीछे-पीछे चल दी, जैसे पहले दिन गवर्नर के पीछे गयी थी, जब उसने चुनाव-सभा का उद्घाटन किया था और जैसे स्नेत्कोव के चुने जाने पर उसके पीछे-पीछे गयी थी।

### ( ३१ )

गुबेर्निया का नया चुना गया मुखिया और नयी विजयी पार्टी के बहुत-से लोग इस दिन ब्रोन्स्की के यहां दावत पर आये।

ब्रोन्स्की चुनावों में इसलिये आया था कि गांव में उसे ऊब अनुभव हो रही थी और वह आन्ना के सामने अपनी आज़ादी के अधिकार की भी घोषणा करना चाहता था। वह इसलिये भी चुनावों में हिस्सा लेने आया था कि जेम्सत्वो-परिषद के लिये ब्रोन्स्की के चुनाव के समय स्विजाज्स्की ने जो दौड़-धूप की थी, इस चुनाव में स्विजाज्स्की को समर्थन देकर वह उसका बदला चुका सके और सबसे अधिक तो इसलिये आया था कि कुलीन और भूमिपति की उस भूमिका की, जो उसने अपनायी थी, सभी ज़िम्मेदारियां कड़ाई से पूरी कर सके। किन्तु उसने ऐसी आशा बिल्कुल नहीं की थी कि चुनाव के इस मामले में उसे इतनी अधिक दिलचस्पी होगी, कि वह इसमें डूब ही जायेगा और इस काम को इतनी अच्छी तरह से कर सकेगा। कुलीनों के हलके में वह एकदम नया आदमी था, किन्तु स्पष्टतः उसे सफलता मिली थी और उसका ऐसा सोचना ग़लत नहीं था कि कुलीनों में उसने अपने लिये जगह बना ली है। ऐसा करने में उसकी दौलत और कुल-ख्याति; लेन-देन के

मामलों से सम्बन्धित और काशिन में एक बहुत सफल बैंक की स्थापना करनेवाले उसके पुराने परिचित द्वारा उसे रहने के लिये दी गयी शानदार इमारत ; गांव से लाया गया बढ़िया बावर्ची ; गवर्नर के साथ दोस्ती , जो उसका सहपाठी रहा था और जिसकी ब्रोन्स्की सरपरस्ती भी करता था — इन सब बातों और सबसे ज़्यादा तो इस चीज़ ने उसकी मदद की कि वह सबके साथ सरल और एक जैसा व्यवहार करता था , जिसने बहुत जल्द ही कुलीनों को उसके बारे में यह राय बदलने को मजबूर कर दिया कि वह घमंडी आदमी है। वह खुद यह महसूस करता था कि कीटी शेचेर्बात्स्काया के साथ विवाहित इस सनकी महानुभाव को छोड़कर , जिसने *à propos de bottes\** बौखलाते हुए बहुत-सी ऊट-पटांग बातें कही थीं , हर कुलीन , जिससे भी उसका परिचय हुआ था , उसका समर्थक बन गया था। उससे यह छिपा नहीं था और दूसरे भी इसे स्वीकार करते थे कि नेवेदोव्स्की की सफलता में उसका बड़ा हाथ है। अब अपने यहां , चुनाव में नेवेदोव्स्की की जीत का समारोह मनाते हुए वह अपने उम्मीदवार की सफलता की खुशी महसूस कर रहा था। खुद चुनाव भी उसे इतने अच्छे लगे थे कि अगर अगले तीन सालों में आन्ना के साथ उसकी शादी हो गयी , तो स्वयं भी इस पद के लिये चुनाव लड़ेगा। यह तो वैसे ही था जैसे घुड़दौड़ में जाकी के द्वारा इनाम जीतने पर वह खुद घुड़दौड़ में हिस्सा लेने को लालायित हो उठा था।

इस वक़्त तो जाकी की जीत की खुशी मनायी जा रही थी। ब्रोन्स्की मेज़ के सिरे पर बैठा था और जवान गवर्नर , जो सम्राट के अनुगामी-दल का जनरल था , उसके दायाँ ओर विराजमान था। बाक़ी सभी लोगों के लिये वह गुबेर्निया का स्वामी था , जिसने समारोही ढंग से चुनावों का उद्घाटन किया था , भाषणा दिया था , जो लोगों के दिलों में आदर का , और जैसा कि ब्रोन्स्की ने देखा , बहुतों के दिलों में चापलूसी का भाव पैदा करता था , मगर यही गवर्नर ब्रोन्स्की के लिये “ मिस मास्लोव ” था , जैसा कि उसे शाही सैनिक स्कूल में पुकारा जाता था , वह ब्रोन्स्की के सामने भेंप महसूस कर रहा था और ब्रोन्स्की उसे *mettre à son aise\*\** का प्रयास कर रहा था। जवान , दृढ़

\* अकारण ही। ( फ़्रांसीसी )

\*\* उत्साहित करने। ( फ़्रांसीसी )

और जहरीले चेहरे वाला नेवेदोव्स्की ब्रोन्स्की के बायीं ओर बैठा था। उसके साथ ब्रोन्स्की सरलता और आदर से पेश आ रहा था।

स्वियाज्स्की ने खुशमिजाजी से अपनी हार को स्वीकार किया। उसके लिये यह तो हार भी नहीं थी, जैसा कि हाथ में जाम लिये हुए नेवेदोव्स्की को सम्बोधित करके उसने स्वयं कहा—उस नयी धारा का, जिसका कुलीनों को अनुसरण करना चाहिये, बेहतर प्रतिनिधि ढूँढ़ पाना सम्भव नहीं। इसलिये, उसके शब्दों में, हर ईमानदार आदमी आज की विजय का पक्ष-पोषक था और उसकी खुशी मना रहा था।

ओब्लोन्स्की भी खुश था कि खूब मजे में वक्त बीता और सब प्रसन्न हैं। बढ़िया खाने की मेज़ पर चुनाव की घटनाओं की चर्चा होती रही। स्वियाज्स्की ने मज़ाक़िया ढंग से भूतपूर्व मुखिया के आंसू भीगे भाषण की नक़ल पेश की और नेवेदोव्स्की को सम्बोधित करते हुए कहा कि हुज़ूर को रक़म की जांच के लिये कोई दूसरा, आंसुओं से ज़्यादा जटिल ढंग चुनना होगा। ठिठोली करनेवाले दूसरे कुलीन ने बताया कि कैसे गुबेर्निया के मुखिया द्वारा बॉल के लिये लम्बे मोज़े पहने हुए बैरों को बुलवाया गया था और अगर अब नया मुखिया ऐसे बाल की व्यवस्था करने का विचार नहीं रखता, तो लम्बे मोज़े पहने बैरों को वापस भेजना होगा।

खाने के दौरान नेवेदोव्स्की को लगातार “हमारे गुबेर्निया मुखिया” और “हुज़ूर” कहकर सम्बोधित किया जाता रहा।

ऐसे शब्दों का वैसी ही खुशी से इस्तेमाल किया जाता रहा, जैसे जवान औरत को “मदाम” या “श्रीमती” कहकर पति के कुलनाम से सम्बोधित किया जाता है। नेवेदोव्स्की ऐसे जाहिर कर रहा था कि वह मुखिया की इस उपाधि के प्रति केवल उदासीन ही नहीं, बल्कि इसे तिरस्कार की दृष्टि से देखता है। किन्तु यह स्पष्ट था कि दिल में वह बहुत खुश है और उस उल्लास को दबाने के लिये, जो इस नये, उदारतावादी वातावरण में शोभा न देता, बड़े संयम से काम ले रहा है।

दावत के वक्त चुनावों के नतीजे में दिलचस्पी रखनेवाले कुछ लोगों को तार भेजे गये। ओब्लोन्स्की ने भी, जो बड़े रंग में था, डौली को इस आशय का तार भेजा—“नेवेदोव्स्की बारह वोटों से

जीत गया। बधाई। औरों को भी बता देना।” उसने यह कहते हुए “उन्हें भी खुश करना चाहिये”, ऊंची आवाज़ में तार के शब्द लिखवाये। किन्तु डौली ने तार मिलने पर उस रूबल का ख्याल करते हुए, जो इसे भेजने के लिये खर्च किया गया था, आह भरी और समझ गयी कि दावत के खत्म होने के कुछ ही पहले उसने यह तार भिजवाया होगा। वह दावतों की समाप्ति पर “faire jouer le télégraphe\*” की स्तीवा की कमज़ोरी से परिचित थी।

बढ़िया भोजन और रूसी सुरा-विक्रेताओं के बजाय सीधे विदेश से मंगवायी गयी शराब की बोतलों समेत हर चीज़ में बड़ी नफ़ासत, सरलता और प्रफुल्लता थी। स्विद्याज्स्की ने इस दावत के लिये अपने हमख्याल, उदार विचारों वाले ऐसे बीस नये सार्वजनिक कार्यकर्ता चुने थे, जो विनोदी और शिष्ट थे। हंसी-मज़ाक़ करते हुए नये मुखिया, गवर्नर, बैंक के डायरेक्टर और “हमारे मेहरबान मेज़बान” के लिये ज़ाम पिये गये।

ब्रोन्स्की खुश था। किसी प्रान्तीय नगर में उसने ऐसे मधुर रंग-ढंग की आशा नहीं की थी।

दावत की समाप्ति पर खुशी का रंग और भी गाढ़ा हो गया। गवर्नर ने ब्रोन्स्की से “सेबीं भाइयों” की सहायता के लिये उसकी बीवी द्वारा, जो ब्रोन्स्की से परिचित होना चाहती थी, आयोजित कन्सर्ट में चलने का अनुरोध किया।

“वहां बॉल भी होगा और तुम हमारी स्थानीय सुन्दरी को भी देखोगे। सचमुच ही बहुत खूबसूरत है वह।”

“Not in my line,\*” ब्रोन्स्की ने, जिसे अंग्रेज़ी का यह वाक्य पसन्द था, जवाब दिया, किन्तु मुस्कराया और वहां आने का वादा किया।

मेज़ से उठने के पहले, जब सभी ने सिगरेट पीना शुरू कर दिया था, ब्रोन्स्की का अर्दली ट्रे में एक ख़त लेकर उसके पास आया।

“विशेष सन्देशवाहक वोज़्द्वीजेन्स्कोये गांव से लेकर आया है,” अर्दली ने अर्थपूर्ण भाव के साथ कहा।

---

\* तार का दुरुपयोग करने। ( फ़्रांसीसी )

\*\* मेरी पसन्द के मुताबिक़ नहीं है। ( अंग्रेज़ी )

“कमाल है, सहायक राज-अभियोक्ता स्वेन्तीत्स्की से वह कितना अधिक मिलता-जुलता है,” एक मेहमान ने इसी बीच, जब ब्रोन्स्की माथे पर बल डालकर पत्र पढ़ रहा था, अर्दली के बारे में फ़्रांसीसी भाषा में कहा।

पत्र आन्ना का था। उसे पढ़ने के पहले ही वह उसका सार समझ गया था। ऐसा मानते हुए कि चुनाव पांच दिनों में समाप्त हो जायेंगे, ब्रोन्स्की ने शुक्रवार को घर लौट आने का वचन दिया था। आज शनिवार था और वह जानता था कि पत्र में इस बात के लिये उसे ताना दिया गया होगा कि वह वक्त पर घर नहीं लौटा। उसने जो पत्र पिछले दिन की शाम को भेजा था, वह शायद अभी तक पहुंचा नहीं था।

ब्रोन्स्की ने जैसी आशा की थी, पत्र का विषय तो वही था, किन्तु अभिव्यक्ति का रूप अप्रत्याशित था, जो उसे विशेषतः अप्रिय लगा। “आनी बहुत बीमार है, डाक्टर का कहना है कि निमोनिया हो सकता है। मेरी अकेली की तो अक्ल कुछ काम नहीं करती। प्रिंसेस वर्वारा मदद करने के बजाय बाधा डालती है। मैं तुम्हारा परसों और कल इन्तज़ार करती रही और अब यह मालूम करने के लिये आदमी को भेज रही हूं कि तुम कहां हो और क्या कर रहे हो। मैं खुद आना चाहती थी, मगर यह सोचकर इरादा बदल दिया कि तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा। जवाब में कुछ लिखो, ताकि मुझे यह पता चले कि मैं क्या करूं।”

बच्ची बीमार है और वह खुद आना चाहती थी। बच्ची बीमार और वह ऐसे खिंचे हुए अन्दाज़ में पत्र लिख रही है।

चुनाव का यह सरल मनोरंजन और वह बोझिल तथा उदासी भरा प्रेम, जिसके पास उसे लौटना था, इन दोनों चीज़ों के पारस्परिक विपर्यय ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया। किन्तु लौटना ज़रूरी था और वह रात की पहली ही गाड़ी से वापस चला गया।

( ३२ )

ब्रोन्स्की के चुनाव के लिये जाने के पहले आन्ना ने ऐसा महसूस किया था कि उसके कहीं भी जाने की बात को लेकर उनके बीच हर बार जो झगड़ा होता है, इससे उनके सम्बन्धों में और परायापन ही आता है। इसलिये उसने उसे अपने साथ बांधे न रखकर अपने को वश

में रखने और उसके साथ अपनी जुदाई को शान्त मन से सहन करने का निर्णय किया। किन्तु अपने जाने की घोषणा करते समय ब्रोन्स्की ने जिस कठोर दृष्टि से आन्ना की ओर देखा, उससे उसके मन को ठेस लगी और ब्रोन्स्की के जाने के पहले ही आन्ना के मन का चैन जाता रहा था।

बाद में, अकेलेपन में इस दृष्टि पर विचार करते हुए, जिसने उसके स्वतन्त्रता-अधिकार को व्यक्त किया, उसे सदा की भांति अपनी तिरस्कारपूर्ण स्थिति की ही चेतना हुई। “उसे वह जब और जहां चाहे, जाने का अधिकार है। जाने का ही नहीं, मुझे छोड़ने का भी अधिकार है। उसे सभी अधिकार प्राप्त हैं, मुझे कोई भी नहीं। किन्तु यह जानते हुए उसे ऐसा नहीं करना चाहिये था। मगर उसने किया क्या है?... उसने कड़ी नज़र से मेरी तरफ़ देखा। जाहिर है कि यह अस्पष्ट है, अमूर्त है, किन्तु पहले तो ऐसा नहीं था और इस नज़र का बहुत कुछ मतलब है,” वह सोच रही थी। “यह नज़र दिखा रही है कि प्यार की गर्मी कम होने लगी है।”

आन्ना को बेशक यह यक़ीन हो गया था कि प्यार में भाटा आने लगा है, फिर भी वह कुछ नहीं कर सकती थी, उसके प्रति अपने रवैये को बदलने में असमर्थ थी। पहले की तरह, केवल अपने प्यार और आकर्षण से ही वह उसे वश में रख सकती थी। और पहले की भांति, दिन को व्यस्त रहकर और रात को मोर्फ़िया पीकर वह इस भयानक विचार को, कि अगर उसे उससे प्यार न रहा, तो क्या होगा, दिमाग़ से दूर रख पाती थी। हां, एक अन्य उपाय भी था – उसे अपने साथ बांधे न रखे – इसके लिये वह उसके प्यार के सिवा और कुछ नहीं चाहती थी – बल्कि उसके साथ बंध जाये, ऐसी स्थिति बना ले कि वह उसे छोड़कर न जा सके। इसके लिये उपाय था तलाक़ और शादी। आन्ना मन से ऐसा चाहने लगी और उसने स्तीवा या ब्रोन्स्की के कहने पर फ़ौरन अमल करने का इरादा बनाया।

ऐसे विचारों में उसने ब्रोन्स्की के बिना पांच दिन, वही पांच दिन बिताये, जब वह घर पर नहीं था।

सैर, प्रिंसेस वर्बारा के साथ बातचीत, अस्पताल का चक्कर लगाने और मुख्यतः तो पढ़ने, एक के बाद एक पुस्तक पढ़ने में उसका वक़्त गुज़रा। किन्तु छठे दिन, जब कोचवान ब्रोन्स्की के बिना स्टेशन

से लौट आया, तो उसने अनुभव किया कि किसी तरह भी व्रोन्स्की और वह वहां क्या कर रहा है, इस बात का विचार दिमाग से नहीं निकाल सकती। इसी वक्त उसकी बेटी बीमार हो गयी। आन्ना बेटी की देखभाल करने लगी, किन्तु इससे भी व्रोन्स्की के बारे में न भूल सकी, खास तौर पर इसलिये कि बीमारी खतरनाक नहीं थी। बहुत कोशिश करने पर भी वह इस बच्ची को प्यार नहीं कर पायी थी और प्रेम का ढोंग वह कर नहीं सकती थी। इसी दिन शाम के समय अकेली रह जाने पर आन्ना को व्रोन्स्की के लिये ऐसे भय की अनुभूति हुई कि उसने शहर जाने का फ़ैसला कर लिया, किन्तु फिर से अच्छी तरह सोच-विचार करने पर उसने वह असंगतिपूर्ण पत्र लिखा, जो व्रोन्स्की पढ़ चुका था और जिसे दुबारा पढ़े बिना ही उसने सन्देशवाहक के हाथ भेज दिया था। अगली सुबह को उसे व्रोन्स्की का पत्र मिला और अपना खत भेजने का अफ़सोस हुआ। वह कांपते दिल से उसी कड़ी नज़र के दोहराये जाने का ख़्याल करती थी, जिससे व्रोन्स्की ने जाते वक्त उसे देखा था, खास तौर पर जब व्रोन्स्की को यह पता चलेगा कि बच्ची सख़्त बीमार नहीं थी। फिर भी वह खुश थी कि उसने उसे पत्र लिख दिया। आन्ना अब अपने मन में यह स्वीकार कर रही थी कि वह व्रोन्स्की के लिये बोझ बनकर रह गयी है, कि उसके पास लौटने के लिये वह दुखी मन से अपनी आज़ादी को छोड़ेगा मगर इसके बावजूद भी खुश थी कि वह आ जायेगा। बेशक वह उसे बोझ समझे, लेकिन फिर भी उसके साथ यहां हो, ताकि वह उसे देख सके, उसकी हर गतिविधि की उसे जानकारी रहे।

आन्ना दीवानखाने में लैम्प के पास बैठी हुई टेन की नयी पुस्तक पढ़ रही थी, उसके कान बाहर अहाते में हवा की आवाज़ों पर लगे हुए थे और वह किसी भी क्षण बग्घी के आने की राह देख रही थी। कई बार उसे लगा कि पहियों की आवाज़ सुनाई दी है, मगर उससे भूल हुई थी। आख़िर उसे पहियों की आवाज़ ही नहीं, कोचवान की हांक और दरवाज़े के सामने छतवाले ओसारे में दबा-घुटा-सा शोर भी सुनाई दिया। ताश के खेल में व्यस्त प्रिंसेस वर्बारा ने भी इसकी पुष्टि की। आन्ना के चेहरे पर लाली दौड़ गयी, किन्तु नीचे जाने के बजाय, जैसा कि उसने पहले दो बार किया था, वहीं ठिठक गयी।

अपने छल-कपट के लिये अचानक उसे शर्म महसूस हुई, लेकिन इससे ज्यादा तो इस चीज़ का भय अनुभव हुआ कि ब्रोन्स्की कैसे उसका अभिवादन करेगा। मन को लगी ठेस की भावना तो समाप्त हो चुकी थी, अब वह केवल उसकी अप्रसन्नता से डर रही थी। उसे याद आया कि बेटी तो दूसरे दिन ही बिल्कुल स्वस्थ हो गयी थी। आन्ना को तो इस बात के लिये उस पर गुस्सा भी आया था कि पत्र भेजते ही वह भली-चंगी हो गयी थी। इसी समय उसे ब्रोन्स्की का ध्यान आया कि वह, उसके हाथ और आंखें, वह स्वयं यहां उपस्थित है। आन्ना को उसकी आवाज़ सुनाई दी। और सब कुछ भूलकर खुशी से उमगती हुई वह उससे मिलने के लिये नीचे भाग चली।

“बिटिया कैसी है?” ब्रोन्स्की ने आन्ना को नीचे भागी आते देखकर भीरुता से पूछा।

वह कुर्सी पर बैठा था और नौकर उसके गर्म बूटों को खींच कर उतार रहा था।

“वह अब अच्छी है।”

“और तुम?” ब्रोन्स्की ने अपने को झटकते हुए प्रश्न किया।

आन्ना ने अपने दोनों हाथों से उसका हाथ थाम लिया और टकटकी बांधकर उसे देखते हुए उसके हाथ को अपनी कमर की ओर ले गयी।

“तो मैं बहुत खुश हूं,” ब्रोन्स्की ने आन्ना, उसके केश-शृंगार और फ़ाक को, जो उसे मालूम था कि आन्ना ने उसी के लिये पहना था, गौर से देखते हुए रुखाई से कहा।

यह सब कुछ ब्रोन्स्की को अच्छा लगता था, मगर कितनी बार अच्छा लग चुका था! और वही कठोरता तथा जड़ता का भाव, जिससे वह इतना अधिक डरती थी, ब्रोन्स्की के चेहरे पर जमकर रह गया।

“तो मैं बहुत खुश हूं। और तुम तो स्वस्थ हो न?” रुमाल से अपनी गीली दाढ़ी को पोंछते और आन्ना का हाथ चूमते हुए उसने कहा।

“कोई बात नहीं,” आन्ना सोच रही थी, “बस उसे यहां होना चाहिये और जब वह यहां होता है, तो मुझे प्यार किये बिना रह ही नहीं सकता, ऐसी हिम्मत ही नहीं कर सकता।”

शाम हंसी-खुशी के सुखद-मधुर वातावरण में बीत गयी। प्रिंसेस

वर्बारा भी उपस्थित रही और उसने यह शिकायत की कि ब्रोन्स्की की गैरहाजिरी में आन्ना मोर्फ़िया पीती रही है।

“तो क्या करती? मुझे नींद नहीं आती थी... सभी तरह के विचार बाधा डालते थे। उसके यहां होने पर मैं कभी मोर्फ़िया नहीं पीती हूं। लगभग कभी नहीं।”

ब्रोन्स्की ने चुनाव के बारे में बताया और आन्ना ने प्रश्न करके उससे वह कहलवाया, जिससे उसे सबसे ज्यादा खुशी मिलती थी यानी उसे खुद कितनी सफलता मिली। आन्ना ने ब्रोन्स्की को घर से सम्बन्धित उसकी दिलचस्पी की सभी बातों के बारे में बताया। उसके सारे समाचार बहुत ही सुखद थे।

किन्तु रात को देर से, जब वे दोनों अकेले रह गये और आन्ना ने यह अनुभव किया कि उसने ब्रोन्स्की को पूरी तरह फिर से अपने वश में कर लिया है, यह चाहा कि पत्र के लिये उसकी कठोर दृष्टि के प्रभाव को दूर करे। आन्ना ने कहा—

“यह मान लो कि मेरा पत्र पाकर तुम्हें बुरा लगा और तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया?”

यह कहते ही वह समझ गयी कि इस समय ब्रोन्स्की उसके प्रति चाहे कितना ही स्नेहशील क्यों न हो, उसने उस पत्र के लिये उसे क्षमा नहीं किया है।

“हां,” ब्रोन्स्की ने जवाब दिया। “पत्र बड़ा अजीब-सा था। बिटिया बीमार थी और तुम खुद आना चाहती थीं।”

“यह सब कुछ सच था।”

“मुझे इसमें सन्देह नहीं।”

“नहीं, तुम्हें सन्देह है। मैं देख रही हूं कि तुम नाराज़ हो।”

“ज़रा भी नहीं। अगर मैं नाराज़ हूं तो इसलिये कि तुम यह स्वीकार करने को तैयार नहीं हो कि कुछ कर्त्तव्य भी होते हैं...”

“कन्सर्ट जाने के कर्त्तव्य...”

“हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे,” ब्रोन्स्की ने उत्तर दिया।

“क्यों चर्चा नहीं करेंगे?” आन्ना ने कहा।

“मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूं कि कुछ ज़रूरी काम भी हो सकते हैं। अब मुझे मकान के सिलसिले में मास्को जाना होगा... आह,

आन्ना, तुम ऐसी चिड़चिड़ी क्यों हो गयीं? क्या तुम नहीं जानतीं कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता?”

“अगर ऐसा है,” आन्ना ने अचानक अपना स्वर बदलते हुए कहा, “तो इसका यही मतलब है कि यह जीवन तुम्हारे लिये बोझिल हो गया है... तुम एक दिन के लिये आओगे और फिर चले जाओगे, जैसे कि...”

“आन्ना, यह क्रूरता है। मैं तो पूरा जीवन ही देने को तैयार हूँ...”

किन्तु आन्ना ने उसकी बात पर कान नहीं दिया।

“अगर तुम मास्को जाओगे, तो मैं भी जाऊंगी। मैं यहां नहीं रहूंगी। या तो हमें अलग हो जाना चाहिये या फिर हम साथ रहेंगे।”

“तुम जानती हो कि मेरी यही एकमात्र इच्छा है। किन्तु इसके लिये...”

“मुझे तलाक़ लेना होगा? मैं उसे खत लिख दूंगी। मैं देख रही हूँ कि ऐसे नहीं जी सकती... किन्तु मास्को मैं तुम्हारे साथ चल रही हूँ।”

“तुम तो जैसे मुझे धमकी दे रही हो। हमेशा तुम्हारे साथ रहूँ, इससे अधिक मैं और कुछ चाहता ही नहीं,” ब्रोन्स्की ने मुस्कराकर कहा।

किन्तु ब्रोन्स्की ने जब ये कोमल शब्द कहे, तो उसकी नज़र में रुखाई ही नहीं, बल्कि एक संतप्त और बुरी तरह से झुल्लाये हुए व्यक्ति की कौंध भी थी।

आन्ना ने ब्रोन्स्की की इस नज़र को देखा और इसका सही अर्थ समझ गयी।

“अगर ऐसी बात है, तो समझो कि बुरे दिन आ गये,” ब्रोन्स्की की नज़र यही कह रही थी। यह क्षणिक छाप थी, किन्तु आन्ना इसे कभी नहीं भूल सकी।

आन्ना ने पति को पत्र लिखा और तलाक़ देने का अनुरोध किया। नवम्बर के अन्त में, प्रिंसेस वर्बारा को विदा करके, जिसे पीटर्सबर्ग जाना था, वह ब्रोन्स्की के साथ मास्को चली गयी। हर दिन कारेनिन से उत्तर पाने और उसके बाद तलाक़ देने की प्रतीक्षा करते हुए वे दम्पति की भांति एक साथ रहने लगे।